कितABुत तौहीद

शैख़ुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब

दारूस्सलाम

كتاب التوحيد

किताबुत तौहीद

(एकेश्वरवाद के विषय में)

First Edition: April 2003

ح مكتبة دارالسلام ، ١٤٢٤
فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر
محمد بن عبدالوهاب بن سليمان
كتاب التوحيد. / محمد بن عبدالوهاب بن سليمان - الرياض، ١٤٢٤ هـ
١٥٢ ص ١٤×٢١ سم
ردمك: ١-٤٤-٨٩٢-٩٩٦٠
(النص باللغة الهندية)
١- التوحيد أ. العنوان
ديوي ٢٤٠ ١٤٢٤/١٢٣٤
رقم الإيداع: ١٤٢٤/١٢٣٤
ردمك: ١-٤٤-٨٩٢-٩٩٦٠

Supervised by: **Abdul Malik Mujahid**

HEADOFFICE:
P.O. Box: 22743, Riyadh 11416 K.S.A.Tel: 00966-01-4033962/4043432 Fax: 4021659
E-mail: darussalam@awalnet.net.sa Website: www.dar-us-salam.com

K.S.A. Darussalam Showrooms:
- **Riyadh**
  Tel 00966-1-4614483 Fax: 4644945
- **Jeddah**
  Tel: 00966-2-6879254 Fax: 6336270
- **Al-Khobar**
  Tel: 00966-3-8692900 Fax: 00966-3-8691551

U.A.E
- Darussalam, Sharjah U.A.E
  Tel: 00971-6-5632623 Fax: 5632624

PAKISTAN
- Darussalam, 32 B Lower Mall, Lahore
  Tel: 0092-42-724 0024 Fax: 7354072
- Rahman Market, Ghazni Street
  Urdu Bazar Lahore
  Tel: 0092-42-7120054 Fax: 7320703

U.S.A
- Darussalam, Houston
  P.O Box: 79194 Tx 772779
  Tel: 001-713-722 0419 Fax: 001-713-722 0431
  E-mail: sales@dar-us-salam.com
- Darussalam, New York
  572 Atlantic Ave, Brooklyn
  New York-11217, Tel: 001-718-625 5925

U.K
- Darussalam International Publications Ltd.
  226 High Street, Walthamstow,
  London E17 7JH, Tel: 0044-208 520 2666
  Mobile: 0044-794 730 6706 Fax: 0044-208 521 7645
- Darussalam International Publications Limited
  Regent Park Mosque, 146 Park Road,
  London NW8 7RG Tel: 0044-207 724 3363
- Darussalam
  398-400 Coventry Road, Small Heath
  Birmingham, B10 0UF
  Tel: 0121 77204792 Fax: 0121 772 4345
  E-mail: info@darussalamuk.com
  Web: www.darussalamuk.com

FRANCE
- Editions & Librairie Essalam
  135, Bd de Ménilmontant- 75011 Paris
  Tél: 0033-01- 43 38 19 56/ 44 83
  Fax: 0033-01- 43 57 44 31
  E-mail: essalam@essalam.com

AUSTRALIA
- ICIS: Ground Floor 165-171, Haldon St.
  Lakemba NSW 2195, Australia
  Tel: 00612 9758 4040 Fax: 9758 4030

MALAYSIA
- E&D Books SDN. BHD.-321 B 3rd Floor,
  Suria Klcc
  Kuala Lumpur City Center 50088
  Tel: 00603-21663433 Fax: 459 72032

SINGAPORE
- Muslim Converts Association of Singapore
  32 Onan Road The Galaxy Singapore- 424484
  Tel: 0065-440 6924, 348 8344
  Fax: 440 6724

SRI LANKA
- Darul Kitab 6, Nimal Road, Colombo-4
  Tel: 0094-1-589 038 Fax: 0094-74 722433

KUWAIT
- Islam Presentation Committee
  Enlightment Book Shop
  P.O. Box: 1613, Safat 13017 Kuwait
  Tel: 00965-244 7526, Fax: 240 0057

INDIA
- Islamic Dimensions
  56/58 Tandel Street (North)
  Dongri, Mumbai 4000 009,India
  Tel: 0091-22-3736875, Fax: 3730689
  E-mail:sales@IRF.net

SOUTH AFRICA
- Islamic Da'wah Movement (IDM)
  48009 Qualbert 4078 Durban,South Africa
  Tel: 0027-31-304-6883 Fax: 0027-31-305-1292
  E-mail: idm@ion.co.za

किताबुत तौहीद

शैख़ुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब

अनुवादक

अज़ीज़ुल हक़ उमरी

संशोधन एवं वृद्धि

मुहम्मद ताहिर सलफ़ी

दारूस्सलाम

प्रकाशक एवं वितरक

रियाध- सऊदी अरब

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो
अत्यन्त दयावान और कृपाशील है

विषय सूची

प्रकाशक की ओर से

शैख़ुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब रह॰ की इस्लामी दावत एवं आमन्त्रण का जो प्रभाव भविष्यकाल में इस्लामी एवं ग़ैर इस्लामी विश्व पर पड़ा है ज्ञानी और विद्वान उससे अपरिचित नहीं, विशेष रूप से आस्था और अक़ीदा को सुधारने एवं मुस्लिम समुदाय को अल्लाह की किताब एवं ईशदूत मुहम्मद ﷺ की सुन्नत की ओर लौटने का आमन्त्रण, शिर्क एवं बिदअत से अलगाव, और धर्म के सीधे मार्ग पर चलने का उपदेश उनका मूल्य उद्देश्य रहा है। और अल्लाह ने उनके इस शुभ कार्य में बड़ी बरकत दी जिसके कारण आज विश्व का कोई भाग उस सुधारवादिक लहर से ख़ाली नहीं है।

किताबुत तौहीद शैख़ की वह विश्व प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसने मुस्लिम समुदाय के सुधार में बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। विश्व की अनेक भाषाओं में उसका अनुवाद हो चुका है। हिन्दी पाठकों के लिए हम उसका हिन्दी अनुवाद पेश कर रहे हैं।

इस कार्य में हमारे साथ जिन सहयोगियों ने सहयोग किया है हम उन सबके आभारी हैं। विशेषकर मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी, मौलाना मुहम्मद ताहिर सलफ़ी और सैयद अली हैदर के जिन्होंने हमारे साथ पूरा-पूरा सहयोग किया, अल्लाह तआला उन्हें इस शुभ कार्य का अच्छा बदला दे और हम सबको अपने धर्म की सेवा करने का सौभाग्य प्रदान करे। (आमीन)

अब्दुल मालिक मुजाहिद
प्रबन्धक दारूस्सलाम
रियाध-सऊदी अरब

अध्याय

तौहीद (एकेश्वरवाद के विषय में)

अल्लाह का कथन है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالإِنسَ إِلا لِيَعْبُدُونِ﴾

और मैंने जिन्नों तथा इंसानों को मात्र अपनी इबादत (उपासना) के लिए पैदा किया (सूरतुज़्ज़ारियात:५६)

तथा उसका कहना है कि:

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولا أَنْ أُعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

निश्चय हम ने प्रत्येक समुदाय में दूत भेजा कि अल्लाह की इबादत (उपासना) करो और अवैज्ञा कारी से बचो | (सूरतुन-नहल:३६)

तथा उसका कहना है :

﴿وَقَضَى رَبُّكَ أَلا تَعْبُدُوا إِلا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا﴾

तेरे पालनहार ने निर्णय कर दिया है कि मात्र उसी की इबादत (उपासना) करो तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो (सूरतुल इस्रा:२३)

अल्लाह का कथन है :

﴿قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾

कह दो, आओ मैं तुम्हें वह पढ़कर सुना दूँ जिसे तुम्हारे पालनहार ने हराम कर दिया है कि उसके साथ किसी वस्तु को साझी न बनाओ। (सूरतुल अनआम:१५१)

तथा उसका कथन है कि:

﴿وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾

और अल्लाह की इबादत (वंदना) करो और उसके साथ किसी वस्तु का मिश्रण न करो। (सूरतुन निसा:३६)

इब्ने मसऊद ने कहा:

जो मुहम्मद ﷺ की उस वसीयत को देखना चाहे जिस पर आप की मुहर लगी है वह अल्लाह तआला का वचन पढ़े।

﴿قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا﴾

कह दो आओ मैं तुम्हारे सामने वह बात पढ़कर सुनाऊँ जिसे तुम्हारे पालनहार ने तुम पर हराम कर दिया है: कि अल्लाह के साथ किसी वस्तु का मिश्रण न करो तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। (सूरतुल अनआम:१५१)

उसके इस वचन तक :

﴿وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ﴾

तथा निश्चय यही मेरा सीधा मार्ग है। तो तुम उसका अनुसरण करो अन्य मार्गों पर न चलो। (सूरतुल अनआम:१५३)

और मुआज़ बिन जबल ﷺ ने कहा: मैं नबी ﷺ के साथ एक गधे पर सवार था, आपने मुझसे कहा : हे मुआज़! तुम जानते हो अल्लाह का

अधिकार बंदों पर क्या है, तथा बंदों का दायित्व अल्लाह के प्रति क्या है ? मैंने कहा : अल्लाह तथा उसके रसूल ख़ूब जानते हैं।

आपने फ़रमाया: अल्लाह का अधिकार बंदों पर यह है कि उसकी इबादत करे, किसी को उसका साझी न बनाये तथा बंदों के प्रति अल्लाह का दायित्व यह है कि उसे दण्ड न दे जो उसके साथ शिर्क न करे। मैंने कहा, अल्लाह के रसूल मैं लोगों को यह शुभ सूचना क्यों न सुना दूँ। आपने कहा मत सुनाओ, ऐसा न हो कि इस पर भरोसा कर लें फिर मुआज़ ने (ज्ञान छुपाने के) पाप से बचने के लिए इसे सुना दिया। इसे बुख़ारी तथा मुस्लिम ने बयान किया।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- जिन्नों तथा इंसानों को पैदा करने में क्या हिक्मत (तत्व दर्शिता) है।

२- वास्तव में तौहीद (एक अल्लाह की उपासना) ही इबादत है क्योंकि झगड़ा इसी में है।

३- जिसने तौहीद (एक अल्लाह की इबादत) को नहीं अपनाया उसने अल्लाह की इबादत नहीं की, इसी अर्थ में अल्लाह का यह कथन है, अर्थात "तुम उसकी इबादत नहीं करने वाले जिसकी इबादत मैं करता हूँ।"

४- रसूलों को भेजने में क्या तत्वदर्शिता है ?

५- प्रत्येक समुदाय में ईशदूत आये।

६- सब रसूलों (ईशदूतों) का धर्म एक है।

७- महत्वपूर्ण बात यह है कि अल्लाह की इबादत बड़े अवज्ञाकारी (ताग़ूत) को नकारे बिना नहीं हो सकती। तो इसमें अल्लाह के

---

[1] बुख़ारी-१३/३००

इस कथन का अर्थ है (उसका अनुवाद है) : अर्थात जो बड़े अवज्ञाकारी (ताग़ूत) का इंकार करता तथा अल्लाह पर ईमान रखता है उसने मज़बूती से पकड़ लिया है मज़बूत रस्सी (अर्थात इस्लाम) को। (सूर: बक़र:-२५६)

८- वे सभी ताग़ूत हैं जिनकी अल्लाह के सिवाय इबादत की जाये।

९- सूर: अनआम की तीन अटल आयतों की प्रधानता हमारे सल्फ़ (पूर्वजों) के निकट जिनमें दस विषय हैं उनमें सबसे प्रधान शिर्क का निषेध है।

१०- सूरह इस्रा की 'मोहकम' (सुदृढ़) आयतें जिनमें अट्ठारह विषय हैं, जिनका आरम्भ अल्लाह ने अपने इस कथन से किया है : अल्लाह के साथ दूसरे को पूज्य न बनाओ कि धिक्कार और तिरष्कार के पात्र बन जाओ तथा अंत इस कथन पर किया है कि अल्लाह के साथ दूसरे को पूज्य न बनाओ अन्यथा निन्दित तथा अपमानित करके नरक में झोंक दिये जाओगे।

तथा पवित्र अल्लाह ने इन विषयों की प्रधानता पर अपने इस कथन से हमें सावधान किया है : यही वह हिक्मत (तत्व-दर्शिता) की बातें हैं जो अल्लाह ने तेरी ओर प्रकाशना की हैं।

११- सूरह निसा की वह आयत जिसका नाम 'दस हुक़ूक़' (दायित्वों) वाली आयत रखा गया है, आरम्भ अल्लाह ने अपने इस कथन से किया है "अर्थात अल्लाह की इबादत करो तथा उसदके साथ किसी को शरीक न करो।"

१२- निधन के समय रसूलुल्लाह ﷺ की वसीयत का वर्णन।

१३- बंदों पर अल्लाह के हक़ का परिचय।

१४- बंदों के लिए अल्लाह का हक़ क्या है जब कि वे उसका हक़ अदा करें।

१५- इस बात को बहुत से सहाबा नहीं जानते थे।

१६- ज्ञान छिपाने का औचित्य किसी अच्छाई के लिए।

१७- मुसलमानों को ऐसे इल्म की शुभ सूचना देना जिससे वह प्रसन्न हों।

१८- अल्लाह की असीम दया पर भरोसा कर लेने से भय।

१९- जिससे ऐसी चीज़ का प्रश्न किया जाये जिसे वह न जानता हो उसे कहना चाहिए कि अल्लाह तथा उसके रसूल बेहतर जानते हैं।

२०- विशेष व्यक्ति को कोई ख़ास बात बताना उचित है।

२१- नबी ﷺ की विनम्रता कि आप गधे पर सवार हुए तथा अपने पीछे दूसरे को सवार किया।

२२- अपने पीछे दूसरे को सवारी के जानवर पर सवार करने का औचित्य।

२३- मुआज़ बिन जबल की श्रेष्ठता।

२४- तौहीद के विषय की महत्ता।

अध्याय

तौहीद की प्रधानता और यह कि वह पापों को मिटा देती है

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَئِكَ لَهُمُ الأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ﴾

जो लोग ईमान लाये तथा अपने ईमान का घोलमेल शिर्क (बहूदेववाद) से नहीं किया उन्हीं के लिए शान्ति है तथा वही सत्य मार्ग पर हैं। (सूरतुल अनआम:८२)

उबादह बिन सामित ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो इक़रार कर ले कि एक अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं, उसका कोई साझी नहीं, तथा यह कि मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं और यह कि ईसा अल्लाह के बंदे तथा उसके रसूल हैं और उसका आदेश है जिसे उसने मरियम की ओर डाला तथा उसकी रूह है। स्वर्ग सत्य है एवं नरक सत्य है। (अल्लाह) उसे स्वर्ग में प्रवेश देगा। चाहे उसके कर्म कैसे भी हों। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)

बुख़ारी तथा मुस्लिम में इतबान की हदीस में है कि जिसने अल्लाह की प्रसन्नता के लिए, ला इलाहा इल्लल्लाह कहा, अल्लाह ने उसे नरक पर हराम (वर्जित) कर दिया।

अबू सईद ख़ुदरी ﵁ रसूलुल्लाह ﷺ से बयान करते हैं कि आपने बताया कि मूसा ﵇ ने कहा:

हे मेरे प्रभु! मुझे कुछ ऐसी चीज़ सिखा दे जिससे तेरा स्मरण करूँ तथा तुझी से प्रार्थना करूँ। कहा: हे मूसा ! ला इलाहा इल्लल्लाह कहो, मूसा ने कहा: यह तो तेरे सभी बंदे कहते हैं। कहा हे मूसा ! यदि मेरे सिवाय सातों आकाश तथा उनके निवासी एवं सातों धरती एक पलड़े में हो तथा ला इलाहा इल्लल्लाह एक पलड़े में, तो ला इलाहा इल्लल्लाह उन्हें लेकर झुक जायेगा। इसे इब्ने हिब्बान तथा हाकिम ने रिवायत किया तथा हदीस को प्रमाणिक कहा तथा तिर्मिज़ी की अनस से हसन रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को कहते सुना कि अल्लाह तआला ने कहा : हे मनुष्य यदि तेरे पाप से धरती भर जाये फिर तू मुझसे ऐसे मिले कि मेरे साथ कुछ शिर्क न किया हो तो मैं धरती भर क्षमा के साथ तेरे सामने आऊँगा।[1]

इसमें कई बातें हैं :

१- अल्लाह की दया का विस्तार।

२- अल्लाह की ओर से तौहीद के प्रतिफल (पुण्य) की अधिकता।

३- इसके साथ ही इसका पापों को मिटा देना।

४- सूरह अल-अनआम की आयत ८३ की व्याख्या।

५- उबादह की हदीस की पाँच बातों पर विचार करो।

६- जब तुम इसे तथा इतबान एवं उसके बाद की हदीस को एकत्र करोगे तो तुम्हारे लिए ला इलाहा इल्लल्लाह कहने का अर्थ स्पष्ट हो जायेगा तथा जो धोखे में पड़े हुए हैं उनकी त्रुटि खुल जायेगी।

७- उस शर्त की चेतावनी जो इतबान की हदीस में है।

८- अम्बिया को भी ला इलाहा इल्लल्लाह की प्रधानता पर सचेत करने की आवश्यकता होती है।

---

[1] तिर्मिज़ी ३५३४ तथा इसे हसन ग़रीब कहा है।

९- यह चेतावनी कि ला इलाहा इल्लल्लाह सभी सृष्टि से भारी है जब कि बहुत से जो इसे मुख से बोलते हैं उनका तुला हलका होगा।

१०- यह प्रमाण कि आकाश के समान धरती के भी सात परत हैं।

११- उन सब में आबादियाँ हैं।

१२- अशअरी (सम्प्रदाय) के विपरीत अल्लाह के गुण होने का प्रमाण

१३- जब तुमने अनस की हदीस जान लिया तो तुम्हें ज्ञान हो गया कि इतबान की हदीस में जो आपने फ़रमाया है कि अल्लाह ने उस पर नरक निषेध कर दिया जिसने अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ला इलाहा इल्लल्लाह कहा है उसका अर्थ शिर्क का त्याग है केवल मुख से बोलना नहीं।

१४- मुहम्मद तथा ईसा दोनों को अल्लाह का बंदा तथा रसूल होने में एकत्र करने का विचार करो।

१५- ईसा के अल्लाह का शब्द होने की विशेषता को जानना।

१६- उनके अल्लाह की रूह होने का ज्ञान।

१७- स्वर्ग तथा नरक पर ईमान की प्रधानता को जानना।

१८- आपके कथन वह "जिस कर्म पर हो" को समझना।

१९- यह जानना कि तराज़ू के पलड़ें हैं।

२०- मुख की चर्चा का (अर्थ) समझना।

अध्याय

जो वास्तविक तौहीद रखेगा बिना हिसाब के स्वर्ग में प्रवेश पायेगा

अल्लाह तआला का कहना है कि:

﴿إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُنْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ﴾

वास्तव में इब्राहीम अल्लाह का आज्ञाकारी, एकाग्र एक उम्मत था तथा मिश्रणवादियों (मुशरिकों) में से न था। (सुरतुन नहल: १२०)

तथा फ़रमाया :

﴿وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لا يُشْرِكُونَ﴾

वे जो अपने प्रभु के साथ शिर्क (मिश्रण) नहीं करते। (सूरतुल मोमिनून:५९)

हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने कहा कि मैं सईद बिन ज़ुबैर के पास था, तो उन्होंने कहा कि विगत् रात जो तारा टूटा उसे किसने देखा, मैंने कहा मैंने। फिर मैंने कहा सुनो, मों नमाज़ में नहीं था, किन्तु मैं डस लिया गया। कहा कि फिर तुमने क्या किया, मैंने कहा झाड़ फूँक किया। उन्होंने कहा इस पर तुम्हें किस ने उभारा। मैंने कहा एक हदीस ने जिसे शअबी ने हमसे बयान किया, कहा कि क्या हदीस बयान किया ? मैंने कहा हमसे बुरैदह बिन हुसैब ने हदीस बयान किया कि उन्होंने कहा झाड़ फूँक बुरी नज़र लगने ही में अथवा विष में है। सईद ने कहा, जो सुना उस के अनुसार अच्छा किया और

मुझसे इब्ने अब्बास ने नबी ﷺ की हदीस बताई कि आपने कहा मुझ पर उम्मतें पेश की गई तो मैंने नबी देखा जिसके साथ एक समुदाय था तथा नबी जिसके साथ एक व्यक्ति तथा दो व्यक्ति थे तथा ऐसा नबी जिसके साथ कोई न था। कि अकस्मात मेरे लिए एक बड़ा समूह पेश किया गया तो मैंने सोचा कि मेरी उम्मत है तो मुझसे कहा गया कि यह मूसा तथा उनका समुदाय है। फिर मैंने देखा तो एक बड़ा समूह था तथा मुझसे कहा गया कि यह आपकी उम्मत है जिनके साथ सत्तर हज़ार ऐसे हैं जो बिना किसी हिसाब और यातना के स्वर्ग में जायेंगे फिर आप उठकर अपने घर में चले गये। तो लोगों ने उनके बारे में कुरेद किया, तथा कहा कि संभव है कि वह रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी हों तथा कुछ ने कहा संभवतः वे हों जो इस्लाम में पैदा हुए तथा अल्लाह के साथ कोई शिर्क (मिश्रण) नहीं किया तथा अन्य चीज़ों की चर्चा की फिर रसूलुल्लाह ﷺ उनके पास आये और उन्होंने आपको बताया तो आपने फ़रमाया कि वे वह होंगे जो झाड़ फूँक नहीं कराते न शगुन लेते हैं तथा न आग से दाग़ते हैं एवं अपने प्रभु पर ही भरोसा करते हैं। फिर उक्काशह बिन मिहसन खड़े हुए और कहा, अल्लाह से प्रार्थना करें कि मुझे उन्हीं में कर दे। आपने कहा, तू उन्हीं में है। फिर एक दूसरा व्यक्ति खड़ा हुआ और कहा अल्लाह से प्रार्थना करें कि मुझे उन्हीं में कर दें तो आपने फ़रमाया इसमें उक्काशह तुम से बढ़ गये।[1]

इसमें कुछ बातें हैं :

१- तौहीद में लोगों की विभिन्न श्रेणियाँ हैं।

२- तौहीद (एकेश्वरवाद) का वास्तविक अर्थ क्या है।

३- मुशरिकों में न होने पर अल्लाह की ओर से इब्राहीम की प्रशंसा।

४- शिर्क से बचने के कारण अल्लाह की ओर से अपने पुनीत बंदों की प्रशंसा।

---

[1] बुख़ारी ३२२९, मुस्लिम २२०

५- मंत्र तथा आग से उपचार के लिए दागने का त्याग वास्तविक तौहीद में से है।

६- इन सभी स्वाभाओं का संग्रह अल्लाह पर भरोसा करना है।

७- सहाबा की भलाई में रूचि (अभिलाषा)

९- मात्रा (संख्या) तथा स्थिति में इस उम्मत की श्रेष्ठता।

१०- मूसा के साथियों की प्रधानता।

११- आप ﷺ पर उम्मतों का पेश किया जाना।

१२- प्रत्येक उम्मत को अलग उसके नबी के साथ उठाया जायेगा।

१३- उनका कम होना जो नबियों को माने।

१४- जिसे किसी ने नहीं माना वह अकेला आयेगा।

१५- यह जानने का फल कि अधिकता पर गर्व नहीं करना चाहिए न कमी से विरक्त होना चाहिए।

१६- बुरी नज़र लगने तथा विष में झाड़ फूँक की अनुमति।

१७- पूर्वजों के ज्ञान की गहराई, क्योंकि उन्होंने कहा कि जिसने अपने ज्ञान के अनुसार कर्म किया अच्छा किया, किन्तु यह भी है यह भी है। अतः ज्ञात हुआ कि प्रथम हदीस दूसरी के विपरीत नहीं।

१८- पूर्वजों का किसी की अकारण प्रशंसा से बचना।

१९- आप का कहना कि तुम उन्हीं में से हो, नबी होने का एक चिन्ह है।

२०- उक्काशा की श्रेष्ठता।

२१- संकेतों का प्रयोग।

२२- आप ﷺ का शुभ व्यवहार।

अध्याय

शिर्क (मिश्रण) से डरने का बयान

अल्लाह तआला का कथन है कि:

﴿إِنَّ اللَّهَ لا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ﴾

निश्चय अल्लाह शिर्क को क्षमा नहीं करता। (सूरतुन निसा: ४८)

तथा इब्राहीम ﷺ ने कहा :

﴿وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الأَصْنَامَ﴾

(हे अल्लाह) मुझे तथा मेरी संतान को मूर्तियों की पूजा से बचाना। (सूरह इब्राहीम: ३५)

तथा हदीस में है,

मुझे तुम पर सबसे अधिक छोटे शिर्क का भय है और आप से प्रश्न किया गया तो कहा कि दिखावे का काम छोटा शिर्क है।[1]

तथा इब्ने मसऊद ﷺ ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा जो इस स्थिति में मरे कि अल्लाह का साझी बनाता रहा वह नरक में जायेगा, इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2] तथा मुस्लिम में जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा जो अल्लाह से इस स्थिति में

---

[1] मुसनद अहमद ३१७

[2] बुख़ारी ४२२७

मिलेगा कि उसके साथ कुछ शिर्क न करता रहा हो स्वर्ग में जायेगा तथा जो उससे कुछ शिर्क करते हुए मिलेगा वह नरक में जायेगा ।[1]

इसमें कुछ बातें हैं :

१- शिर्क का भय ।

२- दिखावे का काम शिर्क है ।

३- दिखावे का पुण्य कर्म छोटा शिर्क है ।

४- दिखावे का भय सबसे अधिक नेक लोगों पर होता है ।

५- स्वर्ग तथा नरक का समीप होना ।

६- दोनों की समीपता को एक हदीस में एकत्र करना ।

७- जो बिना शिर्क किये अल्लाह से मिलेगा वह स्वर्ग में जायेगा तथा जो शिर्क के साथ मिलेगा वह नरक में प्रवेश करेगा यद्यपि वह सबसे बड़ा इबादत करने वाला हो ।

८- सबसे बड़ी बात इब्राहीम عليه السلام का स्वयं तथा अपनी संतान के लिए मूर्ति पूजा से सुरक्षा की प्रार्थना करना है ।

९- उनका अधिकतर की स्थिति से शिक्षा लेना जैसा कि कहा है कि इन मूर्तियों ने अधिकतर लोगों को गुमराह (कुमार्ग) किया है ।

१०- इसमें ला इलाहा इल्लल्लाह की चर्चा की व्याख्या है जैसाकि बुख़ारी ने चर्चा की है ।

---

[1] बुख़ारी १२९, मुस्लिम ३२

अध्याय

ला इलाहा इल्लल्लाह का आमंत्रण देने का बयान

अल्लाह तआला का कथन है कि:

﴿قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَى بَصِيرَةٍ﴾

कह दो यह मेरा रास्ता है मैं प्रकाश में होकर अल्लाह की ओर बुलाता हूँ। (सूरह यूसुफ़:१०८)

इब्ने अब्बास ﷺ ने कहा, रसूलुल्लाह ﷺ ने जब मुआज़ को यमन भेजा तो कहा, तुम एक अहले किताब जाति के पास जा रहे हो तो उन्हें सर्वप्रथम ला इलाहा इल्लल्लाह के एक़रार की ओर बुलाना तथा एक अन्य हदीस में है कि अल्लाह के एक होने (अद्वैत) की ओर बुलाना यदि वे तुम्हारी यह बात मान लें तो उन्हें बताना कि अल्लाह ने तुम पर रात दिन में पाँच नमाज़ें अनिवार्य कर दी हैं यदि तुम्हारी यह बात भी मान लें तो उन्हें बताना कि अल्लाह ने तुम पर सदक़ा (दान) देना अनिवार्य कर दिया है जो उनके धनी लोगों से लिया जायेगा तथा उनके निर्धनों पर लौटा दिया जायेगा। फिर अगर वे आपकी यह बात मान लें तो उनके अच्छे मालों से बचना तथा सताये हुए की हाय से बचो। क्योंकि उसके तथा अल्लाह के बीच आड़ नहीं होता। इसे बुख़ारी तथा मुस्लिम ने निकाला है।[1] तथा बुख़ारी मुस्लिम की सहल बिन साद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़ैबर के दिन कहा, मैं कल यह झंडा ऐसे व्यक्ति को दूँगा जो अल्लाह तथा उसके रसूलों से प्रेम करता है तथा अल्लाह और रसूल उससे प्रेम करते हैं। अल्लाह

---

[1]बुख़ारी १३८९,१४२५

उसके हाथ पर विजय देगा तो लोगा पूरी रात सोचते रहे कि किसे दिया जायेगा तथा सवेरे सब (ﷺ) के पास आये यह आशा लेकर कि झंडा उसे दिया जायेगा, आपने पूछा अली बिन अबू तालिब कहाँ हैं ? बताया गया कि उनकी आँखें दुख रही हैं तथा उनके पास भेजा गया तथा उनको लाया गया । आपने उनकी आँखों में थूक लगाया और उनके लिए दुआ किया वह स्वस्थ हो गये जैसे कोई पीड़ा न रही हो और आप ने उनको झंडा दिया तथा कहा चले जाओ जब उनके क्षेत्र में पहुँचो तो उनको इस्लाम की ओर बुलाओ तथा जो उन पर अल्लाह का हक़ है बताओ अल्लाह की सौगंध ! तुम्हारे द्वारा अगर एक व्यक्ति को मार्ग दर्शन मिल जाये तो तुम्हारे लिए लाल ऊँट से उत्तम है ।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- अल्लाह की ओर बुलाना आप ﷺ के अनुयायियों की रीति है ।

२- इख़्लास (स्वक्ष भावना) पर सचेत करना, क्योंकि बहुत से लोग यद्यपि सत्य की ओर बुलाते हैं फिर भी अपनी ओर बुलाते हैं ।

३- सूझ-बूझ से दावत देना अनिवार्य है ।

४- तौहीद की ख़ूबी यह है कि अल्लाह को बुराई से निर्दोष बनाती है ।

५- शिर्क की बुराई यह है कि अल्लाह को दोष लगाती है ।

६- मुसलमान को शिर्क से बचाना अति महत्वपूर्ण समस्या है ऐसा न हो कि वह उनमें रहे यद्यपि शिर्क न करे ।

७- तौहीद (अद्वैत) प्रथम कर्तव्य है ।

८- सबसे पहले यहां तक की नमाज़ से पहले इसी से आरम्भ किया जाये ।

---

[1] बुख़ारी २७८३ मुस्लिम २४०६

९- अल्लाह को एक मानने का अर्थ ला इलाहा इल्लल्लाह का एक़रार करना है।

१०- इंसान कभी किताब को मानता है किन्तु उसे जानता नहीं न उसके अनुसार कर्म करता है।

११- धीरे-धीरे शिक्षा देने का निर्देश।

१२- श्रेष्ठतम फिर श्रेष्ठ से आरम्भ करना चाहिए।

१३- ज़कात (देय दान) किसे देना चाहिए।

१४- शिक्षक का शिक्षार्थी की शंका का निवारण करना।

१५- अच्छा माल लेने से निषेध।

१६- मज़लूम के शाप से बचना।

१७- इसकी सूचना कि मज़लूम की दुआ रुकती नहीं (अल्लाह सुनता है)।

१८- रसूलों तथा वलियों के मुखिया को जो दुख, भूख तथा रोग हुआ वह तौहीद का प्रमाण है।

१९- आपका यह कहना कि "मैं झंडा दूँगा" आपके नबी होने का एक चिन्ह है।

२०- आपका अली की आँख में थूक लगाना भी नबी होने का एक चिन्ह है।

२१- अली ﷺ की श्रेष्ठता।

२२- सहाबा की श्रेष्ठता कि पूरी रात विचारते रह गये तथा विजय की शुभ सूचना भी भूल गये।

२३- भाग्य पर विश्वास कि जिसने प्रयास नहीं किया उसे झंडा मिला तथा जिसने किया उसे नहीं मिला।

२४- शिष्टाचार की शिक्षा कि आपने फ़रमाया कि "शांति पूर्वक जाओ"।

२५- लड़ाई से पहले इस्लाम की दावत देना।

२६- इस्लाम का आमंत्रण देना चाहे इस से पूर्व दिया गया हो और उनसे लड़ा जा चुका हो।

२७- सूझ-बूझ से आमंत्रण देना क्योंकि आपने फ़रमाया कि आवश्यक बातें बता देना।

२८- इस्लाम में अल्लाह के हक़ को जानना।

२९- उसका पुण्य जिसके हाथ पर एक व्यक्ति को भी मार्ग दर्शन मिल जाये।

३०- फ़त्वा पर सौगंध खाना।

अध्याय

तौहीद (अद्वैत) तथा ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने का अर्थ

तथा अल्लाह तआला का कथन है:

﴿أُوْلَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا﴾

यह लोग अल्लाह के समीप होने का माध्यम खोजते हैं कि कौन अधिक समीप है तथा उसकी दयालुता की आशा रखते एवं उसकी यातना से डरते रहते हैं निश्चय तेरे प्रभु की यातना डर की चीज़ है। (सूरह बनी इस्राईल:५७)

तथा अल्लाह का कथन है :

﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِمَّا تَعْبُدُونَ O إلا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ﴾

और याद करो जब इब्राहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति से कहा, मेरा उसके सिवाय जिसने मुझे पैदा किया तुम्हारे पूज्यों से कोई लगाव नहीं, इसलिए कि वह मुझको मार्गदर्शन देता है। (सूरह ज़ुख़रफ़: २६,२७)

तथा उसका कथन है :

﴿اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ﴾

उन्होंने अपने ज्ञानियों तथा धर्मचारियों को अल्लाह के सिवाय अपना प्रभु बना लिया। (सूरतुत तौबा:३१)

तथा उसका कहना है :

﴿وَمِنْ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ﴾

और कुछ लोग अल्लाह के सिवाय उसका साझी बनाते हैं जिनसे अल्लाह के समान प्रेम करते हैं तथा जो ईमान लाये वह अल्लाह के प्रेम में अधिक कड़े होते हैं। (सूरतुल बक़र:-१६५)

सहीह मुस्लिम में है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया :

जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा और अल्लाह के सिवाय पूज्यों का इंकार किया उसका धन तथा रक्त अल्लाह ने हराम (निषेध) कर दिया तथा उसका हिसाब अल्लाह पर है।

इसमें कई बातें हैं :

१- इसमें सबसे बड़ा तथा महान विषय तौहीद तथा कलमा शहादत के एक़रार का भाष्य है जिसे कुछ बातों से प्रकाशित किया है।

एक तो सूर: इस्रा की आयत है जिसमें उन मिश्रणवादियों (मुशरिकों) का खंडन किया गया है जो धर्मात्माओं से प्रार्थना करते हैं, इसमें स्पष्ट किया गया है कि यह महाशिर्क है। और सूर: बराअ: की आयत है कि पूर्व की किताबों के अनुपालकों ने अपने ज्ञानियों तथा संतों को अल्लाह के सिवाय प्रभु बना लिया जबकि उन्हें मात्र एक पूज्य की उपासना का आदेश दिया गया था। हालाँकि इस का खुला भाष्य यह है कि प्रभु बनाने का अर्थ यह है कि उन्होंने अवज्ञाकारिता में अपने ज्ञानियों तथा संतों का अनुसरण किया यह अर्थ नहीं कि उनसे दुआ किया तथा इसी में इब्राहीम ख़लील का काफ़िरों से यह कहना है: "वस्तुत: मैं तुम्हारे उपास्यों से विलग हूँ किन्तु जिस अल्लाह ने मुझे

पैदा किया" तो उपास्यों में से अपने प्रभु को अलग कर दिया, तथा अल्लाह तआला ने बताया कि यही विलगाव तथा अल्लाह से मित्रता ला इलाहा इल्लल्लाह की व्याख्या है और अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ﴾

और इब्राहीम इस सूत्र को अपनी औलाद में छोड़ गया ताकि वह लौट जाये। (सूरह ज़ुख़रुफ़:२८)

और इसी में सूरह बक़र: की यह आयत है जिसमें काफ़िरों के बारे में उसने फ़रमाया है कि वह आग से नहीं निकल सकेंगे। अल्लाह ने बताया कि वे अपने शरीकों से अल्लाह के समान प्रेम करते हैं इससे मालूम हुआ कि वह अल्लाह से बड़ा प्रेम करते हैं फिर भी वह इस्लाम में नहीं आये तो कैसे वह मुसलमान हो सकते हैं जो अल्लाह से अधिक अपने शरीक से प्रेम करता हो और जो शरीक ही से प्रेम करता हो तथा अल्लाह से न करता हो। तथा नबी ﷺ का यह कथन है कि जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा तथा अल्लाह के सिवाय पूज्यों को नकार दिया अल्लाह ने उसका माल तथा रक्त वर्जित कर दिया तथा उसका हिसाब अल्लाह पर है तथा यह सबसे बढ़कर ला इलाहा इल्लल्लाह के अर्थ को स्पष्ट करती है क्योंकि अल्लाह ने उसके उच्चारण को रक्त तथा धन की रक्षा का हेतु नहीं बनाया न इसके शब्द सहित इसके अर्थ के जानने को बल्कि न मात्र अल्लाह को पुकारने को जो अकेला तथा बिना साझी के है बल्कि उसका माल तथा रक्त उसी स्थिति में निषेधित होगा जब कि अल्लाह के सिवाय पूज्यों का इंकार नहीं करेगा और यदि कोई शंका करे अथवा द्विवधा में रहे तो उसका माला तथा रक्त हराम नहीं होगा तथा यह कितना बड़ा विषय तथा कितना खुला वर्णन तथा विरोधी के झगड़े उन्मूलन के लिए कितना खुला तर्क है।

अध्याय

आपत्ति के निवारण के लिए कड़ा तथा धागा आदि पहनना शिर्क है

तथा अल्लाह तआला का कथन है कि:

﴿أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ﴾

बताओ अल्लाह के सिवाय जिनको तुम पुकारते हो यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो वे उसे दूर कर सकते हैं अथवा मुझ पर दया करना चाहे तो क्या वह उसकी दया को रोक सकते हैं कह दो मुझे अल्लाह काफ़ी है उसी पर भरोसा करने वाले भरोसा करें। (सूरतुज़्ज़ुमर:३८)

इमरान बिन हुसैन ﷺ कहते हैं कि नबी ﷺ ने एक व्यक्ति के हाथ में पीतल का कड़ा देखा तो कहा यह क्या है ? उसने कहा दुर्बलता के कारण है । आपने कहा इसे उतार दो क्योंकि यह तुम्हारी दुर्बलता और बढ़ायेगा। इसलिए कि यदि तू इसे पहने हुए मर जायेगा तो कभी सफ़ल न होगा। इसे अहमद ने भी अच्छी सनद से रिवायत किया है।[1] तथा उन्हीं की उकबा बिन आमिर से मरफूअन रिवायत है कि जो तावीज़ (यंत्र) लटकाये अल्लाह उसका काम पूरा न करे तथा एक

---

[1] इब्ने माजा ३५३१ हदीस हसन

हदीस[1] में है जो सीप आदि पहने अल्लाह उसे आराम न दे। तथा एक हदीस में है कि जिसने यंत्र तंत्र लटकाया उसने शिर्क किया, तथा इब्ने हातिम ने हुज़ैफ़ा से रिवायत किया है कि उन्होंने एक व्यक्ति के हाथ में ज्वर ताप के कारण धागा देखा तो उसे काट दिया तथा यह आयत पढ़ी :

﴿وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلا وَهُمْ مُشْرِكُونَ﴾

तथा बहुत से ईमान लाकर शिर्क करते हैं। (सूरह यूसूफ़:१०६)

इसमें कई विषय हैं :

१- कड़ा तथा धागा आदि पहनने पर कड़ा आदेश।

२- यह कि सहाबी ऐसी स्थिति पर मरता तो सफल न होता इसमें सहाबा के इस कथन का प्रमाण है कि छोटा शिर्क भी महापाप है।

३- यह कि अज्ञानता से शिर्क क्षम्य नहीं।

४- यह कि यंत्र तंत्र संसार में लाभदायक नहीं, बल्कि हानिकारक है जैसाकि आपने फ़रमाया यह तुम्हारी कमज़ोरी ही बढ़ायेगा।

५- उसका कड़ाई से इंकार किया जाये जो ऐसा काम करता हो।

६- इसका वर्णन कि जिसने कुछ लटकाया उसके सुपुर्द कर दिया जाता है।

७- इसका स्पष्टीकरण कि जो यंत्र लटकाये उसने शिर्क किया।

८- ज्वर के लिए धागा बाँधना इसी (शिर्क) में से है।

९- हुज़ैफ़ा का आयत पढ़ना इसका प्रमाण है कि सहाबा (नबी के

[1] हाकिम ४/१५४ सहीह

सहचर) महाशिर्क की आयत से तुच्छ शिर्क पर तर्क देते थे। जैसे इब्ने अब्बास ने सूरह बक़र: की आयत में किया।

१०- यह कि बुरी नज़र से (बचाव) के लिए सीप आदि पहनना इसी शिर्क में से है।

११- उसे शाप देना जो यंत्र पहनता हो कि अल्लाह उसका काम पूरा न करे तथा जो सीप पहने अल्लाह उसे सुख न दे अर्थात उसे आपत्ति में छोड़ दे।

अध्याय

यंत्रों तथा मंत्रों के विषय में

सही मुस्लिम में है कि अबू बशीर अंसारी ने कहा कि वह नबी ﷺ के साथ एक यात्रा में थे आपने एक व्यक्ति को एलान करने के लिए भेजा कि किसी ऊँट की गर्दन में ताँत का पट्टा न रहने दिया जाये। सब काट दिया जाये।[1] तथा इब्ने मसऊद ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते सुना कि मंत्र तंत्र तथा यंत्र शिर्क हैं। इसे अहमद[2] तथा अबू दाऊद[3] ने रिवायत किया है।

तथा अब्दुल्लाह बिन उकैम ने नबी ﷺ से रिवायत किया कि जिसने कुछ लटकाया उसी के समर्पित कर दिया जायेगा।[4]

यंत्र (तावीज़) वह वस्तु है जो बुरी नज़र से बचाव के लिए बच्चों को पहनाई जाये किन्तु यदि क़ुरआन में से हो तो कुछ ज्ञानी उसकी आज्ञा देते हैं तथा कुछ उसकी आज्ञा नहीं देते तथा उसे निषेध मानते हैं। उन्हीं में इब्ने मसऊद رضي الله عنه भी हैं।

मंत्र जिसका नाम झाड़-फूँक है उसमें जिसमें शिर्क न हो उसकी रसूलुल्लाह ﷺ ने बुरी नज़र लगने तथा विषैले जन्तुओं में अनुमति दी है।

तंत्र वह अभिचार है जो इस विचार से किया जाता है कि उससे स्त्री में पति से अथवा पति को पत्नी से प्रेम होता है। तथा अहमद ने

---

[1] बुख़ारी २८४३, मुस्लिम २११५

[2] हाकिम १/३८१

[3] अबू दाऊद, ३८८३

[4] हाकिम, ४/३११ तिर्मिज़ी, २०६२

रूवैफ़ा से रिवायत की कि मुझसे रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: शायद तुम्हारी आयु लंबी हो तो लोगों को बता देना कि जिसने अपनी दाढ़ी में गाँठ लगाई अथवा ताँत (गंडा) पहना अथवा चौपाये के गोबर अथवा हड्डी को शुचिता के लिए प्रयोग किया तो मुहम्मद ﷺ उससे अलग हैं।[1] सईद बिन ज़ुबैर ने कहा कि जिसने किसी व्यक्ति का यंत्र काट दिया उसने एक प्राण मुक्त किया।[2] वकीअ ने इसको रिवायत किया तथा इब्राहीम नखई ने कहा कि पहले लोग प्रत्येक प्रकार के यंत्र तंत्र को अप्रिय मानते थे वह क़ुरआन से हो अथवा उसके सिवा।

इसमें कई बातें हैं :

१- मंत्र तथा यंत्र की व्याख्या।

२- तंत्र की व्याख्या।

३- बिना अनिबंध के यह तीनों शिर्क है।

४- सत्य वाक्य से मंत्र करना बुरी नज़र तथा विष से इसमें नहीं आता।

५- तावीज़ (यंत्र) यदि क़ुरआन से हो तो इसमें धर्मज्ञों का मतभेद है कि यह शिर्क है या नहीं।

६- चौपाये का ताँत पहनाना कि नज़र न लगे इसी शिर्क में से है।

७- उसके लिए कड़ी चेतावनी जो ताँत पहनता है।

८- उसके पुण्य की प्रधानता जो किसी व्यक्ति की तावीज़ काट देता है।

९- यह कि इब्राहीम की बात विगत् मतभेद के विपरीत नहीं क्योंकि उनका अभिप्राय अब्दुल्लाह के साथी हैं।

---

[1] हाकिम ५/१०६

[2] मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा, ७३७५

अध्याय

जो पेड़ पत्थर आदि से शुभ प्राप्त करता हो

तथा अल्लाह तआला का कहना है :

﴿أَفَرَأَيْتُمُ اللاتَ وَالْعُزَّى﴾

तो तुम लात तथा उज़्ज़ा (देवियों) के बारे में बताओ। (सूरतुन नज्म:१९)

अर्थात यह तो तुम्हारी बनाई देवियाँ हैं।

तथा अबू वाक़िद लैसी ने कहा कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ हुनैन (स्थान) की ओर निकले और हम नये मुसलमान हुए थे और बहुदेववादियों (मुशरिकों) का एक पेड़ था जिसकी परिक्रमा करते तथा उस पर अपने हथियार लटकाते थे जिस का नाम "ज़ाते अनवात" था और हम भी एक बैरी के पास पहुँचे तो हमने कहा, हे अल्लाह के रसूल हमारे लिए भी एक "ज़ाते अनवात" बना दें जैसे उनका एक "ज़ाते अनवात" है तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया अल्लाह महान है। उस प्रभु की शपथ जिसके हाथ में मेरा प्राण है। तुमने तो वही कहा जैसे बनी इस्राईल ने मूसा से कहा :

﴿اجْعَل لَّنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ﴾

"हमारे लिए कोई देवता बना दें जैसे उनके देवता हैं मूसा ने कहा तुम मूर्खता कर रहे हो," (सूरतुल आराफ़:१३८)

फिर फ़रमाया तुम अगली उम्मतों की रीतियों को अवश्य अपनाओगे,

इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया तथा सहीह कहा है ।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- सूरह नज्म की आयत की व्याख्या ।

२- उनकी माँग की वास्तविकता को जानना ।

३- उनका यह काम न करना ।

४- इससे उनका यह आशय था कि वह अल्लाह की समीपता प्राप्त करेंगे क्योंकि उनका यह विचार था कि यह अल्लाह को प्रिय है।

५- जब सहाबा इससे अज्ञान रह गये तो अन्य अधिक अज्ञान हो सकते हैं ।

६- उनके लिए नेकियों (पुण्य) तथा क्षमा का वचन है जो दूसरों के लिए नहीं ।

७- नबी ﷺ ने इस बात में उन्हें क्षम्य नहीं माना अपितु अपने कथन अल्लाहु अकबर (अल्लाह महान है) से उनका खण्डन किया कि यही रीतियाँ हैं तुम अपने से पहलों की रीतियों का अनुसरण अवश्य करोगे अत: तीनों बातों में विषय की गंभीरता ब्यान की।

८- बड़ी बात जो मूल उद्देश्य है वह यह है कि आपने सूचित किया कि उनकी माँग बनी इस्राईल की माँग के समान है जब उन्होंने मूसा से कहा कि हमारे लिए कोई देवता बना दो ।

९- इस का इंकार भी ला इलाहा इल्लल्लाह के अर्थ में है यद्यपि यह उनसे छिप्त रहे ।

१०- यह धर्माज्ञा पर शपथ ग्रहण करना है ।

११- शिर्क में छोटा बड़ा होता है क्योंकि यह कहने से वे अधर्मी नहीं

---

[1] हाकिम ५/२१८ अल-अहादीसुस सहीहा

हुए।

१२- उनका यह कहना कि हम नये मुसलमान थे यह संकेत है कि अन्य इससे अंजान न थे।

१३- आश्चर्य के समय अल्लाहु अकबर कहना उसके विपरीत जो अप्रिय मानता है।

१४- द्वारों को बंद करना आवश्यक है।

१५- अंधकार युग के लोगों की समानता से रोकना।

१६- शिक्षा देने के समय खिन्न होना।

१७- यह साधारण नियम है क्योंकि आप ने कहा कि "यह रीतियाँ हैं।"

१८- यह आपके नबी होने का एक चिन्ह है क्योंकि आपने जैसे फ़रमाया वैसे हुआ।

१९- अल्लाह ने क़ुरआन में जिस कारण की बिना पर यहूद तथा नसारा की निंदा की वह वैसे कर्मो पर हमारे लिए भी है।

२०- यह निर्विवाद है कि इबादतों का आधार आदेश पर है अत: इसमें क़ब्र में प्रश्नों पर चेतावनी हुई। लेकिन तुम्हारा प्रभु कौन है ? तो यह स्पष्ट है तथा तुम्हारा नबी कौन है ? तो आप के परोक्ष की सूचना देने के कारण और तुम्हारा धर्म क्या है ? यह उनके कथन हमारे लिए एक देवता बना दें उनकी अन्त तक की बात से।

२१- अहले किताब की रीति भी मुशरिकों (बहुदेववादियों) की रीति के समान निन्दित है।

२२- जो असत्य से सत्य की ओर आता है उसमें असत्य का कुछ आचरण शेष रहता है। जैसाकि उन्होंने कहा कि हम नये-नये मुसलमान हुए हैं।

अध्याय

अल्लाह के सिवाय किसी अन्य के लिए बलि देने के विषय में

तथा अल्लाह तआला का कथन है :

﴿قُلْ إِنَّ صَلاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾

कह दो मेरी नमाज़, मेरी बलि तथा मेरा जीवन एवं मरण अल्लाह सर्वलोक के प्रभु के लिए है जिसका कोई साझी नहीं। (सूरतुल अनआम:१६२)

तथा अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ﴾

अपने प्रभु के लिए नमाज़ पढ़ो और बलि दो। (सूरतुल कौसर:२)

अली ﷺ से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह ﷺ ने चार बातें बयान की, अल्लाह ने उसे धिक्कार दिया जिसने अल्लाह के सिवाय के लिए बलि चढ़ाया, तथा उसे जिसने अपने माता-पिता को धिक्कारा तथा जिसने उसे शरण दिया, जिसने धर्म में नई बात बनाई तथा जिसने धरती की सीमा के चिन्ह को बदल दिया। इसको मुस्लिम ने रिवायत किया।[1] तथा तारिक बिन शहाब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा कि एक व्यक्ति मक्खी के कारण स्वर्ग में गया तो एक व्यक्ति नरक में गया, लोगों ने पूछा कैसे ? हे अल्लाह के रसूल। आप ने

[1] मुस्लिम ४३४५, नसाई सहाया (व/३४)

फ़रमाया दो व्यक्ति एक जाति के पास से गुज़रे जिनका एका देवता था। कोई गुज़र नहीं सकता था जब तक उसे कोई चीज़ न चढ़ाये, उन्होंने एक से कहा तू चढ़ा, उसने कहा मेरे पास कुछ नहीं कि चढ़ाऊँ, उन्होंने कहा कि एक मक्खी ही चढ़ा दो और एक व्यक्ति ने मक्खी चढ़ा दिया तो उस जाति ने उसे छोड़ दिया और वह नरक में गया और दूसरे से कहा कि चढ़ाओ, उसने कहा कि मैं अल्लाह के सिवाय किसी को कुछ नहीं चढ़ा सकता, और उन्होंने उसे हत कर दिया जिससे वह स्वर्ग में गया। (इसे अहमद ने रिवायत किया है)

इसमें कुछ विषय हैं :

१- आयत قُلْ إِنَّ صَلاتِي وَنُسُكِي की व्याख्या।

२- فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ की व्याख्या।

३- जो अल्लाह के सिवाय के लिए बलि देता है सर्वप्रथम उसको धिक्कारना।

४- उसके लिए धिक्कार जो अपने माता-पिता को धिक्कारता है तथा इसी में यह भी है कि तुम किसी के माता-पिता को धिक्कारो तो वह तुम्हारे माता-पिता को धिक्कारेगा।

५- उसे धिक्कारना जो किसी ऐसे व्यक्ति को जो इस्लाम में नई बात बनाये (जिस कारण दण्डनीय बन जाये) उसे शरण दे।

६- जो भूमि के चिन्ह को बदल दे उसे धिक्कार। यह वह चिन्ह होते हैं जो एक की भूमि दूसरे की भूमि से अलग करते हैं उनको आगे-पीछे करके बदल दे।

७- निश्चित व्यक्ति तथा साधारण पापियों पर धिक्कार में अंतर।

८- मक्खी का महत्वपूर्ण वाक्य।

९- उसका इस कारण नरक में जाना जिसने उनकी बुराई से बचने के लिए बिना इच्छा के मक्खी चढ़ाया।

१०- शिर्क मोमिन के दिल को कितना बुरा लगता है कि उसने हत होना सहन कर लिया किन्तु उनकी माँग नहीं पूरी की जबकि वह उपरी रूप से यह काम कराना चाहते थे।

११- जो नरक में गया वह मुसलमान था क्योंकि नबी ने फ़रमाया कि वह एक मक्खी के कारण नरक में गया।

१२- इसमें इस सही हदीस का समर्थन है जो यह है कि स्वर्ग तुम्हारे जूते के फ़ीते से भी अधिक नज़दीक है तथा नरक भी ऐसे ही है।

१३- यह समझ लेना चाहिए कि दिल का कर्म ही महाउद्देश्य है यहाँ तक कि मूर्तिपूजकों के पास भी।

अध्याय

जिस स्थान में अल्लाह के सिवाय के लिए बलि दी जाये वहाँ अल्लाह के लिए बलि न दी जाये

और अल्लाह तआला का कथन है कि:

﴿لا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْـوَى مِـنْ أَوَّلِ يَـوْمٍ أَحَـقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ﴾

आप उसमें कदापि खड़े न हों जिस मस्जिद की नीव प्रथम दिन से संयम (तक़्वा) पर रखी गई है वही इस योग्य है कि आप उसमें खड़े हों। (सूरतुत तौबा:१०८)

साबित बिन दहहाक ﷺ ने कहा कि एक व्यक्ति ने बवाना में एक ऊँट बलि देने की मनौती मानी थी और उसने नबी ﷺ से प्रश्न किया, आपने पूछा, क्या उसमें मूर्खता युग में कोई मूर्ति थी जो पूजी जाती रही हो? लोगों ने कहा नहीं, आपने फ़रमाया क्या वहाँ उनका कोई पर्व होता था? लोगों ने कहा नहीं, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया अपनी मनौती पूरी कर लो क्योंकि अल्लाह की अवज्ञा में कोई मनौती नहीं, न उस चीज़ में जिसका इंसान मालिक न हो। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया तथा उसकी इस्नाद दोनों (बुख़ारी एवं मुस्लिम) की शर्त पर है।[1]

---

[1] अबू दाऊद ३३१३, बैहक़ी १०/७३, सहीह

इसमें कई विषय हैं :

१- لا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا की व्याख्या।

२- अवैज्ञा तथा आज्ञाकारिता का प्रभाव किसी भूखण्ड में भी होता है।

३- जटिल समस्या को आसान की ओर फेरना ताकि समाधान सरल हो जाये।

४- आवश्यकतानुसार मुफ़्ती विवरण माँग सकता है।

५- किसी विशेष भूखण्ड की मनौती उचित है जबकि कोई रूकावट न हो।

६- उस स्थान की मनौती अनुचित है जिसमें मूर्खता के युग में कोई मूर्ति रही हो यद्यपि उसे हटा दिया गया हो।

७- वहाँ भी निषेध है जहाँ उनका उत्सव होता रहा हो यद्यपि अब न होता हो।

८- ऐसे स्थान में मनौती पूरी करना अनुचित (वर्जित) है क्योंकि वह मनौती अवैज्ञाकारिता की है।

९- मुशरिकों के पर्व की समानता करने से बचना यद्यपि बिना इरादे के हो।

१०- अवज्ञाकारिता में मनौती नहीं होती।

११- इंसान जिसका मालिक न हो उसमें मनौती नहीं होती।

अध्याय

अल्लाह के सिवाय के लिए मनौती शिर्क है

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿يُوفُونَ بِالنَّذْرِ﴾

वे मन्नत पूरी करते हैं। (सूरतुल इंसान:७)

तथा उसका कथन है कि:

﴿وَمَا أَنفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ﴾

तथा तुम जो भी धन ख़र्च करो अथवा मन्नत मानो अल्लाह उसे अवश्य जानता है।

तथा सहीह में आयशा رضي الله عنها से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया जो अल्लाह की आज्ञा का पालन करने की मन्नत माने वह पालन करे, तथा जो अल्लाह की अवज्ञा की मन्नत माने वह अवज्ञा न करे।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- मन्नत पूरी करना वाजिब (अनिवार्य) है।

२- जब उसका अल्लाह की इबादत होना सिद्ध हो गया तो अन्य के लिए मन्नत मानना शिर्क है।

३- अवज्ञा (पाप) की मन्नत पूरी इरना जायेज (वैध) नहीं।

---

[1] बुख़ारी ६३१८, दारमी २/१८४

अध्याय

अल्लाह के सिवाय से पनाह माँगना शिर्क है

तथा अल्लाह तआला का कथन है :

﴿وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا﴾

और इंसानों में से कुछ लोग जिन्नों में से कुछ लोगों की पनाह माँगा करते थे इस प्रकार उन्होंने जिन्नों का गर्व बढ़ा दिया। (सूरह जिन्न:६)

ख़ौला बिन्ते हकीम رضي الله عنها से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते सुना कि जो किसी स्थान पर उतरे तथा यह दुआ पढ़े। मैं अल्लाह के पूरे कलमों द्वारा उसकी सब सृष्टि की बुराई से पनाह माँगता हूँ, उसे कोई वस्तु हानि न पहुँचायेगी जब तक वहाँ से प्रस्थान न करे। इसको मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- सूरह जिन्न की आयत की व्याख्या।

२- अल्लाह के सिवाय से पनाह माँगना शिर्क है।

३- इस पर हदीस से तर्क निकालना क्योंकि ज्ञानियों ने इससे यह तर्क निकाला है कि अल्लाह के कलेमात (शब्द) सृष्टि नहीं इसलिए कि सृष्टि से पनाह माँगना शिर्क है।

---

[1] मुस्लिम २७०८

४- इस सक्षिंप्त दुआ की प्रधानता।

५- किसी वस्तु से साँसारिक लाभ होना अर्थात किसी बुराई से बचाव अथवा किसी लाभ के लिए उसके शिर्क न होने का प्रमाण नहीं।

अल्लाह के सिवाय से गुहार करना या दुआ करना शिर्क है

तथा अल्लाह तआला का कथन है :

﴿وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ الظَّالِمِينَ وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ﴾

और अल्लाह के सिवाय उसे न पुकारो जो तुमको लाभ या हानि न पहुँचा सके यदि तुमने ऐसा किया तो इस समय तुम अत्याचारियों में से हो। तथा यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाये तो वही उसका निवारण कर सकता है।(सूरतु यूनुस:१०६,१०७)

तथा उसका कथन है :

﴿فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ﴾

अल्लाह के पास जीविका की खोज करो तथा उसी की इबादत करो। (सूरतुल अनकबूत:१७)

तथा उसका कहना है कि :

﴿وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ﴾

तथा उससे अधिक गुमराह कौन है जो अल्लाह के सिवाय उसे

पुकारता है जो प्रलय तक उसे उत्तर न दे सके। (सूरतुल अहक़ाफ़:५) दोनों आयतें

तथा उसका कथन है कि :

﴿أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ﴾

कौन लाचार की दुआ सुनता है जब वह उसे पुकारता है तथा दुख दूर करता है। (सूरतुन नमल:६२)

और तबरानी ने अपनी सनद से रिवायत किया है कि नबी ﷺ के युग में एक मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) मुसलमानों को पीड़ा पहुँचा रहा था तो कुछ ने कहा चलो रसूलुल्लाह ﷺ से इस मुनाफ़िक़ के सम्बन्ध में फ़रियाद करें तो नबी ﷺ ने उनसे कहा कि मुझसे गुहार (फ़रियाद) नहीं की जाती, फ़रियाद अल्लाह ही से की जाती है।[1]

इसमें कई विषय है :

१- गुहार के पश्चात दुआ की चर्चा विशेष के बाद साधारण की दुआ है।

२- अल्लाह के कथन وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ की व्याख्या।

३- अल्लाह के सिवा को पुकारना ही महाशिर्क है।

४- श्रेष्ठतम व्यक्ति भी ऐसा कर्म अल्लाह के सिवाय को प्रसन्न करने के लिए करे तो अत्याचारियों में होगा।

५- इसके बाद की आयत की व्याख्या।

६- ऐसा कर्म कुफ़्र (अधर्म) होने के साथ कोई साँसारिक लाभ नहीं पहुँचाता।

---

[1] मजमउज ज्वाएद १०/१५९ इसे तबरानी ने रिवायत किया और इस में इब्ने लहीया है जिस पर कलाम है।

७- तीसरी आयत की तफ़सीर (व्याख्या)।

८- अल्लाह ही से जीविका माँगी जाये, जैसे स्वर्ग की प्रार्थना उसी से की जाती है।

९- चौथी आयत की व्याख्या।

१०- उससे अधिक गुमराह कोई नहीं जो अल्लाह के सिवा को पुकारता हो।

११- अन्य प्रार्थी की प्रार्थना से अज्ञान होता है।

१२- ऐसा पुकारना पुकारने वाले से शत्रुता का कारण बनेगा।

१३- ऐसी पुकार को पुकारे गये की इबादत का नाम देना।

१४- पुकारे गये का इस इबादत से इंकार।

१५- इस कर्म के उसके सबसे अधिक गुमराह (विपथ) होने का कारण बनना।

१६- पाँचवी आयत का भाष्य।

१७- आश्चर्य की बात मूर्ति पूजकों का यह इक़रार है कि अल्लाह ही लाचारों की गुहार सुनता है इसी कारण कड़े समय में वे मात्र अल्लाह ही को स्वच्छ करके पुकारते थे।

१८- मुस्तफ़ा ﷺ का तौहीद की सीमा की रक्षा करना तथा अल्लाह का आदर करना।

अध्याय

अल्लाह का कथन कि क्या वह उसे अल्लाह का साझी बनाते हैं जो कुछ बना ही नहीं सकते

अल्लाह तआला का कथन है कि :

﴿أَيُشْرِكُونَ مَا لا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا﴾

क्या वह उसे (अल्लाह का) साझी बनाते हैं जो कुछ पैदा ही नहीं कर सकते स्वयं पैदा किये गये हैं तथा उनकी सहायता नहीं कर सकते। (सूरतुल आराफ़:१९१,१९२)

तथा उसका कहना है :

﴿وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ﴾

अल्लाह के सिवा जिसे तुम पुकारते हो वे एक कण का भी अधिकार नहीं रखते। (सूरह फ़ातिर:१३)

तथा सही बुख़ारी एवं मुस्लिम में अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी ﷺ उहद के दिन आहत हो गये तथा आपके अगले दाँत टूट गये तो आपने फ़रमाया वह लोग कैसे सफल होंगे जिन्होंने अपने नबी को आहत कर दिया उस पर यह आयत उतरी।[1]

---

[1] हाकिम ३/२०६ तथा बगवी १/४१८

﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾

इस विषय में तुम्हारा कोई अधिकार नहीं । (सूरतु आल-इमरान:१२८)

तथा इब्ने उमर ﷺ से रिवायत है[1] कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को जब फ़ज्र की अन्तिम रकअत में रूकूअ से सिर उठाते तो फ़रमाते हुए सुना, "ऐ अल्लाह अमुक तथा अमुक को धिक्कार दे, उस समय जब आप "سمع الله لمن حمده ربنا لك الحمد" कह लेते तो अल्लाह ने आयत उतारी।

﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾

तथा एक रिवायत[2] में है कि आप सफ़वान बिन उमय्या, सुहैल बिन अमर तथा हारिस बिन हिशाम को शाप दे रहे थे इस पर यह आयत उतरी (इस विषय में आप का कोई अधिकार नहीं)

तथा उसमें (बुख़ारी में) अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ पर जब आयत उतरी :

﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ﴾

अर्थात अपने समीपवर्ती संबंधियों को डराईये (सुरतुश शुअरा:२१४)

तो आप हममें खड़े हुए। आपने कहा हे कुरैश के समुदाय अथवा इसी प्रकार की बात। अपने प्राणों को ख़रीद लो मैं अल्लाह से तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा, हे अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब मैं अल्लाह से तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा, हे सफ़िया रसूलुल्लाह ﷺ की फूफी मैं अल्लाह से तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा, हे मुहम्मद की पुत्री फ़ातिमा

---

[1] बुख़ारी ३८४२

[2] बुख़ारी ३८४२

मेरा जितना धन चाहे माँग ले मैं अल्लाह से तेरे कुछ काम न आऊँगा ।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- दोनों आयतों की व्याख्या ।

२- उहद की कथा ।

३- रसूलों के प्रमुख की नमाज़ में क़ुनूत पढ़ना तथा सहाबा का आपके पीछे आमीन बोलना ।

४- जिनको शाप दिया गया वे काफ़िर थे ।

५- उन्होंने ऐसा कुकर्म किया जो दूसरे काफिरों ने नहीं किया जैसे अपने नबी को आहत करना तथा आपको हत करने का आग्रह तथा मुसलमान हतों के अंगों के टुकड़े करना जबकि वे उन्हीं के चचेरे भाई थे ।

६- अल्लाह का "आयत" उतारकर रसूल को रोकना ।

७- अल्लाह का कहना कि वह या तो उनको क्षमा कर दे या उन्हें यातना दे तथा अल्लाह ने उनको क्षमा कर दिया और वह ईमान ले आये ।

८- आपदाओं के समय क़ुनूत पढ़ना ।

९- जिनको शाप दिया गया नमाज़ में उनका तथा उनके पिताओं का नाम लेना ।

१०- क़नूत में निश्चित व्यक्ति को धिक्कार करना ।

११- आप ﷺ का वाक्य जब आप पर आयत उतारी गई ।

१२- इस विषय में आप ﷺ का प्रयास जिसके कारण काफ़िरों ने

---

[1] बुख़ारी २६०२, मुस्लिम २०४

आपको दीवाना कहा तथा कोई मुसलमान अब भी यह करे तो यही कहा जायेगा।

१३- आपका दूर तथा समीप के सम्बन्धियों से कहना कि मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हारे किसी काम न आऊँगा यहाँ तक कि आपने फ़रमाया कि हे मुहम्मद की पुत्री फ़ातिमा मैं अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम न आऊँगा, तो आप ने स्पष्ट कर दिया कि आप नारियों की प्रमुखा की ओर से कुछ काम न आयेंगे। तथा इंसान को इसका विश्वास है कि आप सच बोलते हैं, फिर आज विशेष लोगों की जो दशा है उस पर विचार करो तो उससे तौहीद तथा धर्म के अपरिचित होने का पता लग जायेगा।

अध्याय

अल्लाह तआला का कथन है

﴿حَتَّى إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ﴾

यहाँ तक कि जब उनके दिलों से भय दूर हो जाता है तो वे कहते हैं कि तुम्हारे प्रभु ने क्या कहा ? वे कहते हैं कि उसने सत्य कहा तथा वह सर्वोच्च सबसे महान है। (सूरतु सबा:२३)

तथा सहीह (बुख़ारी)[1] में अबू हुरैरा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया, जब अल्लाह आकाश में कोई आदेश देता है तो फ़रिश्ते अपने पर विनम्रता के कारण फड़फड़ाते हैं जैसे किसी चट्टान पर जंजीर यह उनको पहुँचाता है। "यहाँ तक कि जब उनके दिलों से भय दूर होता है तो कहते हैं तुम्हारे प्रभु ने क्या कहा, सब कहते हैं सत्य कहा तथा वह सर्वोच्च महान है।" और वह जिन्न उसे चोरी से सुन लेता है इस प्रकार वे एक-दूसरे के ऊपर होते हैं। सुफ़ियान बिन ओययना ने उसे अपनी हथेली से बताया अपना हाथ फिराया तथा अँगुलियों में दूरी कर दिया, वह बात सुनता है तथा अपने नीचे जो होता है उसे पहुँचा देता है फिर वह अपने से नीचे दूसरे को पहुँचाता है यहाँ तक कि वह जादूगर अथवा भविष्यवक्ता तक पहुँचा देता है तो कभी उसे उल्का धर लेता है उसे पहुँचाने से पहले तथा कभी पहले ही धर लेता है फिर वह (जादूगर) उसके साथ सौ झूठ बोलता है तो कहा जाता है कि अमुक दिन उसने यह कहा तथा यह नहीं कहा और

---

[1] बुख़ारी ४४२४

उसे एक बात के कारण सच्चा मान लिया जाता है जो उसने आकाश से सुना।

तथा नवास पुत्र समआना ﷺ ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब अल्लाह किसी आदेश की प्रकाशना करना चाहता है तो उसे कहता है जिसके भय से आकाशों में कम्पन पैदा हो जाती है अथवा कहा कि थरथराहट हो जाती है अल्लाह के भय के कारण तथा जब उसे आकाशों के तथा धरती के (फ़रिश्ते) सुनते हैं तो बेहोश होकर सजदे में गिर जाते हैं फिर सबसे पहले जिब्रील (फ़रिश्ता) सिर उठाता है तो अल्लाह उसे प्रकाशना बताता है जो वह चाहता है फिर जब वह किसी आकाश से गुज़रते हैं तो उसके फ़रिश्ते उससे प्रश्न करते हों कि हे जिब्रील हमारे प्रभु ने क्या कहा ? जिब्रील कहते हैं सत्य कहा वह सर्वोपरि महान है तो सभी जिब्रील की बात कहते हैं फिर जिब्रील जहाँ अल्लाह का आदेश हो प्रकाशना पहुँचा देते हैं।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- आयत का भाष्य।

२- इसमें शिर्क के असत्य होने का प्रमाण विशेष रूप से जिसका सम्बंध नेकों से है तथा यह ऐसी आयत है कि जिसके विषय में कहा जाता है कि दिल से शिर्क के वृक्ष का उन्मूलन कर देती है

३- अल्लाह तआला के कथन قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ की व्याख्या।

४- उनके इसके संदर्भ में प्रश्न करने का कारण।

५- जिब्रील का इसके बाद अपने इस कथन से उन्हें उत्तर देना कि अल्लाह ने ऐसे-ऐसे फ़रमाया।

६- इसका वर्णन कि प्रथम जिब्रील अपना सिर उठाते हैं।

---

[1] अस-सुन्नह इब्ने अबी आसिम १/२२७ तफ़सीर इब्ने कसीर ६/५०४

७- वह पूरे आकाशवासियों को बताते हैं क्योंकि वे उनसे प्रश्न करते हैं।

८- बेहोशी पूरे आकाशवासियों को सामान्य होती है।

९- आकाशों का अल्लाह के कलाम से काँपना।

१०- जिब्रील जहाँ तक के लिए आदेश होता है प्रकाशना पहुँचाते हैं।

११- शैतानों के चोरी करने की चर्चा।

१२- उनका एक-दूसरे पर सवार होने की स्थिति।

१३- उल्का का गिरना।

१४- कभी उल्का बात पहुँचाने से पहले आ लगता है तथा कभी वह जिन्न अपने मित्र इंसान को उल्का के लगने से पहले बात पहुँचा देता है।

१५- कभी भविष्यवक्ता की बात सच हो जाती है।

१६- वह उसके साथ सौ झूठ बोलता है।

१७- उसके मिथ्या को उसी बात के कारण सत्य माना जाता है जो आकाश से सुनता है।

१८- लोग असत्य को एक सत्य के कारण कैसे स्वीकार कर लेते हैं तथा सौ पर विचार नहीं करते।

१९- वे शैतान इस बात को एक-दूसरे से लेकर याद करते तथा उससे तर्क देते हैं।

२०- अशअरियों के विपरीत अल्लाह के गुणों (सिफ़ात) का प्रमाण मिलता है।

२१- कंपन तथा मूर्छा अल्लाह के भय से होती है।

२२- वे फ़रिश्ते अल्लाह के लिए सज्दे में गिर जाते हैं।

अध्याय

शफ़ाअत (अभिस्तावना) का बयान

तथा अल्लाह तआला का कथन है :

﴿وَأَنذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُحْشَرُوا إِلَى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلا شَفِيعٌ﴾

और इस (प्रकाशना) द्वारा आप उनको सचेत करें जो डरते हैं कि अपने प्रभु की ओर ऐसी हालत में एकत्र किये जायेंगे कि उनके लिए अल्लाह के सिवाय न कोई सर्मथक हो तथा न कोई सिफ़ारिश करे। (सूरतुल अनआम:५१)

तथा उसका कथन है :

﴿قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا﴾

कह दो कि सभी सिफ़ारिश का अधिकार अल्लाह को है। (सूरतुज़्ज़ुमर:४४)

तथा उसका कथन है :

﴿وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَى﴾

आकाशों में बहुत से फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ काम न देगी किन्तु इसके बाद कि अल्लाह जिसके लिए चाहे अनुमति दे तथा प्रसन्न हो। (सूरतुन नज्म:२६)

तथा उसका कथन है :

﴿قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ لا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلا فِي الأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيرٍ وَلا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّى إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ﴾

कह दो कि (हे बहुदेववादियो) तुम अल्लाह के सिवा जिनको (उपास्य) समझते हो पुकारो वे आकाशों में तथा धरती में एक कण के मालिक नहीं न उनमें साझीदार हैं न उनमें से कोई अल्लाह का सहयोगी है न अल्लाह के पास सिफ़ारिश लाभदायक हो सकती है । किन्तु जिसके लिए अनुमति प्रदान कर दे यहाँ तक कि जब उनके दिलों से भय दूर होगा तो कहेंगे कि तुम्हारे प्रभु ने क्या कहा सब कहेंगे सत्य कहा तथा वह सर्वोच्च महान है । (सूरतु सबा: २२,२३)

अबुल अब्बास[1] ने कहा कि अल्लाह ने अपने सिवा उन बातों को नकार दिया जिसे बहुदेववादी तर्क बनाते हैं उसने नकार दिया कि अल्लाह के सिवा कोई स्वत्वधिकार अथवा कोई हिस्सा है अथवा कोई उसका सहायक है तथा सिफ़ारिश ही शेष रह गई जिसके सम्बन्ध में बताया कि उसी के लिए यह लाभदायक होगी जिसके लिए प्रभु अनुमति देगा जैसाकि उसने कहा :

﴿وَلا يَشْفَعُونَ إِلا لِمَنْ ارْتَضَى﴾

कि वे उसी के लिए सिफ़ारिश करेंगे जिसे वह पसन्द करेगा । (सूरतुल अम्बिया: २८)

---

[1] यह शेखुल इस्लाम अहमद पुत्र अब्दुल हलीम इब्ने तैमिया की उपाधि हैं देखिए: फ़तहुल मजीद पुष्ट १६८ ।

तो यह सिफ़ारिश जिसे बहुदेवादी समझते हैं क़ियामत के दिन नहीं होगी जैसाकि क़ुरआन ने उसे नकारा है तथा नबी ﷺ ने सूचित किया है कि आप आयेंगे फिर अपने प्रभू को सज्दा करेंगे तथा उसकी प्रशंसा करेंगे न कि प्रथम सिफ़ारिश आरम्भ कर देंगे। फिर कहा जायेगा कि अपना सिर उठाओ तथा कहो, सुना जायेगा, माँगो दिया जायेगा तथा सिफ़ारिश करो सिफ़ारिश स्वीकार की जायेगी।

तथा नबी ﷺ से अबू हुरैरा ने प्रश्न किया कि आप की सिफ़ारिश का सर्वाधिक सौभाग्य किसे प्राप्त होगा ? आपने फ़रमाया जिसने स्वच्छ मन से ला इलाहा इल्लल्लाह कहा है तो यह सिफ़ारिश अल्लाह की अनुमति से शुद्ध एकेश्वरवादियों के लिए होगी तथा उसके लिए नहीं होगी जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया हो। इसका अभिप्राय यह है कि पवित्र अल्लाह ही अपने विशुद्ध लोगों पर दया करके आपकी दुआ के माध्यम से उस व्यक्ति को जिसके लिए आपको सिफ़ारिश की अनुमति प्रदान करेगा, क्षमा करेगा ताकि आप को सम्मानित करे तथा आप को "मुकामे महमूद" प्राप्त हो। अत: क़ुरआन ने उस सिफ़ारिश को नकारा है जिसमें शिर्क हो और इसीलिए सिफ़ारिश को अनेक स्थानों में साबित किया है और नबी ﷺ ने बयान किया है कि वह उन्ही के लिए होगी जो स्वच्छ मनसे एक अल्लाह को मानेंगे तथा उसी की उपासना करेंगे (उनकी बात पूरी हो गई)

इसमें कई विषय है :

१- आयतों का भाष्य।

२- किस सिफ़ारिश को नकारा गया है ?

३- किस सिफ़ारिश को माना गया है ?

४- महा सिफ़ारिश की चर्चा जो "मक़ामे महमूद" में होगी।

५- नबी ﷺ प्रथम सिफ़ारिश आरम्भ नहीं करेंगे बल्कि सज्दा करेंगे फिर जब आपको अनुमति दी जायेगी तब सिफ़ारिश करेंगे।

६- सिफ़ारिश का सौभाग्य किसे प्राप्त होगा।

७- जिसने अल्लाह के साथ शिर्क (मिश्रण) किया हो उसके लिए नहीं होगी।

८- सिफ़ारिश (अभिस्तावना) की यर्थाथता का वर्णन।

अध्याय

अल्लाह का कथन "आप उसे मार्गदर्शन नहीं दे सकते जिसे चाहते हों" (आयत के अन्त तक)

सही (बुख़ारी) में सईद पुत्र मुसैयिब ने अपने पिता से रिवायत किया, कहा कि जब अबू तालिब का अन्तिम समय हुआ तो उनके पास रसूलुल्लाह ﷺ आये और उनके पास अब्दुल्लाह बिन अबू उमैया तथा अबू जहल उपस्थित थे तो आपने फ़रमाया: हे चचा, ला इलाहा इल्लल्लाह कह दो इस वाक्य पर मैं अल्लाह के पास तुम्हारे लिये लड़ूँगा, वे दोनों बोले क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से विमुख हो जाओगे । तो आपने उन पर दुहराया तो दोनों ने भी अपनी बात दुहराई तथा अन्त में उन्होंने कहा कि वह अब्दुल मुत्तलिब के धर्म पर हैं। तथा वह ला इलाहा इल्लल्लाह से इंकार कर गये, नबी ﷺ ने फ़रमाया मैं तुम्हारे लिये क्षमा याचना करूँगा जब तक कि मुझे रोका न जाये तो अल्लाह ने यह आयत उतारी :

﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ﴾

(नबी के लिए तथा ईमानवालों के लिए योग्य नहीं कि मुशरिकों के लिए वह क्षमा याचना करें। (सूरतु तौबा:११३)

तथा अल्लाह ने अबू तालिब के बारे में आयत उतारी:

﴿إِنَّكَ لا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ﴾

निश्चय ही आप उसे मार्गदर्शन नहीं दे सकते जिसे चाहें किन्तु अल्लाह जिसे चाहे मार्गदर्शन देता है। (सूरतुल क़सस:५६)

इसमें कई विषय है :

१- आयत إِنَّكَ لَا تَهْدِي की व्याख्या।

२- अल्लाह के कथन مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ का भाष्य।

३- तथा सबसे बड़ा विषय आपके कथन "ला इलाहा इल्लल्लाह" कह दो की व्याख्या है इसके विपरीत जिस पर कुछ ज्ञान के दावेदार हैं अर्थात मात्र दिल से मानना नहीं ला इलाहा इल्लल्लाह का एक़रार ज़रूरी है।

४- अबू जहल तथा उसके साथी नबी ﷺ का अभिप्राय समझते थे जब आपने कहा कि ला इलाहा इल्लल्लाह कह दो तो अल्लाह उसका बुरा करे जिससे अधिक अबू जहल इस्लाम को जानता था।

५- आप ﷺ का अपने चचा को मुसलमान बनाने के लिए अति परिश्रम तथा प्रयास।

६- उसका खंडन जो अब्दुल मुत्तलिब तथा आपके पूर्वजों को मुसलमान समझता है।

७- आपने उनके लिए क्षमा की दुआ की फिर भी उनको क्षमा नहीं किया गया बल्कि इससे रोक दिया गया।

८- इंसान पर बुरे साथी से हानि।

९- पूर्वजों तथा बड़ों के सम्मान का नुकसान

१०- मिथ्यावादियों को इस विषय में भ्रम अबू जहल का इसको तर्क बनाने का कारण।

११- इस बात का प्रमाण कि अन्तिम कर्म ही लाभदायक है इसलिए कि आप ने फ़रमाया कि यदि कह देते तो उनको लाभ पहुँचता।

१२- यह सोचना चाहिए कि यह शंका गुमराहों के दिल में कितनी महान होती है क्योंकि इस वाक्य में है कि वह इसी से झगड़ते हैं जबकि आप ﷺ ने बड़ा प्रयास किया तथा बार-बार अपना उपदेश पहुँचाया फिर भी अपने पास इसकी महानता तथा स्पष्टता के कारण इसी पर अडिग रहे।

अध्याय

इस बात का वर्णन कि इंसानों के अधर्म तथा धर्म त्याग का कारण सदाचारियों के सम्बन्ध में अत्यधिक है

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿يَاأَهْلَ الْكِتَابِ لا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ﴾

हे अहले किताब अपने धर्म में अति न करो। (सूरतुन निसा:१७१)

तथा सहीह[1] में इब्ने अब्बास ﷺ से अल्लाह के इस कथन की व्याख्या में है कि :

﴿وَقَالُوا لا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلا سُوَاعًا وَلا يَغُـوثَ وَيَعُـوقَ وَنَسْرًا﴾

तथा उन्होंने कहा कि अपने पूज्यों को न छोड़ना वद्द तथा स्वाअ एवं यगूस तथा यउक और नसर को न छोड़ना। (सूरतु नूह: २३)

फ़रमाया कि यह नूह की जाति के सदाचारी लोग थे जब वे मर गये तो शैतान ने उनकी जाति के दिल में यह बात डाली कि उनके आसनों के स्थान में उनकी मूर्तियाँ लगाओ तथा उन्हीं के नाम पर उनके नाम

---

[1] बुख़ारी, ४६३६

रख दो तथा उन्होंने वह किया फिर भी पूजा नहीं की यहाँ तक कि जब वह मर गये इनसे ज्ञान जाता रहा तो उन्हें पूजने लगे ।[1]

इब्ने कैय्यिम ने कहा[2] कि अनेक सलफ़ (पूनीत पूर्वजों) ने कहा है कि जब वे मर गये तो उनकी समाधियों पर झुकने लगे फिर उनकी प्रतिमायें बना लीं फिर दीर्घकाल के बाद उनको पूजने लगे ।

तथा उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा : मुझे ऐसे न बढ़ाना जैसे ईसाईयों ने मरियम के पुत्र को बढ़ाया निश्चय मैं एक भक्त हूँ मुझे अल्लाह का बंदा तथा उसका रसूल कहो । (बुख़ारी तथा मुस्लिम)[3]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि तुम अति (ग़ुलू) से बचो क्योंकि पहले लोगों को अति ने नाश किया ।[4]

तथा मुस्लिम में इब्ने मसऊद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अतिकारी नाश हो गये । आपने तीन बार कहा ।[5]

इसमें कई विषय हैं :

१- जो व्यक्ति इस अध्याय तथा इसके बाद के दो अध्याय को समझ जायेगा उसे इस्लाम के अपरिचित होने का एहसास हो जायेगा । तथा उसे अल्लाह के साम्थर्य तथा उसके दिलों को बदल देने क विचित्र बात मिलेगी ।

२- प्रथम शिर्क धरती में सदाचारियों के बारे में शंका से पैदा हुआ ।

३- सर्वप्रथम अम्बिया का धर्म बदला तथा उसका कारण क्या बना

---

[1] बुख़ारी, ४६३६

[2] इब्ने तैमिया के शिष्य हैं ।

[3] बुख़ारी ३२६१, हाकिम १/२३

[4] हाकिम १/२१५

[5] मुस्लिम २६७०

जबकि वे जानते थे कि अल्लाह ने उन्हें भेजा है।

४- विदअतों (नई बातों) को स्वीकार कर लेना जबकि धर्मविधान एवं प्राकृति उसे नकारती है।

५- इन सब का कारण सत्य को असत्य के साथ मिला देना है। प्रथम सदाचारियों से प्रेम दूसरे कुछ ज्ञानी धार्मिक जनों का कोई काम अच्छे इरादे से करना जिसका आशय बाद के लोगों का दूसरा समझ जाना।

६- सूरह नूह की आयत की व्याख्या।

७- मानव प्राकृति की पहचान कि सत्य उसके दिल में कम होता है तथा असत्य बढ़ता है।

८- इसमें पुनीत पूर्वजों की इस बात का साक्ष्य है कि बिदअतें कुफ्र का कारण हैं तथा यह कि शैतानों को अवज्ञा से अधिक प्रिय है क्योंकि अवज्ञा से तौबा क्षमा-याचना कर ली जाती है तथा बिदअत से नहीं की जाती।

९- शैतान बिदअत के परिणाम को जानता है यद्यपि उसके कर्ता का इरादा नेक हो।

१०- एक साधारण नियम का ज्ञान जो अतिशय का निषेध है तथा उसके परिणाम का ज्ञान।

११- समाधि (क़ब्र) पर पुण्य कर्म के लिए पड़े रहने का नुकसान (हानि)।

१२- प्रतिमायें बनाने से रोकना तथा उसको दूर करने की तत्वदर्शिता

१३- इस कथा के महत्व तथा उसकी अति आवश्यकता को जानना जब कि लोग इस पर ध्यान नहीं देते।

१४- सबसे विचित्र बात यह कि बिदअती इसे आयत की तफ़सीर तथा हदीस की पुस्तकों मे पढ़ते हैं। वह आयत का अर्थ जानते हैं

किन्तु अल्लाह ने उनकी समझ फेर दी है और वह नूह की जाति के कर्म को सर्वश्रेष्ठ इबादत समझते हैं और यह भी मानते हैं कि जिस कर्म से अल्लाह तथा उसके रसूल ने रोका है ऐसा कुफ्र जिससे धन तथा प्राण जायेज़ हो जाता है।

१५- इसका वर्णन कि वह ऐसा केवल सिफ़ारिश के लिए करते थे।

१६- उनका यह विचार कि जिन ज्ञानियों ने यह प्रतिमायें बनाई थी उनका उद्देश्य यही इबादत थी।

१७- आपके कथन में खुला वर्णन है कि "मुझे ऐसे न बढ़ाना जैसे ईसाईयों ने मरियम के पुत्र (ईसा) को बढ़ा दिया" तो अल्लाह की दयालुता तथा शांति हो आप पर कि आपने स्पष्ट रूप से यह घोषणा कर दी।

१८- आपका हमें यह शिक्षा देना "कि अतिकारी नाश हो गये"।

१९- इसका वर्णन कि उनकी पूजा ज्ञान भूल जाने के बाद हुई तथा इसमें ज्ञान रहने के लाभ तथा उसके खो जाने की हानि का वर्णन है।

२०- ज्ञान खोने का कारण ज्ञानियों का न रहना है।

अध्याय

जब किसी धर्माचारी की समाधि के पास अल्लाह की इबादत घोर पाप है तो उस की पूजा करना कितना बड़ा पाप होगा

सहीह में[1] आयेशा رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि उम्मे सलमा ने रसूलुल्लाह ﷺ से एक गिरजा की चर्चा की जिसे हब्शा में देखा था जिसमें प्रतिमायें बनी थीं आपने फ़रमाया यह लोग ऐसे हैं कि जिनमें कोई नेक व्यक्ति मर जाता है तो उसकी क़ब्र पर पूजा स्थान बना लेते हैं तथा उसमें यह प्रतिमायें बनाते हैं यह लोग अल्लाह के पास बुरे लोग हैं तो इन्होंने दोनों उपद्रव एकत्र कर लिये कब्रों का उपद्रव तथा प्रतिमाओं का उपद्रव।

तथा बुख़ारी और मुस्लिम में आएशा से रिवायत है कि जब आपकी प्राण निकलने का समय आया तो अपने मुख पर अपनी चादर डाल ली और जब उससे श्वास रोध होने लगता हो चादर हटा देते तथा आप ने इसी स्थिति में फ़रमाया "यहूद तथा ईसाईयों पर अल्लाह की धिक्कार हो उन्होंने अपने अम्बिया की समाधियों को इबादत का स्थान बना लिया" उनके कर्म से आप डरा रहे थे तथा ऐसी बात न होती तो आप की समाधि खुली होती किन्तु इस भय से कि उसे पूजा स्थान न बनाया जाये उसे भीतर कर दिया गया। (बुख़ारी ४२५, मुस्लिम ५३१)

तथा मुस्लिम में जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि मैंने नबी ﷺ

---

[1] हाकिम ६/५१, बुख़ारी ४२४, मुस्लिम २९८० उसी के समान।

को आप की मौत से पाँच दिन पहले फ़रमाते सुना, "मैं अल्लाह के सामने प्रत्येक मित्र से अलग होता हूँ इसलिए कि अल्लाह ने मुझे मित्र बना लिया है जिस प्रकार इब्राहीम को मित्र बना लिया और यदि मैं किसी को मित्र बनाता तो अबू बक्र को मित्र बनाता। सावधान ! तुमसे पहले लोग नबियों की समाधियों को उपासना स्थल बनाते थे, सावधान ! तुम समाधियों को उपासना स्थल न बनाना इसलिए कि मैं तुमको इससे रोकता हूँ" तो आपने अपने अन्तिम जीवन में इससे रोक दिया फिर आपने इस पर धिक्कार की तथा समाधियों के पास नमाज़ पढ़ना भी इसी में है। यद्यपि मस्जिद न बनी हो तथा यही आपके इस वाक्य का अर्थ है इस भय से कि पूजा स्थान न बना लिया जाये क्योंकि सहाबा आपकी समाधि पर मस्जिद नहीं बना सकते थे, तथा प्रत्येक स्थान जहाँ नमाज़ के इरादे से जाया जाये उसे मस्जिद बना लिया गया जैसा रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया मेरे लिए धरती को मस्जिद तथा पवित्र बना दिया गया।[1]

तथा अहमद ने हसन सनद के साथ इब्ने मसउद से रिवायत किया है कि सबसे बुरा वह है जिसके जीवन में प्रलय आयेगी तथा वे लोग जो समाधियों को मस्जिद बनाते हैं इसे अबू हातिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है।[2]

इसमें कई विषय हैं :

१- रसूल ﷺ ने कड़ाई से उसे रोका है जो किसी सदाचारी व्यक्ति की समाधि के पास अल्लाह की उपासना के लिए मस्जिद बनाये यद्यपि उसके कर्ता का विचार सही हो।

२- प्रतिमाओं से रोकना तथा उसके सम्बन्ध में कड़ाई।

३- इस विषय में रसूलुल्लाह ﷺ के अतिशय पर विचार करो कि

---

[1] मुस्लिम ३७७, इब्ने हिब्बान २००, हाकिम ४/४१६

[2] हाकिम १/४०५, इसे अलबानी ने कमज़ोर कहा जो उचित नहीं।

आपने पहले भी इससे रोका फिर अपने निधन से पाँच दिन पूर्व भी कि पहले वर्णन पर बस नहीं किया।

४- आपने अपनी समाधि के स्तित्व से पहले अपनी समाधि के पास ऐसा करने से रोका।

५- यह यहूद तथा ईसाईयों की अपने नबियों की समाधियों के बारे में रीति है।

६- आपने इस पर उनको धिक्कारा है।

७- आपका अभिप्राय हमें अपनी समाधि को पूजा स्थल बनाने से डराना था।

८- आपकी समाधि खुली न रखने का कारण।

९- समाधियों को मस्जिद बनाने का अर्थ क्या है?

१०- आपने जो उसे मस्जिद बनाते हैं तथा जिन पर प्रलय घटेगी दोनों को बराबर कहा तथा शिर्क के कारण की उसके होने से पहले ही अपने निधन के समय चर्चा कर दी।

११- इसकी चर्चा अपने निधन से पाँच दिन पहले करना उन दो सम्प्रदायों का खंडन है जो बिदअतियों में सबसे बुरे हैं बल्कि कुछ धर्मज्ञों ने उन्हें बहत्तर सम्प्रदायों से अलग कर दिया है तथा यह राफ़िज़ी एवं जहमिया हैं। राफ़िज़ियों के कारण शिर्क हुआ तथा समाधियों की पूजा उत्पन्न हुई तथा उन्होंने उन पर सर्वप्रथम मस्जिद बनाई।

१२- आप पर प्राण निकलने के समय सख़्ती।

१३- अल्लाह का मित्र बनाये जाने का सम्मान।

१४- इसका वर्णन कि यह प्रेम से उत्तम है।

१५- इसका वर्णन कि सिद्दीक़ सभी सहाबा से श्रेष्ठ हैं।

१६- आपकी ख़िलाफ़त (प्रतिनिधित्व) की ओर संकेत।

अध्याय

धर्माचारियों की समाधियों के सम्बन्ध में अति उसे अल्लाह के सिवाय पूज्य मूर्ति बना देती है

इमाम मालिक ने मुअत्ता में रिवायत किया:[1] है कि रसूलुल्लाह ﷺने फ़रमाया : हे अल्लाह मेरी समाधि को मूर्ति न बनाना जिसकी पूजा की जाये, अल्लाह का घोर प्रकोप उस जाति पर हो जिसने अपने नबियों की समाधियों को पूजास्थल बना लिया।

तथा इब्ने जरीर ने सुफ़ियान से उन्होंने मन्सूर से और उन्होंने मुजाहिद से रिवायत किया है कि आयत أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ में लात एक व्यक्ति था जो लोगों को सत्तू घोल कर पिलाता था और जब वह मरा तो लोग उसकी समाधि के मुजावर बन गये। इसी प्रकार अबुल जौज़ा ने इब्ने अब्बास से रिवायत किया है कि वह हाजियों के लिए सत्तू घोलता था इब्ने अब्बास ؓ ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उन स्त्रियों को धिक्कारा है जो समाधियों का दर्शन करने जाती हैं तथा जो उनके ऊपर मस्जिदें बनाते तथा दीप जलाते हैं इस हदीस को सुनन वालों ने रिवायत किया है।

इसमें कई बिषय हैं :

१- प्रतिमा की व्याख्या।

२- इबादत की व्याख्या।

३- आप ﷺ ने अपनी समाधि के पूजा स्थल बनने से इसलिए पनाह

[1] हाकिम २/२४६, तबकात इब्ने साद २/२/३६

माँगी कि ऐसा होना संभव था।

४- आपका इसके साथ नबियों की समाधियों के मस्जिद बनाने की चर्चा करना।

५- अल्लाह के घोर क्रोध की चर्चा।

६- तथा सबसे महत्वपूर्ण बात लात की इबादत का कारण बताना है जो सबसे बड़ा देवता था।

७- यह कि यह एक सदाचारी व्यक्ति की समाधि थी।

८- यह समाधि वाले का नाम था तथा उस का नाम रखने का कारण।

९- समाधियों का दर्शन करने वाली स्त्रियों को धिक्कार करना।

१०- उसे धिक्कार करना जो समाधियों पर दीप जलाये।

अध्याय

मुस्तफ़ा ﷺ ने तौहीद (अद्वैत) की चहारदीवारी की रक्षा कैसे की तथा शिर्क तक पहुँचने के मार्ग को कैसे बंद किया

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنفُسِكُمْ﴾

तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गये हैं। (सूरतुत तौबा : १२८)

अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अपने घरों को समाधि स्थल न बनाओ तथा मेरी समाधि को त्योहार न बनाना तथा मुझे दरूद भेजना क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझे पहुँचेगा तुम जहाँ भी रहो इसे अबू दाउद ने हसन सनद से रिवायत किया है[1] तथा इसके रावी विश्वस्त हैं।

तथा अली बिन हुसैन से रिवायत है कि उन्होंने एक व्यक्ति को देखा कि नबी ﷺ की समाधि स्थल में एक छिद्र से आता है तथा भीतर जाता है और दुआ करता है तो उसे रोका और कहा तुम्हें एक हदीस न सुनाऊँ जिसे मैंने अपने पिता से उन्होंने मेरे दादा से उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है कि आप ने फ़रमाया: मेरी समाधि को त्योहार न बनाना न अपने घरों को समाधियाँ, क्योंकि तुम्हारा सलाम

---

[1] अबू दाऊद २०४२ हाकिम २/३६७, शब्द उसी का है, मुस्लिम ७८० इसी के समान।

मुझे पहुँचेगा तुम जहाँ भी रहो इसे अल-मुख़्तार में रिवायत किया है।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- सूरह बराअत की आयत की व्याख्या।

२- आप का अपनी उम्मत को इस चारदीवारी से बहुत दूर रखना।

३- हमारे मार्गदर्शन के लिए आपकी इच्छा तथा आपका प्रेम एवं दयालुता का ज़िक्र।

४- विशेष रूप से अपनी समाधि के दर्शन से रोकना जबकि उसका दर्शन उत्तम है।

५- बहुत अधिक दर्शन से रोकना।

६- आपका घर में नफ़िल (स्वीच्छा) नमाज़ पर उभारना।

७- यह सहाबा के हाँ निश्चित था कि समाधि स्थल में नमाज़ नहीं होती।

८- आपका यह कारण बताना कि किसी व्यक्ति का दुरूद तथा सलाम यद्यपि वह दूर भी हो तो आपको पहुँचता है समीप होने के भ्रम की आवश्यकता नहीं।

९- आपका बर्ज़ख़ में होना जहाँ उम्मत का दुरूद तथा सलाम आप पर पेश किया जाता है।

---

[1] मुस्लिम

अध्याय

इस उम्मत के कुछ लोग मूतियाँ पूजेंगे

तथा अल्लाह तआला का कथन है :

﴿أَلَمْ تَـرَ إِلَـى الَّذِيـنَ أُوتُـوا نَصِيبًـا مِـنْ الْكِتَـابِ يُؤْمِنُـونَ بِـالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ﴾

क्या तूने उनको नहीं देखा जो किताब का एक अंश दिये गये वह मूर्ति तथा ताग़ूत पर ईमान रखते हैं। (सूरतुन निसा:५१)

तथा उसका कहना है:

﴿قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذَلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِـبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ﴾

क्या मैं आपको उन्हें न बताऊँ जिनका प्रतिकार (बदला) अल्लाह के पास इससे बुरा है, यह वे हैं जिन पर अल्लाह ने धिक्कार किया है तथा उन पर क्रोध किया है तथा उनमें से कुछ को बंदर तथा सूअर एवं ताग़ूत के बंदे बना दिये। (सूरतुल मायेदा:६०)

तथा अल्लाह का कथन है :

﴿قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا﴾

जो उन पर प्रभुत्व पा गये उन्होंने कहा हम उनके ऊपर मस्जिद बनायेंगे। (सूरतुल कहफ़:२१)

तथा अबू सईद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

तुम अवश्य अपने से पहले के लोगों का अनुसरण करोगे जैसे तीर-तीर के समान होता है यहाँ तक कि वह किसी गोह के बिल में गये होंगे तो तुम भी उसमें घुसोगे। सहाबा ने कहा कि अल्लाह के रसूल यहूद तथा नसारा की ? आपने फ़रमाया फिर किसकी ? (बुख़ारी तथा मुस्लिम)[1]

तथा मुस्लिम में सौबान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह ने मेरे लिए धरती को सिकोड़ दिया तो मैंने उसके पूर्व तथा पश्चिम को देख लिया और मेरी उम्मत का शासन वहाँ तक पहुँचेगा जिसे मेरे लिए सिकोड़ दिया गया तथा मुझे दो कोष (ख़जाने) दिये गये लाल (क़ैसर का कोष, तथा सफेद किसरा का) तथा मैंने अपने प्रभू से अपनी उम्मत के लिए दुआ की कि उसे साधारण सूखे से नाश न करे तथा उन पर उनके सिवा किसी ऐसे शत्रु को प्रभुत्व न दे कि उनका सफ़ाया कर दे तथा मेरे प्रभू ने कहा हे मुहम्मद जब मैं कोई निर्णय लेता हूँ तो वह बदलता नहीं, मैंने तेरी उम्मत के लिए तुझे यह प्रदान कर दिया कि उसे साधारण सूखे से नाश न करूँगा तथा उन पर ऐसे शत्रु को उनके सिवा प्रभुत्व न दूँगा जो उनका विनाश कर दे यद्यपि पूरा संसार मिलकर यह करना चाहे यहाँ तक कि यह स्वयं एक-दूसरे को नाश करेंगे तथा एक-दूसरे को बंदी बनायेंगे।

तथा बरकानी ने अपनी सहीह की रिवायत में यह ज़्यादा किया है कि मैं अपनी उम्मत पर विपथ मुख्याओं से डरता हूँ और जब उनमें तलवार चलेगी तो क़ियामत तक नहीं रूकेगी तथा क़ियामत नहीं आयेगी यहाँ तक कि मेरी उम्मत का एक समुदाय मुशरिकों से न मिल जाये और यहाँ तक कि मेरी उम्मत के बहुत से लोग मूर्तियाँ न पूजने लगें तथा निश्चय मेरी उम्मत में तीस झूठे होंगे जो सब नबी

---

[1] मुस्लिम के शब्द के साथ २६६९ बुख़ारी में इसी के समान नम्बर ३२६९.

होने का दावा करेंगे और मैं आसुर (अन्तिम नबी) हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा तथा मेरी उम्मत में से एक गिरोह सत्य पर स्थिर तथा विजयी रहेगा वह उन्हें कोई हानि न पहुँचा सकेंगे जो उनकी सहायता न करे यहाँ तक कि अल्लाह तआला का आदेश (प्रलय) आ जायेगा।

इसमें कई विषय हैं :

१- सूरह निसा की आयत का भाष्य।

२- सूरह मायेदा की आयत की तफ़सीर (व्याख्या)।

३- सूरह कहफ़ की आयत का भाष्य।

४- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मूर्तियों तथा ताग़ूत पर ईमान लाने का यहाँ क्या अर्थ है क्या दिल से मानना है अथवा मूर्तियों से घृणा रखते हुए असत्य जानते हुए मूर्तिपूजकों का साथ देना।

५- अहले किताब का यह कहना कि जो काफ़िर हैं वह मुसलमानों से अधिक सीधे रास्ते पर हैं।

६- इस अध्याय का अभिप्राय यही है कि इस उम्मत में भी इसका पाया जाना ज़रूरी है जैसाकि अबू सईद की हदीस से स्पष्ट है।

७- इस बात की व्याख्या कि इस उम्मत के बहुत से लोग मूर्तियों की पूजा करेंगे।

८- सब से विचित्र ऐसे व्यक्ति का निकलना है जो नबी होने का दावा करेगा। जैसे मुख़्तार सकफ़ी, हालाँकि वह इस्लाम के धर्म सूत्र को स्वीकार करता था तथा यह कहता था कि वह इसी उम्मत में है तथा रसूल सत्य एवं क़ुरआन सत्य है तथा उसमें मुहम्मद ﷺ के अन्तिम नबी होने की चर्चा है इन सब बातों में खुली प्रतिफूलता के होते वह इन सबको मानता था वह सहाबा के अन्तिम युग में निकला और बहुत से लोगों ने उसका

अनुसरण किया।

९- यह शुभ सूचना कि सत्य पूर्णतः समाप्त न होगा जैसे पहले हुआ बल्कि एक गिरोह सदा उस पर रहेगा।

१०- सबसे बड़ी निशानी यह है कि वे कम होते हुए भी प्रभुत्वशाली रहेंगे किसी की उनकी सहायता न करना तथा उनका विरोध करना उनको हानि न पहुँचायेगा।

११- यह दशा प्रलय तक रहेगी।

१२- इसमें जो बड़ी निशानियाँ हैं वह यह है कि आपका ख़बर देना कि मेरे लिए पूर्व तथा पश्चिम को सिकोड़ दिया गया तथा ऐसे ही हुआ जैसे आप ने ख़बर दी उत्तर तथा दक्षिण के विपरीत तथा आपने बताया कि आपको कोष (ख़ज़ाने) दिये गये, तथा आपका यह बताना कि अपनी उम्मत के लिए आप की दो दुआ स्वीकार कर ली गई तथा आपका ख़बर देना कि आपको तीसरी से रोक दिया गया तथा आपका तलवार चलाने की सूचना देना तथा वह जब चल जायेगी तो रूकेगी नहीं तथा आपका बताना कि वे एक-दूसरे को बंदी बनायेंगे तथा आपका अपनी उम्मत पर गुमराह अगुवा कारों से डरना तथा इस उम्मत के झूठे नबी होने के दावेदारों का होना तथा एक विजयी गिरोह का रह जाने की ख़बर देना और यह सभी जैसे आपने फ़रमाया हुआ जो सभी समझ में नहीं आ सकता था।

१३- उम्मत को मात्र गुमराह प्रमुखों से भय है।

१४- मूर्ति पूजा के अर्थ पर चेतावनी।

अध्याय

जादू के विषय में

अल्लाह तआला का कथन है कि :

﴿وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنْ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الآخِرَةِ مِنْ خَلاقٍ﴾

निश्चय उन्हें ज्ञान हो चुका है कि जिसने जादू सीखा उसका आख़िरत में कोई भाग नहीं। (सूरतुल बक़रा : १०२)

तथा उसका कहना है :

﴿يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ﴾

वह जिब्त तथा ताग़ूत पर ईमान रखते हैं। (सूरतुन निसा:५१)

आदरणीय उमर ने कहा कि जिब्त[1] जादू है तथा ताग़ूत शैतान[2] तथा जाबिर ने कहा कि ताग़ूत काहिन है जिन पर शैतान उतरता था जो प्रत्येक क़बीले में एक होता था।[3]

अबू हुरैरा ﵁ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "सात विनाशकारी चीज़ों से बचो लोगों ने कहा अल्लाह के रसूल वह क्या है? आपने फ़रमाया अल्लाह का शरीक (साझी) बनाना तथा जादू और अवैध किसी को हत करना तथा सूद खाना और अनाथ का धन खाना तथा लड़ाई के दिन पीछा दिखाना तथा भोली-भाली मुसलमान स्त्री

---

[1] अल-जिब्तु मूर्ति, अलकाहिन जादूगर, मुख्तारुस सिहाह ९१

[2] अत-ताग़ूत काहिन, शैतान तथा सभी गुमराहों प्रमुख (मुख्तारुस सिहाह ९१)

[3] अद्दुरुल मंसूर २/५६२

पर आरोप लगाना ।[1] तथा जुन्दुब से मरफूअन रिवायत है कि "जादूगर की सज़ा तलवार से मार देना है" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया तथा कहा कि इसका मौक़ूफ़ (सहाबी कथन) होना सही है ।[2] तथा सहीह बुख़ारी [3] में बजाला बिन अबदा ने कहा कि आदरणीय उमर ने यह आदेश लिखा कि प्रत्येक जादूगर तथा जादूगरनी को मार डालो बजाला ने कहा कि हमने तीन जादूगरनियों को मार डाला ।

तथा हफ़सा رضي الله عنها से रिवायत है कि उन्होंने अपनी एक दासी को जिसने उन पर जादू कर दिया था मार डालने का आदेश दिया और उसे मार डाला गया[4] इसी प्रकार जुन्दुब से भी जादूगर की हत्या सिद्ध है । इमाम अहमद ने कहा कि नबी ﷺ के तीन सहाबियों से जादूगर को हत करना सहीह रूप से सिद्ध हुआ है ।

इसमें कई विषय हैं :

१- सूरह बक़रा की आयत की व्याख्या ।

२- सूरह निसा की आयत की व्याख्या ।

३- जिब्त तथा ताग़ूत का वर्णन तथा दोनों के बीच अंतर ।

४- ताग़ूत जिन्नों तथा इंसानों दोनों में से होता है ।

५- सात निषेधित विशेष विनाशकारी पापों का वर्णन ।

६- जादूगर (तांत्रिक) काफ़िर है ।

७- उसे हत कर दिया जायेगा उसके लिए क्षमा नहीं ।

८- जब उमर के युग में मुसलमानों में जादूगर थे तो बाद के युग में क्यों न होंगे ।

---

[1] बुख़ारी २६१५, मुस्लिम, कबायेर ८९

[2] तिर्मिज़ी १४६०

[3] फ़तहुल बारी १०/३२६ तथा यह क्षीण है ।

[4] मुसन्नफ़ अब्दुर रज़्ज़ाक़ ८७५२, यह मुझे बुख़ारी में नहीं मिली ।

अध्याय

जादू के कुछ भेदों का वर्णन

अहमद ने कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन जाफ़र ने उसने औफ़ से उसने हैय्यान बिन अलआ से उन्होंने कुतन बिन कबीसा से वह अपने पिता कबीसा से रिवायत करते हैं कि उन्होंने नबी ﷺ को फ़रमाते सुना कि पक्षी उड़ाकर शगुन लेना तथा रेखा खींचना जादू में है।[1] औफ़ ने कहा कि अयाफ़ा पक्षी उड़ाना[2] तथा तर्क धरती पर लकीर खींचना है[3] तथा हसन बसरी ने कहा कि जिब्त शैतान की आवाज़ है[4] इस की सनद ख़ूब है। तथा अबू दाऊद[5] नसाई[6] एवं इब्ने हिब्बान[7] ने अपनी सही में इसका वही अंश रिवायत किया है जो आप ﷺ ने फ़रमाया है तथा इब्ने अब्बास رضي الله عنه ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जिसने ज्योतिष का कोई भाग प्राप्त किया उसने जादू का एक भाग प्राप्त किया जितना अधिक प्राप्त किया अधिक जादू सीखा इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया[8] और इसकी इसनाद सहीह है।

---

[1] हाकिम ५/६०

[2] हाकिम ३/४७७

[3] अबू दाऊद (अततिब्ब अध्याय,२३)

[4] इससे पहले देखिए।

[5] अबू दाऊद (अततिब्ब/१२३१)

[6] नसाई ७/११२

[7] इब्ने हिब्बान १४२६

[8] अबू दाऊद अततिब्ब/ब २२, यह सहीह है।

तथा नसाई[1] में अबू हुरैरा की हदीस है "जिसने गिरह लगाई फिर उसमें फूँका उसने जादू किया और जिसने जादू किया उसने शिर्क किया तथा जिसने कुछ लटकाया उसके भरोसे कर दिया गया और इब्ने मसऊद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मैं एज़ह न बताऊँ वह लोगों में चुगली की बात फैलाना है" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया[2] तथा बुख़ारी एवं मुस्लिम में इब्ने उमर ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि कुछ बयान (वक्तव्य) जादू है ।[3]

इसमें कुछ विषय हैं :

१- पक्षी उड़ाना रेखा खीचना तथा शगुन लेना जिब्त में से है ।

२- अयाफ़ा तर्क तथा तेयरा की व्याख्या ।

३- ज्योंतिष का ज्ञान एक प्रकार का जादू है ।

४- फूँक कर गिरह लगाना इसी में है ।

५- चुगली इसी में से है ।

६- कुछ भाषण इसी में से है ।

---

[1] नसाई ७/११२, मुस्लिम २६०६

[2] हाकिम ५/६०

[3] अबू दाऊद ५०११, हाकिम १/२६९ (सहीह)

अध्याय

काहिनों आदि के विषय में

मुस्लिम ने अपनी सहीह में नबी ﷺ की किसी पत्नी से रिवायत किया है कि जो किसी अर्राफ़ के पास जाकर किसी विषय में प्रश्न करे तथा उसे सत्य मान ले उसकी चालीस दिन की नमाज़ स्वीकार नहीं की जाती ।[1] तथा अबू हुरैरा ने नबी ﷺ से रिवायत किया है कि जो किसी काहिन के पास जाये तथा उसकी बात मान ले उसने मुहम्मद ﷺ पर जो कुछ उतारा गया उसका इंकार कर दिया इसे अबू दाऊद[2] तथा चारों[3] ने एवं हाकिम[4] ने रिवायत किया। हाकिम ने कहा कि दोनों की शर्त पर सहीह है ।अबू हुरैरा से रिवायत है कि जो अर्राफ़ अथवा काहिन के पास आये फिर उसकी बात सच मान ले उसने उसको नकार दिया जो मुहम्मद ﷺ पर उतारा गया तथा अबू याला ने उत्तम सनद से इब्ने मसऊद से उनका कथन इसी प्रकार रिवायत किया है तथा इमरान बिन हुसैन से रिवायत है कि वह हममें से नहीं जो शगून ले अथवा जिसके लिए शगून लिया जाये अथवा कहावत करे अथवा उसके लिये कहावत की जाये अथवा जादू करे या उसके लिए जादू किया जाये तथा जो काहिन के पास जाये तथा उसकी बात सच माने उसने उसे नकार दिया जो (क़ुरआन) मुहम्मद ﷺ पर उतारा गया इसे

---

[1] मुस्लिम २२३०

[2] अबू दाऊद ४२०३ इसी के समान।

[3] तिर्मिजी १३० इब्ने माजा ६३५, अबू दाऊद ४२०३ तथा मैंने इसे नसाई में नहीं पाया।

[4] मुस्तदरक हाकिम १/८

बज़्ज़ार ने उत्तम सनद से रिवायत किया[1] तथा तबरानी ने इब्ने अब्बास की हदीस से उत्तम सनद से रिवायत किया है किन्तु उसमें अन्त तक नहीं है। बगवी ने कहा कि अर्राफ़ वह है जो अनुमानों द्वारा छिपी बातों को बताने का दावा करे जैसे चोरी का और खोई वस्तु का पता बताये आदि तथा कहा गया है कि अर्राफ़ काहिन है तथा काहिन वह है जो भविष्य की बातें बताता है तथा कुछ ने कहा कि जो दिल की बातें बताता है तथा अबुल अब्बास इमाम इब्ने तैमिया ने कहा कि अर्राफ़, काहिन ज्योतिषयों तथा रम्माल आदि सभी को कहते हैं जो छिप्त बातों तथा भाग्य को इन विद्याओं द्वारा बताये तथा इब्ने अब्बास ने उन लोगों के बारे में जो अक्षरों के नम्बर से हिसाब निकालते थे तथा ज्योतिष सीखते थे कहा कि मेरे विचार से जो यह कार्य करता है अल्लाह के यहाँ उसका कोई हिस्सा नहीं है।

इसमें कई बातें हैं :

१- क़ुरआन पर ईमान तथा काहिन की पुष्टि एकत्र नहीं हो सकती।

२- इसका वर्णन कि ऐसा करना कुफ्र है।

३- जिसके लिए कहानत की जाये उसकी चर्चा।

४- तथा जिसके लिए शगून लिया जाये।

५- तथा जिसके लिए जादू किया जाये।

६- जो अक्षरों का नम्बर निकाले।

७- काहिन तथा अर्राफ़ के बीच अन्तर का वर्णन।

---

[1] मजमउज ज्वाऐद ५/११७

अध्याय

जादू उतारने के विषय में

जाबिर ﷺ कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से नुशरा (जादू उतारने) के सम्बंध में प्रश्न किया गया तो आपने फ़रमाया यह शैतान का काम है इसे अहमद ने[1] उत्तम सनद के साथ तथा अबू दाऊद[2] ने रिवायत किया तथा अहमद से इसके सम्बंध में प्रश्न किया गया तो फ़रमाया कि इब्ने मसऊद इसे अप्रिय मानते थे। बुख़ारी[3] में है कि कतादा ने इब्ने मुसैयिब से पूछा कि एक व्यक्ति पर जादू या ऐसा टोना हो कि अपनी पत्नी के पास न जा सकता हो तो उसका समाधान क्या किया जाये क्या नुशरा करे ? वह बोले कोई बात नहीं वे इससे सुधार करना चाहते हैं और जिससे लाभ हो उससे रोका नहीं गया है हसन बसरी ने कहा कि जादू को जादूगर ही उतारता है। इब्ने कैय्यिम ने फ़रमाया नुशरा जादू को उतारना है और यह दो प्रकार का होता है। जादू का जादू से उतारना और यही शैतान का काम है तथा हसन बसरी के कथन का यही अभिप्राय है अतः जो जादू उतारता है तथा जो उतरवाता है दोनों शैतान की पसन्द का काम करके उसकी समीपता प्राप्त करते हैं अतः शैतान अपना प्रभाव समाप्त कर देता है तथा दूसरी झाड़-फूँक तथा अल्लाह से पनाह माँगने, औषधियों तथा जायेज़ दुआवों के द्वारा जादू उतारना है जो वैध है।

---

[1] मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा ७/३८७, मुसनद अहमद ३/२९४

[2] अबू दाऊद ३८६८, तथा नुशरह एक प्रकार का मंत्र है जिससे उसका उपचार किया जाता है जिसे जिन्न लगने का अनुमान हो।

[3] किताबुत तिब्ब बाब हल युसतख्रजुस सेहर।

इसमें कई बातें हैं :

१- नुशरा से निषेध (रोकना)।

२- अवैध रूप से तथा उचित रूप से जादू उतारने में अंतर जिससे द्विधा का निवारण हो जाता है।

अध्याय

शगुन लेने के विषय में

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ﴾

सुन लो उनका अपशगुन तो वास्तव मैं अल्लाह के पास है किन्तु इनमें अधिकतम अज्ञान हैं। (सूरतुल आराफ़:१३१)

तथा अल्लाह तआला का वचन है :

﴿قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُسْرِفُونَ﴾

रसूलों ने कहा तुम्हारा अपशगुन तो तुम्हारे साथ लगा हुआ है (क्या वह इसलिए कहते हो) कि तुम्हें नसीहत की गई मूल बात यह है कि तुम अतिकारी लोग हो। (सूरह यासीन:१९)

अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया छूत नहीं लगती न अपशगुन है न उल्लू की बोली का कुप्रभाव होता है न सफ़र कोई वस्तु है। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)[1] तथा मुस्लिम ने अधिक कहा कि न नक्षत्र है न भूत प्रेत है।[2]

तथा बुख़ारी व मुस्लिम में अनस ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया छूत से रोग नहीं होता न अपशगुन है तथा शुभ शगुन मुझे प्रिय लगता लगता है लोगों ने कहा कि शुभ शगुन क्या है ? आपने

---

[1] बुख़ारी १९९३, मुस्लिम २२२२

[2] मुस्लिम २२२०

फ़रमाया, भला शब्द।

तथा अबू दाऊद ने सहीह सनद[1] से उक़बा बिन आमिर से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास अपशगुन की चर्चा की गई तो आपने फ़रमाया कि सबसे उत्तम शुभ शगुन है तथा मुसलमान को वापस नहीं करता और जब तुम में से कोई अप्रिय बात देखे तो उसे यह कहना चाहिए, हे अल्लाह भलाईयाँ तू ही लाता है तथा बुराईयाँ तू ही दूर करता है तेरी ही सहायता से कार्य शक्ति तथा शारीरिक बल है

इब्ने मसऊद से मरफूअन रिवायत है[2] कि अपशगुन शिर्क है,अपशगून शिर्क है तथा हममें से कोई ऐसा नहीं जिसे (सन्देह न होता हो) किन्तु अल्लाह पर भरोसा कर लेने से वह दूर हो जाता है इसको अबू दाऊद तथा तिर्मिज़ी ने रिवायत किया[3] तथा तिर्मिज़ी ने सहीह कहा है[4] तथा इसके अंत को इब्ने मसऊद का कथन बताया है, तथा अहमद की मुसनद में इब्ने उमर की यह हदीस है[5] कि जिसे अपशगुन ने उसकी ज़रूरत से फेर दिया उसने शिर्क किया लोगों ने कहा, इसका प्रायश्चित क्या है ?

आपने कहा यह कहना कि हे अल्लाह तेरी भलाई के सिवा कोई भलाई नहीं, तथा तेरे पक्षि के सिवा कोई पक्षि नहीं, न तेरे सिवा कोई पूज्य है तथा फ़ज़्ल बिन अब्बास की हदीस है कि वास्तव में अपशगुन वह है जो तुम्हें ले जाये अथवा फेर दे।

---

[1] अबू दाऊद ३९१९

[2] अबू दाऊद ३९१९

[3] तिर्मिज़ी १६१४

[4] हाकिम २/२२०

[5] हाकिम २/२१३

इसमें कई विषय हैं :

१- यह चेतावनी देना कि उनका अपशगून अल्लाह के पास है तथा यह कहना कि तुम्हारा अपशगून तुम्हारे साथ है।

२- छूत का इंकार।

३- अपशगून का इंकार।

४- उल्लू की बोली से अपशगून का इंकार।

५- सफ़र का इंकार।

६- शुभ शगुन (फ़ाल) इसमें नहीं अपितु प्रिय है।

७- शुभ शगुन की व्याख्या।

८- अप्रिय हेतु यदि दिलों में इसकी शंका आ जाये तो हानिकारक नहीं बल्कि अल्लाह अपने ऊपर भरोसा करने से इसे दूर कर देता है।

९- जिसके दिल में यह आये वह क्या करे ?

१०- इसका बयान कि अपशगुन शिर्क है।

११- बुरे अपशगुन की व्याख्या।

अध्याय

ज्योतिष के विषय में

सहीह बुख़ारी में क़तादा का यह कथन है कि अल्लाह ने तारे तीन बातों के लिए बनाये हैं। आकाश की शोभा, शैतानों की मार, दिशा तथा मार्ग का पता लगाने के चिन्ह के लिए। तो जिसने इन बातों के सिवा कुछ और समझा, ग़लती की तथा अपना परलोक का भाग बरबाद किया और उसका आडम्बर रचा जिसका उसे ज्ञान नहीं, तथा कतादा ने चाँद के रास्तों का सीखना अप्रिय बताया तथा इबन उयेना ने इसकी अनुमति न दी, हरब ने यह दोनों रिवायतें बयान की हैं। इमाम अहमद तथा इसहाक़ ने रास्तों को जानने की अनुमति दी और अबू मूसा कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "तीन व्यक्ति स्वर्ग में न जायेंगे, जो मदिरा में धुत रहता हो, जो जादू पर विश्वास करता हो तथा जो सम्बन्धियों से सम्बन्ध तोड़ता हो।" इसको अहमद[1] तथा इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में रिवायत किया।[2]

इसमें कई विषय हैं :

१- तारों को पैदा करने में तत्वदर्शिता (हिक्मत)।

२- जो इसके सिवा समझे उसका खंडन।

३- राशि चक्र के सीखने के विषय में मतभेद।

४- उसके लिए धमकी जो किसी प्रकार के जादू को सच समझे यद्यपि उसे असत्य मानता हो।

---

[1] मुसनद ४/३९९

[2] इब्ने हिब्बान १३८०

अध्याय

नक्षत्रों से वर्षा होने पर विश्वास

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ﴾

तथा तुम अपना हिस्सा यह बनाते हो कि तुम (क़ुरआन को) झुठलाते हो। (सूरतुल वाक़िआ:८२)

अबू मालिक अशअरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में अंधकार युग की चार बातें हैं जिन्हें वे नहीं छोड़ेंगे, वंश पर गर्व, गोत्र में व्यंग, तारों (नक्षत्रों) से वर्षा को मानना तथा मुर्दे पर विलाप। तथा फ़रमाया कि यदि विलाप करने वाली स्त्री ने अपनी मौत से पहले क्षमा नहीं माँगी तो उसे प्रलय के दिन तारकोल का कुर्ता तथा खुजली की ओढ़नी पहनाई जायेगी। मुस्लिम ने रिवायत[1] किया तथा बुख़ारी व मुस्लिम में ज़ैद बिन ख़ालिद ﷺ से रिवायत है। कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें भोर की नमाज़ हुदैबिया में रात में वर्षा के बाद पढ़ाई जब आपने सलाम फेरा तो लोगों की ओर मुख करके फ़रमाया : क्या जानते हो कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा, लोगों ने कहा अल्लाह तथा उसके रसूल को अधिक ज्ञान है आपने फ़रमाया अल्लाह ने कहा, मेरे कुछ बंदों ने मोमिन होकर भोर किया तथा कुछ काफ़िर होकर तो जिसने कहा कि अल्लाह की दया तथा कृपा से वर्षा हुई उसी ने मुझे माना किन्तु जिसने कहा कि इस नक्षत्र के कारण वर्षा हुई उसने मुझे नकार दिया एवं तारों को मान लिया।

---

[1] मुस्लिम ९३४

तथा बुख़ारी और मुस्लिम में इब्ने अब्बास से इसी अर्थ में हदीस आती है जिसमें यह है कि कुछ ने कहा कि यह नक्षत्र सच्चा है तो अल्लाह ने यह आयत उतारी।

﴿فَلا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ O وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ O إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ O فِي كِتَابٍ مَكْنُونٍ O لا يَمَسُّهُ إِلا الْمُطَهَّرُونَ O تَنزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ O أَفَبِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ O وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ﴾

मैं तारों की स्थितियों की शपथ लेता हूँ वस्तुत: यह महान शपथ है यदि तुम समझो, वास्तव में यह आदरणीय क़ुरआन है जिसे पवित्र फ़रिश्ते ही छूते हैं सर्वलोक के पालनहार का उतारा तुम इससे आलस्य करते हो तथा इसे झुठलाना अपना हिस्सा बनाते हो। (सूरतुल वाकिआ:७५-८२)

इसमें कई विषय हैं :

१- सूरह वाक़िआ की आयत की व्याख्या।

२- चार बातों की चर्चा जो अंधकार युग की हैं।

३- इनमें से कुछ में कुफ्र का होना।

४- कुछ कुफ्र इस्लाम से नहीं निकालता।

५- आपका फ़रमाना कि मेरे बंदों में से कुछ रहमत के उतरने के कारण मोमिन हो गये तथा कुछ काफ़िर हो गये।

६- इस स्थान पर ईमान को समझना।

७- इस स्थान पर कुफ्र को समझना।

८- आपके इस फ़रमान को समझना कि अमुक-अमुक नक्षत्र सच हुआ ।

९- ज्ञानी का विद्यार्थी के लिए प्रश्न निकालना जैसे आपने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा ?

१०- विलाप कारिता के लिए धमकी ।

अध्याय

अल्लाह तआला का कथन है:

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ﴾

कुछ लोग अल्लाह के सिवा (अन्यों को) शरीक (साझी) बनाते हैं जिनसे अल्लाह जैसा प्रेम किया करते हैं। (सूरतुल बक़रा:१६५)

तथा अल्लाह तआला का कथन है :

﴿قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ﴾

कह दो यदि तुम्हारे बाप, दादा तथा पुत्र एवं भाई तथा पत्नियाँ और परिवार तथा तुम्हारा धन जो कमाया है तथा तुम्हारा व्यापार जिसकी हानि का तुम भय रखते हो तथा वह भवन जिसमें तुम खुश रहते हो तुम्हें अल्लाह तथा उसके रसूल से प्रियवर हों तथा उसके मार्ग में जिहाद करने से तो अल्लाह का आदेश आने तक प्रतीक्षा करो तथा अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता। (सूरतुत तौबा:२४)

अनस ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: तुममें से कोई मोमिन नहीं होता जब तक मैं उसके पास उसकी संतान तथा उसकी माता-पिता एवं सब लोगों से प्रिय नहीं हो जाऊँ। (बुख़ारी, १५ मुस्लिम, ४४) तथा दोनों में अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जिसमें तीन बातें हों वह ईमान का स्वाद उनके कारण पालेगा, अल्लाह तथा रसूल से सबसे अधिक प्रेम करे, किसी से प्रेम

करे तो अल्लाह के लिए करे और कुफ़्र में फिर जाना इतना अप्रिय समझे जितना नरक में जाना अप्रिय समझता है।[1] तथा एक रिवायत में है कि कोई ईमान का स्वाद नहीं पाता यहाँ तक कि ... अन्तिम हदीस तक[2] तथा इब्ने अब्बास से रिवायत है कि जिसने अल्लाह के लिए प्रेम किया तथा अल्लाह के लिए क्रोध किया तथा अल्लाह के लिए मित्रता की और अल्लाह के लिए शत्रुता की वह अवश्य इसके कारण अल्लाह की मित्रता प्राप्त कर लेता है। कदापि कोई व्यक्ति ईमान का स्वाद नहीं पायेगा यद्यपि उसकी नमाज़ तथा रोज़ा अधिक हो जब तक ऐसा न हो। आज साधारणत: लोगों की दोस्ती दुनिया के लिए होती है और यह उन्हें कोई लाभ नहीं पहुँचायेगी इसे इब्ने जरीर ने रिवायत किया[3] और इब्ने अब्बास ने इस आयत में कि "उनके कारण कट जायेंगे" कारण का अर्थ प्रेम तथा मित्रता लिया है।[4]

इसमें कुछ बातें हैं :

१- सूरह बक़रा की आयत की तफ़सीर।

२- सूरह बराअत की आयत की तफ़सीर।

३- आप ﷺ के प्रेम का अपनी प्राण, परिवार तथा धन से अधिक होना।

४- ईमान का न होना ईमान से निकलने का प्रमाण नहीं।

५- ईमान का स्वाद कभी इंसान पाता है कभी नहीं।

६- दिल के चार कर्म जिनके बिना अल्लाह की मित्रता प्राप्त नहीं होती और कोई उनके बिना ईमान का स्वाद नहीं पाता।

---

[1] बुख़ारी १६, मुस्लिम ४३,

[2] बुख़ारी ५६९४, मुस्लिम ४३,

[3] तारीख़ अल-कामिल इब्ने अदी ३/३१६

[4] सूरतुल बक़र:१६६

७- सहाबी का समझना कि दुनिया की साधारण मित्रता दुनिया के लिए होती है।

८- आयत "तथा उनके हेतु कट जायेंगे" की व्याख्या।

९- कुछ मुशरिक (मिश्रणवादी) अल्लाह से घोर प्रेम करते हैं।

१०- उसे चेतावनी जिसे आठ चीज़ों का प्रेम अपने धर्म से अधिक होता है।

११- ऐसा साझी बनाना जिसका प्रेम अल्लाह से प्रेम के बराबर किया जाये महाशिर्क है।

अध्याय

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿إِنَّمَا ذَلِكُمْ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِي إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ﴾

वस्तुत: यह शैतान है जो अपने मित्रों से डरता है अत: यदि तुम मोमिन हो तो उनसे न डरो, मुझ ही से डरो। (सूरतु आले इमरान:१७५)

तथा अल्लाह तआला का कहना है :

﴿إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلا اللَّهَ﴾

अल्लाह की मस्जिदें वही आबाद करते हैं जो अल्लाह तथा आख़िरत पर ईमान लाये तथा नमाज़ की स्थापना की एवं ज़कात दी और मात्र अल्लाह से डरे। (सूरतुत तौबा:१८)

तथा उसका वचन है :

﴿وَمِنْ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ﴾

कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाये तथा जब अल्लाह के मार्ग में पीड़ा दी जाये तो लोगों की पीड़ा को अल्लाह की यातना समझ जाते हैं। (सूरतुल अन्कबूत:१०)

अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि विश्वास की दुर्बलता यह है कि तुम अल्लाह को अप्रसन्न करके लोगों को प्रसन्न करो तथा अल्लाह की

जीविका पर उनकी प्रशंसा करो तथा उस चीज़ पर उनकी बुराई करो जिसे अल्लाह ने तुम्हें नहीं दिया, अल्लाह की जीविका को किसी लोभी का लाभ नहीं खींच सकता[1] न किसी की घृणा उसे फेर सकती है।

आयेशा رضي الله عنها से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जो लोगों को अप्रसन्न करके अल्लाह की प्रसन्नता चाहता हो अल्लाह उससे प्रसन्न हो जाता है तथा लोगों को उससे प्रसन्न कर देता है तथा जो अल्लाह को अप्रसन्न करके लोगों को खुश करना चाहता है अल्लाह उससे खिन्न हो जाता है तथा लोगों को उससे खिन्न कर देता है। इसे इबने हिब्बान ने अपनी सहीह में रिवायत किया है।[2]

इसमें कई विषय हैं :

१- सूरह आले-इमरान की आयत की व्याख्या।

२- सूरह बराअत की आयत का भाष्य।

३- सूरह अन्कबूत की आयत की व्याख्या।

४- विश्वास क्षीण तथा दृढ़ होता है।

५- उसकी क्षीणता का चिन्ह तथा उसी में यह तीनों हैं।

६- मात्र अल्लाह से भय अनिवार्य कर्तव्य है।

७- उसके दण्ड का बयान जो इसे त्याग दे।

८- उसके पुण्य की चर्चा जो इसका पालन करे।

---

[1] अल हिलया ले अबी नुऐम ५/१०६ मुसनदुश शेहाब ११११६ क्षीण

[2] इब्ने हिब्बान १५४१

अध्याय

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ﴾

और अल्लाह ही पर भरोसा करो यदि तुम ईमान रखते हो। (सूरतुल मायेद:-२३)

और उसका कहना है :

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ﴾

ईमान वे रखते हैं जिनके पास अल्लाह को याद किया जाये तो उनका दिल काँप जाये। (सूरतुल अंफ़ाल:२)

तथा उसका कहना है कि :

﴿يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ﴾

हे नबी अल्लाह आपको बस है। (सूरतुल अंआम:६४)

तथा उसने फ़रमाया :

﴿وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ﴾

जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसको बस है।(सूरतुत तलाक़:३)

इब्ने अब्बास ने कहा कि "حَسْبُنَا الله ونعمَ الوكيل" "अल्लाह हमें बस है तथा वह अच्छा कार्यदक्ष है" यह इब्राहीम ﷺ ने कहा जिस समय आग में डाले गये तथा मुहम्मद ﷺ ने कहा जब लोगों ने कहा कि "लोग तुम्हारे लिए एकत्र हो गये हैं अत: उन से डरो तो उनका ईमान बढ़ गया" इसे बुख़ारी तथा नसाई ने रिवायत किया।

इसमें कई विषय हैं :

१- अल्लाह पर भरोसा करना कर्तव्य है।

२- भरोसा रखना ईमान के लिए आवश्यक है।

३- सूरह अंफ़ाल की आयत की व्याख्या।

४- उसकी अन्तिम आयत की व्याख्या।

५- सूरह तलाक़ की आयत की व्याख्या।

६- इस वाक्य का महत्व। आपत्ति के समय इब्राहीम तथा मुहम्मद ﷺ ने इसे कहा।

अध्याय

अल्लाह तआला का कथन है:

﴿أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ فَلا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ﴾

क्या वह अल्लाह के उपाय से निर्भय हो गये अल्लाह के दाव से क्षतिग्रस्त लोग ही निर्भय होते हैं। (सूरतुल आराफ़:९९)

तथा उसने कहा है:

﴿وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلا الضَّالُّونَ﴾

तथा तेरे पालनहार की दयालुता से गुमराह लोग ही निराश होते हैं। (सूरतुल हिज्र:५६)

इब्ने अब्बास ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ से महा पाप के विषय में प्रश्न किया गया तो आपने फ़रमाया, अल्लाह के साथ शिर्क करना तथा अल्लाह की दया से निराश होना तथा अल्लाह के दाव से निर्भय होना।[1]

इब्ने मसऊद ने कहा कि महापाप अल्लाह का साझी बनाना तथा उसकी उपाय से निर्भय होना और अल्लाह की दया से निराश होना है इसको अब्दुरज़्ज़ाक़ ने रिवायत किया।[2]

इसमें कई विषय हैं :

१- सूरह आराफ़ की आयत का वर्णन।

---

[1] मुसन्नफ़ अब्दुरज़्ज़ाक़ तथा मजमउज जवायेद १/१०४, तथा बज़्ज़ार एवं तबरानी से रिवायत किया और इसके रावी सब विश्वस्त हैं।

[2] मुसन्नफ़ अब्दुरज़्ज़ाक़ ५/६५

२- सूरह हिज्र की आयत की व्याख्या।

३- अल्लाह की उपाय से निर्भीकता पर कड़ी चेतावनी।

४- अल्लाह की दया से निराशा पर कड़ी धमकी।

अध्याय

इस बात का वर्णन कि अल्लाह पर ईमान में भाग्य संतोष भी है

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ﴾

तथा जो अल्लाह पर ईमान लायेगा वह उसके दिल को मार्गदर्शन देगा। (सूरतुत तग़ाबुन:११)

अलक़मा ने कहा, यह वह व्यक्ति है जिसे विपदा पहुँचे तो यह जाने कि वह अल्लाह की ओर से है तथा प्रसन्न हो एवं स्वीकार करे।[1]

सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : लोगों में दो बातें क़ुफ्र (अधर्म) की हैं। जाति में व्यंग करना तथा मरे हुए पर विलाप करना।[2]

तथा इब्ने मसऊद से बुख़ारी और मुस्लिम में रिवायत है कि वह हममें से नहीं है जो गालों पर मारे तथा कपड़े फाड़े तथा मूर्खता की पुकार लगाये।[3]

तथा अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, जब अल्लाह किसी बंदे के साथ भलाई चाहता है तो उसे शीघ्र ही संसार में दंड दे

---

[1] अद्दुर्रल मंसूर ८/१८३

[2] मुस्लिम, ६७

[3] बुख़ारी १२३२, मुस्लिम १०३

देता है और जब अपने बंदे के साथ बुराई चाहता है तो उसके पाप से रूक जाता है[1] ताकि क़ियामत के दिन उसका पूरा दंड दे। और नबी ﷺ ने फ़रमाया, बड़ा प्रतिफल बड़ी परीक्षा से होता है अल्लाह जब किसी क़ौम से प्रेम करता है तो उनको परीक्षा में डालता है तो जो प्रसन्न हो उसके लिए प्रसन्नता है तथा जो अप्रसन्न हो उसके लिए अप्रसन्नता है। इसको तिर्मिज़ी ने हसन कहा है।[2]

इसमें कुछ विषय हैं :

१- सूरह तग़ाबुन की आयत का वर्णन।

२- भाग्य पर ईमान लाना अल्लाह पर ईमान में से है।

३- वंश में व्यंग अर्धम है।

४- उसके सम्बन्ध में कड़ी धमकी जो गाल पर मारे और कपड़े फाड़े तथा मूर्खता के युग की पुकार करे।

५- अल्लाह के अपने बंदे के साथ भलाई करने का चिन्ह।

६- अल्लाह के बुराई चाहने का चिन्ह।

७- अल्लाह के बंदे से प्रेम करने का चिन्ह।

८- भाग्य से अप्रसन्नता का हराम होना।

९- विपदा पर प्रसन्न रहने का पुण्य।

---

[1] तिर्मिज़ी २३९६, हाकिम ४/६०८

[2] मिशकातुल मसाबीह १५६६

अध्याय

पाखण्ड (दिखावा) का वर्णन

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَى إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ﴾

हे नबी कह दो कि मैं तुम्हारे समान एक इंसान हूँ, मेरी ओर यह प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य मात्र एक है। (सूरतुल कहफ़:११०)

तथा अबू हुरैरा से मरफ़ूअ रिवायत है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मैं सभी साझियों से निस्पृह हूँ जो कोई ऐसा काम करे जिस में मेरे सिवा को मेरे साथ साझी बनाये तो मैं उसे उसके शिर्क के साथ छोड़ देता हूँ। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (मुस्लिम, २९८४)

अबू सईद से रिवायत है कि आपने फ़रमाया "क्या मैं तुम्हें वह बात न बताऊँ जिसका भय मुझे तुम पर काने दज्जाल से अधिक है -छिप्त शिर्क- कि एक व्यक्ति खड़ा हो तथा अपनी नमाज़ इसलिए अच्छी पढ़े कि कोई उसे देख रहा है, इसे अहमद ने रिवायत किया।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- आयते कहफ़ की व्याख्या।

२- पुण्य के कार्य के सम्बन्ध में यह निर्णय कि उसमें अल्लाह के सिवा के लिए कुछ मिल जाये तो वह अस्वीकार्य है।

---

[1] मुसनद, ३/३०

३- इसके कारण का वर्णन कि अल्लाह अत्यन्त निस्पृह है।

४- एक कारण यह है कि वह सभी शरीकों से उच्चतम है।

५- नबी ﷺ का अपने सहाबा (सहचरों) पर पाखन्ड से भय।

६- आपने इसका वर्णन यह किया कि जो व्यक्ति अल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ता हो किन्तु उसे इसलिए शोभनीय बनाता हो कि कोई उसे देख रहा है।

अध्याय

इंसान का अपने पुण्यकर्म से दुनिया चाहना शिर्क है

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لا يُبْخَسُونَ ○ أُوْلَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الآخِرَةِ إِلا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾

जो साँसारिक जीवन तथा उसकी शोभा चाहे हम उसके कर्मों का पूरा फल संसार ही में देते हैं तथा उसमें कुछ कमी नहीं की जाती, उन्ही के लिए आख़िरत में सिवा आग के कुछ नहीं तथा उसके सब साँसारिक कर्म व्यर्थ तथा ध्वस्त कर दिये जाते हैं। (सूरह हूद १५,१६)

तथा सहीह[1] में अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा "दीनार का भक्त नाश हो, दिरहम का भक्त नाश हो और चादर तथा शाल का दास नाश हो। यदि दिया गया तो प्रसन्न रहा तथा नहीं दिया गया तो खिन्न हो गया। वह नाश तथा औंधा हो जाये और उसे काँटा चुभे तो न निकाला जाये। उस बंदे के लिए धन्य हो जो अल्लाह के मार्ग में अपने घोड़े की लगाम थामे हुए है बाल बिखरे पाँव पर धूल। यह पहरे पर है तो पहरे पर यदि सेना के पिछले भाग में है तो उसी

[1] बुख़ारी, ६/६१

में है, यदि अवकाश चाहे तो न मिले और यदि सिफ़ारिश करे तो स्वीकार न की जाये।

इसमें कई विषय हैं :

१- इंसान का आख़िरत के कर्म से दुनिया चाहना।

२- सूरह हूद की आयत का भाष्य।

३- मुसलमान को दीनार तथा दिरहम एवं कपड़े का दास कहना।

४- इसका यह वर्णन करना कि यदि उसे दिया जाये तो प्रसन्न हो अन्यथा खिन्न हो जाये।

५- आप का शाप देना कि नाश हो तथा औंधा हो।

६- तथा आप का कहना कि उसे काँटा गड़े तो न निकले।

७- उपरोक्त मुजाहिदों की प्रशंसा जिसमें यह विशेषतायें हों।

अध्याय

यह विषय कि जिस ने विद्वानों तथा प्रशासकों की आज्ञापालन वैध को निषेध तथा निषेध को वैध करने में की उसने उसको प्रभू बना दिया

तथा इब्ने अब्बास ने फ़रमाया : समीप है कि तुम पर आकाश से पत्थर की वर्षा हो, मैं कहता हूँ कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा तथा तुम कहते हो कि अबू बक्र तथा उमर ने कहा ।[1]

और अहमद इब्ने हम्बल ने फ़रमाया कि मुझे उन लोगों पर आश्चर्य है जो इसनाद तथा उसका सहीह होना जानते हुए सुफ़ियान के विचार को मानते हैं ।

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾

> जो नबी की आज्ञा का विरोध करते हैं उन्हें फ़ितने अथवा किसी घोर यातना में पड़ने से भय रखना चाहिए । (सूरतुन नूर:६३)

तुम जानते हो फ़ितना क्या है ? शिर्क है, संभवत: नबी की किसी आज्ञा का खंडन करे जिससे उसका दिल कुल टेढ़ा हो जाये तथा वह नाश हो जाये ।

---

[1] जादुल मआद, २/१९५

अदि पुत्र हातिम ने कहा कि उसने नबी ﷺ को यह आयत पढ़ते सुना "उन्होंने अपने पादरियों तथा संतों को अल्लाह के सिवा पूज्य बना लिया" तो मैंने आपसे कहा, हम उनकी पूजा नहीं करते आपने कहा, जिस चीज़ को अल्लाह ने हलाल (उचित) किया है तुम उनके हराम (वर्जित) करने से हराम नहीं मानते तथा जिसे हराम किया है उनके हलाल करने से हलाल नहीं मानते । तो मैंने कहा, हाँ । आपने फ़रमाया यही उनकी पूजा है । इसे अहमद तथा तिर्मिज़ी ने रिवायत किया तथा इसे हसन कहा ।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- सूरह नूर की आयत की व्याख्या ।

२- सूरह बराअत की आयत की व्याख्या ।

३- इस इबादत (वंदना) के अर्थ का वर्णन जिसका अदी ने इंकार किया ।

४- इब्ने अब्बास का अबू बक्र तथा उमर से और अहमद का अबू सुफ़ियान से उदाहरण देना ।

५- स्थिति का यहाँ तक बदल जाना कि अधिकतर के पास संतों की पूजा की गणना उत्तम कर्म होने लगी तथा उसका नाम वलायत रख दिया गया तथा धर्मज्ञानियों की पूजा का नाम ज्ञान तथा धर्मबोध । फिर यहाँ तक स्थिति में परिवर्तन हुआ कि अल्लाह के सिवा उसकी पूजा की जाने लगी जो धर्माचारी नहीं तथा दूसरे अर्थ में मूर्खों को पूजा जाने लगा ।

---

[1] तिर्मिज़ी ३०९५ तथा हसन कहा, अद्दुर्रुल मंसूर ४/१२४

अध्याय

अल्लाह तआला का कहना है :

﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلالا بَعِيدًا﴾

क्या तूने उन्हें नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे उस पर ईमान लाये जो तुम पर उतारा गया तथा जो तुम से पहले उतारा गया वे ताग़ूत के पास फैसला ले जाना चाहते हैं हालाँकि उन्हें आदेश दिया गया है कि उसका इंकार करें तथा शैतान चाहता है कि उन्हें बहुत दूर बहका दे। (सूरतुन निसा:६०)

तथा उसका कथन है कि:

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لا تُفْسِدُوا فِي الأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ﴾

जब उनसे कहा जाता है कि धरती में बिगाड़ न करो तो वे कहते हैं कि हम ही तो सुधारक हैं। (सूरतुल बक़र:-११)

तथा उसका कथन है कि :

﴿وَلا تُفْسِدُوا فِي الأَرْضِ بَعْدَ إِصْلاحِهَا﴾

धरती में सुधार के पश्चात बिगाड़ न उत्पन्न करो। (सूरतुल आराफ़:५६)

तथा उसका कथन है कि :

﴿أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ﴾

क्या वे अंधकार युग का विधान चाहते हैं (सूरतुल मायेदा:५०)

अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी ﷺ ने कहा : "तुममें से कोई ईमानदार नहीं हो सकता जब तक उस की इच्छा मेरे आदेशों के अधीन न हो जाये ।"[1]

नववी ने कहा कि यह हदीस सहीह है ।

शाबी ने कहा कि एक मुनाफ़िक (द्वयवादी) तथा एक यहूदी के बीच झगड़ा था तो यहूदी ने कहा मुहम्मद से निर्णय करा ले आप घूस नहीं लेते तथा निर्णय में पक्षपात नहीं करते ।[2] तथा मुनाफ़िक ने कहा कि यहूद के पास चलें क्योंकि वह जानता था कि वह घूस लेते तथा पक्षपात करते हैं ।[3] और दोनों जुहैना के एक काहिन से निर्णय कराने पर सहमत हो गये उस पर (अन्त तक आयत उतरी)[4] तथा कहा गया कि दो व्यक्तियों के बारे में उतरी जिनमें विवाद खड़ा हुआ तो एक ने कहा कि नबी ﷺ के पास चलें तथा दूसरे ने कहा कि काब बिन अशरफ़ के पास चलें फिर उमर के पास गये तथा एक ने पूरी बात बतलाई तो जो रसूलुल्लाह ﷺ के पास नहीं जाना चाहा उससे पूछा कि क्या ऐसी बात है उसने कहा कि हाँ उमर ने उसे तलवार मारकर हत कर दिया ।[5]

इसमें कई विषय है :

१- सूरह निसा की आयत का भाष्य जिससे ताग़ूत को समझने में सहायता मिलती है ।

२- सूरह बक़रा की आयत की व्याख्या ।

---

[1] बुख़ारी १४, मुस्लिम ४४,

[2] देखिए नम्बर २१४

[3] अद्दुरूल मंसूर २५८२, तथा कहा गया कि यह सालबी के यहाँ है ।

[4] सूरतुन निसा:६०

[5] अद्दुरुल मंसूर २/५८२

३- सूरह आराफ़ की आयत की व्याख्या।

४- सूरह मायेदा की आयत की व्याख्या।

५- सत्य तथा मिथ्या ईमान का वर्णन।

६- मुनफ़िक के साथ उमर की कथा।

७- किसी को ईमान प्राप्त नहीं होता जब तक उसकी इच्छा रसूलुल्लाह के आदेशों के आधीन न हो।

अध्याय

जो अल्लाह के किसी नाम और विशेषणों का इंकार करता है

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَانِ﴾

और वे रहमान का इंकार करते हैं (आयत के अन्त तक)। (सूरतुर राद :३०)

और सहीह बुख़ारी में है कि अली ﷺ ने कहा कि लोगों को उनके ज्ञानानुसार बातें सुनाओ क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह तथा उसके रसूल को झुठलाया जाये।[1]

तथा अब्दुरज़्ज़ाक़ ने मामर से वह इब्ने ताऊस से वह अपने पिता से वह इब्ने अब्बास से रिवायत करते हैं कि उन्होंने एक व्यक्ति को देखा कि जब उसने नबी ﷺ की हदीस अल्लाह के गुणों के बारे में सुना तो काँप गया मानो उसने इंकार कर दिया, तो उन्होंने कहा इनके भय का क्या कारण है, दृढ़ आयतों से पसीजते हैं तथा अस्पष्ट आयतों पर हलाक होते हैं। (कथन समाप्त हो गया)[2]

तथा जब कुरैश ने रसूलुल्लाह ﷺ से रहमान (दयानिधि) की चर्चा करते सुना तो इसका इंकार किया इस पर अल्लाह ने आयत उतारी कि वे रहमान (दयानिधि) का इंकार करते हैं।[3]

---

[1] बुख़ारी किताबुद दावात ११/१३८

[2] मुसन्नफ़ अब्दुरज़्ज़ाक २०८९५

[3] सूरह रअद : ३०

इसमें कई विषय है :

१- (अल्लाह के) किसी नाम तथा गुण का इंकार करने से ईमान न रहना।

२- सूरह रअद की आयत का वर्णन।

३- ऐसी हदीस न बयान करना जिसे श्रोता न जानता है।

४- उस कारण की चर्चा जो अल्लाह तथा उसके रसूल को झुठलाने तक पहुँचाता हो यद्यपि वह इंकार का इरादा न रखता हो।

५- इब्ने अब्बास का उसके विषय में जिस ने कुछ चीज़ का इंकार किया यह कहना कि इसने उसका विनाश कर दिया।

अध्याय

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿يَعْرِفُونَ نِعْمَةَ اللَّهِ ثُمَّ يُنكِرُونَهَا﴾

वे अल्लाह के उपहार को जानते हैं फिर उसका इंकार करते हैं (सूरतुन नहल:८३)

मुजाहिद ने कहा कि इसका अर्थ यह है कि जो इंसान कहता है कि ये मेरा धन है मैं अपने बाप-दादा से इसका उत्तराधिकारी हुआ हूँ। तथा औन बिन अब्दुल्लाह ने कहा लोग कहते हैं कि यदि अमुक न होता तो ऐसा न होता। तथा इब्ने कुतैबा ने कहा लोग कहते हैं कि यह हमारे देवताओं की सिफ़ारिश से हुआ है। तथा अबुल अब्बास ने ज़ैद बिन ख़ालिद की हदीस के बाद कहा है जिसमें यह है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया मेरे कुछ बंदों ने मोमिन होकर तथा कुछ ने काफ़िर होकर भोर किया (अन्तिम हदीस तक) यह हदीस पहले गुज़र चुकी। तथा यह किताब और सुन्नत में बहुत है कि अल्लाह तआला उसकी भर्त्सना करता है जो उसके प्रदानों को उसके सिवा से सम्बन्धित करते तथा उसके साथ शिर्क करते हैं। कुछ सलफ़ ने कहा कि इन जैसे लोग कहते हैं कि वायु अच्छी थी तथा माझी दक्ष था तथा इसी जैसी बात जो अधिकतर लोग बोलते रहते हैं। (समाप्त हुआ)

इसमें कुछ बातें हैं :

१- अल्लाह के उपहार को पहचानने तथा इंकार करने की व्याख्या।

२- यह भी जानना चाहिए कि इस प्रकार की बात बहुत से लोग बोलते रहते हैं।

३- ऐसी बात का नाम उपहार का इंकार रखना।

४- दिल में दो प्रतिकूल बातों पर एकत्र होना।

अध्याय

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

और तुम जानते हुए अल्लाह का शरीक न बनाओ। (सूरतुल बक़र:-२२)

इब्ने अब्बास ﷺ ने इस आयत की व्याख्या में कहा, अल्लाह का साझी बनाना ऐसा शिर्क है जो अँधेरी रात में काले पत्थर पर चींटी की चाल से अधिक क्षिप्त है तथा वह यह है कि तुम कहो कि अल्लाह की कसम तथा तेरे जीवन की सौगन्ध अथवा अमुक की जीवन तथा मेरे जीवन की क़सम तथा तुम कहो कि यदि यह कुतिया न होती तो हमारे यहाँ चोर आ जाते तथा यदि घर में बत्तख़ न होती तो हमारे यहाँ चोर आ जाते तथा किसी का अपने साथी से यह कहना कि जो अल्लाह चाहे या तुम चाहो तथा किसी का यह कहना कि यदि अल्लाह तथा अमुक न होता। इसमें अमुक को न रखो यही शिर्क की बात है इसे अबू हातिम ने रिवायत किया।[1]

तथा उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जिसने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की शपथ ली उसने कुफ्र अथवा शिर्क किया, इस को तिर्मिज़ी ने रिवायत किया[2] तथा हसन कहा और हाकिम ने सहीह कहा।[3]

तथा इब्ने मसऊद ने कहा कि मैं अल्लाह की झूठी शपथ लूँ यह मुझे

---

[1] मजमउज़ ज़्वायेद १०/२२३

[2] तिर्मिज़ी १५३५, हाकिम २/६७

[3] मुस्तदक हाकिम २/६७

इससे अधिक प्रिय है कि मैं उसके अन्य की सच्ची शपथ लूँ ।[1]

तथा हुज़ैफ़ा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया यह न कहो कि जो अल्लाह चाहे तथा अमुक चाहे इसको अबू दाऊद ने सहीह सनद से रिवायत किया ।[2] तथा इब्राहीम नखई से आया है कि वह "मैं अल्लाह की तथा तुम्हारी शरण चाहता हूँ" को अप्रिय मानते हैं तथा यह कहना उचित मानते हैं कि फिर तुम्हारी । उन्होंने कहा कि लोग यह कहें कि यदि अल्लाह फिर अमुक न होता तथा यह न कहे कि यदि अल्लाह तथा अमुक न होता ।

इसमें कई विषय है :

१- शरीकों से सम्बन्धित सूरह बक़रा की आयत का वर्णन ।

२- सहाबा महाशिर्क से सम्बन्धित उतरी आयतों की व्याख्या ऐसे करते हैं कि उसमें सूक्ष्म शिर्क आ जाये ।

३- अल्लाह से अन्य की शपथ लेना शिर्क है ।

४- अल्लाह से अन्य की सच्ची शपथ अल्लाह की झूठी शपथ से बड़ा पाप है ।

५- वाव (अर्थात और) तथा सुम्मा (अर्थात फिर) शब्द के बीच अन्तर ।

---

[1] हिल्यतुल औलिया ७/२६७ तारीख़े अस्फहान २/१८१ इब्ने मसऊद का कथन ।

[2] अबू दाऊद ४९८०, हाकिम ५/७२

अध्याय

जो अल्लाह की कसम खाने पर संतुष्ट न हो

इब्ने उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा: अपने पिताओं की शपथ न लो जो अल्लाह की शपथ ले वह सच बोले तथा जिसके लिए अल्लाह की शपथ ली जाये वह मान ले तथा जो न माने वह अल्लाह को नहीं मानता। इसे इब्ने माजा ने हसन सनद से रिवायत किया है।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- बापों की शपथ लेने की निषेध।

२- जिसके लिए अल्लाह की शपथ ली लाये उसे उसके मान लेने का आदेश।

३- जो न माने उसके लिए चेतावनी।

[1] इब्ने माजा २१०१

अध्याय

जो अल्लाह चाहे तथा जो तुम चाहो बोलने का विषय

कुतैला ने कहा कि एक यहूदी नबी ﷺ के पास आया तथा कहा कि तुम शिर्क करते हो, तुम कहते हो जो अल्लाह चाहे तथा तुम चाहो तथा कहते हो काबा की शपथ। तो नबी ﷺ ने आदेश दिया कि जब शपथ लेना चाहो तो काबे के रब की शपथ कहो तथा कहो कि जो अल्लाह चाहे फिर तुम चाहो, इसे नसाई ने रिवायत किया तथा सहीह कहा ।[1] तथा उन्हीं से इब्ने अब्बास से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने कहा, जो अल्लाह चाहे तथा तुम चाहो तो आप ने कहा कि तुमने मुझे अल्लाह का शरीक बना दिया (कहो) जो अकेला चाहे [2] तथा इब्ने माजा में है[3] कि आईशा के माँ जाये भाई तुफ़ैल ने कहा कि मैंने सपना देखा कि मैं कुछ यहूदियों के पास गया और मैंने कहा तुम उत्तम लोग हो यदि तुम यह न कहते कि उजैर अल्लाह का पुत्र है उन्होंने कहा तुम उत्तम लोग हो यदि यह न कहो कि जो अल्लाह चाहे तथा मुहम्मद चाहे फिर कुछ ईसाईयों के पास गुज़रा और कहा, तुम श्रेष्ठ लोग हो यदि यह न कहते कि मसीह अल्लाह का पुत्र है सबने कहा कि तुम श्रेष्ठ समुदाय हो यदि यह न कहते कि जो अल्लाह चाहे तथा मुहम्मद चाहे और जब सवेरा हुआ तो कुछ लोगों को बताया फिर नबी ﷺ के पास आया तथा आपको उससे सूचित

---

[1] नसाई ऐमान तथा नुज़ूर अध्याय ९

[2] देखिए नसाई अध्याय ९

[3] देखिए अध्याय कफ़्फ़ारात

किया आपने फ़रमाया: क्या किसी को बताया है, मैंने कहा हाँ, उन्होंने कहा कि आपने अल्लाह की प्रशंसा की फिर कहा तुफ़ैल ने एक सपना देखा है कि जिससे तुममें से कुछ को सूचित किया। तथा तुम ऐसा वाक्य बोलते हो जिससे अमुक-अमुक बातों ने मुझे तुमको रोकने से रोक दिया था। अत: यह न कहो कि जो अल्लाह चाहे तथा मुहम्मद चाहे, किन्तु कहो कि जो अकेला अल्लाह चाहे।

इसमें कई विषय हैं :

१- यहूद का सूक्ष्म शिर्क से परिचित होना।

२- इंसान की समझ जब उसकी कोई आकाँक्षा हो।

३- आप ﷺ का फ़रमाना, क्या तुमने मुझे अल्लाह का साझी बना दिया फिर उसे क्या कहा जायेगा जिसने कहा हे रसूलों के अगुवा हे मेरे सहारा तुम अल्लाह का द्वार हो तथा मेरे आश्रय मेरी दुनिया तथा मेरी आख़िरत (परलोक) में हे अल्लाह के रसूल मेरा हाथ पकड़ ले मेरे लिए कठिनाई ने सरल नहीं किया किन्तु तुझे है।

४- यह महाशिर्क नहीं इसलिए कि आपने फ़रमाया, मुझे यह बात रोकती है।

५- शुभ सपना एक प्रकार की प्रकाशना है।

६- तथा कभी वह किसी धार्मिक विधि के निर्धारण का कारण होते हैं।

अध्याय

जिसने युग को अपशब्द कहा उसने अल्लाह को पीड़ा दी

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَقَالُوا مَا هِيَ إِلا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلا الدَّهْرُ﴾

और उन्होंने कहा यह हमारा साँसारिक जीवन है हम जीते तथा मरते हैं हमें तो युग ही नाश करता है। (सूरतुल जासिय:-२४)

तथा सहीह[1] में अबू हुरैरा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने कहा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मुझे आदम का पुत्र पीड़ा देता है वह युग को गाली देता है तथा युग मैं ही हूँ, रात्रि तथा दिन को बदलता हूँ तथा एक रिवायत में है: युग को गाली न दो इसलिए कि अल्लाह ही युग है।[2]

इसमें कुछ विषय हैं :

१- युग को गाली देने से रोकना।

२- इसे अल्लाह को पीड़ा देने का नाम देना।

३- आपके इस कथन पर विचार करना कि अल्लाह ही युग है।

४- कभी वह गाली देता है यद्यपि दिल से उसका इरादा नहीं करता।

---

[1] बुख़ारी ४५४९

[2] मुस्लिम २२४७

अध्याय

न्यायकारियों का न्यायकारी आदि नाम रखना

सहीह में अबू हुरैरा से नबी ﷺ से रिवायत है।[1] कि सब से पतित नाम अल्लाह के यहाँ राजाओं का राजा (महाराजा) है अल्लाह के सिवा कोई अधिपति नहीं। सुफ़ियान ने कहा कि जैसे शहंशाह नाम रखना कि एक रिवायत में है[2] कि वह सबसे अधिक अल्लाह के पास क्रोध का पात्र तथा क़ियामत के दिन सर्वाधिक पतित पुरूष है, पतित का अर्थ है अपमानित।

इसमें कई विषय हैं :

१- राजाओं का राजा (महाराजा) नाम रखने का निषेध।

२- जो भी नाम इस अर्थ में हो इसी के समान अवैध है, जैसाकि सुफ़ियान ने कहा।

३- इस जैसे विषय के संदर्भ में कड़ाई को समझना जबकि दिल ने उसके अर्थ का इरादा भी न किया हो।

४- यह भी समझना कि यह अल्लाह के लिए विशेष है।

---

[1] मुस्लिम अल-अदब २०, मुस्तद्रक हाकिम ४/२७४

[2] मुस्लिम अल-अदब २१, हाकिम ३/३१५

अल्लाह के नामों का आदर तथा उसके लिए नाम बदल देना

अबू शुरैह से रिवायत है कि उनकी कुन्नियत (उपाधि) अबू हकम थी, तो नबी ﷺ ने उनसे कहा कि अल्लाह हाकिम (शासक) है तथा शासन उसी का है। उन्होंने कहा कि मेरे जाति के लोग जब किसी वस्तु में मतभेद करते हैं तो मेरे पास आते हैं और मैं उनके बीच निर्णय कर देता हूँ तथा दोनों पक्ष खुश हो जाते हैं। आपने फ़रमाया : यह बहुत अच्छा है तो क्या तुम्हारा कोई पुत्र है ? मैंने कहा शुरैह तथा मुस्लिम और अब्दुल्लाह। आपने कहा, सबसे बड़ा कौन है ? मैंने कहा शुरैह, तो आपने फ़रमाया तुम अबू शुरैह हो। रिवायत किया इसको अबू दाऊद आदि ने।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- अल्लाह के विशेषणों तथा अल्लाह के नामों का आदर यद्यपि उसका अर्थ अभिप्रेत न हो।

२- इसके लिए नाम को बदल देना।

३- बड़े पुत्र के नाम पर कुन्नियत रखना।

---

[1] अबू दाऊद ४९५५, नसाई ८/२२६

अध्याय

जो किसी ऐसी वस्तु का उपहास उड़ाये जिस में अल्लाह की, क़ुरआन की और रसूल की बात हो

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ...الآية﴾

और यदि तुम उनसे पूछो तो कहेंगे कि हम यूँ ही आपस में हँस-बोल रहे थे (आयत के अंत तक)। (सूरतुत तौबा:६५)

इब्ने उमर, मुहम्मद बिन काब तथा ज़ैद बिन असलम और क़तादा से रिवायत है (इनकी हदीस आपस में मिल गई है) कि तबूक के युद्ध में एक व्यक्ति ने कहा कि हमने अपने ज्ञानियों जैसे किसी को नहीं देखा जो भारी-भारी पेट रखते तथा सबसे अधिक झूठ बोलते तथा लड़ाई के समय कायरता दिखाते हों। उसका अभिप्राय अल्लाह के रसूल तथा आप के साथी थे। तो औफ़ बिन मालिक ने उससे कहा तुम झूठे हो तथा मुनाफ़िक़ हो। मैं इसकी सूचना रसूलुल्लाह ﷺ को अवश्य दूँगा, तथा औफ़ जब आप के पास आपको सूचना देने पहुँचे तो देखा कि उनसे पहले प्रकाशना आ चुकी थी और वह व्यक्ति रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और आप अपनी ऊँटनी पर सवार हो चुके थे और कहा, अल्लाह के रसूल हम मन बहला रहे थे तथा सवारों की बातें कर रहे थे, ताकि रास्ते की थकान दूर हो जाये। इब्ने उमर ने फ़रमाया: मैं इस समय उसे देख रहा हूँ वह आपकी ऊँटनी की चमड़े का फ़ीता पकड़े हुए है तथा पत्थर उसके पाँव को रोक रहे हैं तथा वह कह रहा है हम उपहास तथा खेल कर रहे थे और आप उससे फ़रमा रहे

थे "क्या तुम अल्लाह तथा उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ परिहास कर रहे थे" (सूरतुत तौबा:६५) आप उसकी ओर नहीं देखते थे न इससे अधिक बोलते थे।

इसमें कई विषय हैं :

१- गंभीर बात यह है कि जो धर्म का उपहास करे वह काफ़िर (नास्तिक) है।

२- यही उसके संदर्भ में आयत का भाष्य है जिसका कर्म ऐसा हो, वह कोई भी हो।

३- चुग़लख़ोरी तथा अल्लाह एवं उसके रसूल की शुभचिन्ता के बीच अन्तर।

४- उस क्षमा के बीच जिससे अल्लाह प्रेम रखता है तथा उस कड़ाई में जो अल्लाह के शत्रुओं पर होनी चाहिए अन्तर।

५- कुछ तर्क स्वीकार नहीं किया जाता।

अध्याय

अल्लाह के कथन में आया है :

﴿وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي الآية﴾

और यदि हम दुख के बाद उसे अपनी दया चखाते हैं तो कहता है कि यह मेरे लिए है। (सूरह फुस्सेलत:५०)

मुजाहिद ने कहा कि इसका (दया का) कारण मेरा परिश्रम तथा कर्म है तथा मैं इसके योग्य हूँ।

तथा इब्ने अब्बास ने कहा इसका अर्थ यह है कि कहता है कि मेरे पास से हैं।

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَى عِلْمٍ عِندِي﴾

उसने (क़ारून ने) कहा कि मुझे अपने ज्ञान से मिला है। (सूरतुल क़सस:७८)

क़तादा ने कहा मेरी कमाई की विधियों को जानने के कारण मुझे मिला है, तथा दूसरों ने कहा कि यह अल्लाह के यह जानने के कारण मुझे मिला है कि मैं इसके योग्य हूँ, तथा मुजाहिद के इस कथन का अभिप्राय भी यही है कि यह मुझे मेरी मर्यादा के कारण मिला है।

अबू हुरैरा से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते सुना कि बनी इस्राईल में तीन आदमी थे, एक कोढ़ी, एक गंजा और एक अंधा। तो अल्लाह ने उनकी परीक्षा लेना चाहा तो उनके पास एक फ़रिश्ता भेजा और वह कोढ़ी के पास आया और कहा, तुम्हें कौन सी चीज़ प्रिय है ? उसने कहा सुन्दर रंग तथा सुन्दर चमड़ी। तथा मुझसे यह रोग दूर हो जाये जिसके कारण लोग मुझसे घिन कर रहे हैं।

आपने कहा कि फ़रिश्ते ने उस पर हाथ फेर दिया तथा उसका रंग तथा चमड़ी सुन्दर हो गई। फ़रिश्ते ने कहा तुझे कौन सा माल प्रिय है ? उसने कहा ऊँट अथवा गाय। (रावी इसहाक़ ने संदेह किया) तथा उसे एक दस महीने की गाभिन ऊँटनी दी गई। फ़रिश्ते ने कहा अल्लाह इसमें तुम्हें अधिकता दे। आप ने कहा, फिर गंजे के पास आया तथा कहा तुम्हें क्या प्रिय है ? उसने कहा सुन्दर बाल, तथा मुझसे यह रोग दूर हो जाये जिसके कारण लोग मुझसे घिन कर रहे हैं। तथा उस पर हाथ फेर दिया और उसका रोग दूर हो गया तथा उसे सुन्दर बाल दे दिये गये। फिर कहा तुम कौन सा माल पसन्द करते हो ? उसने कहा गाय, तो एक गाभिन गाय दे दी गयी, फ़रिश्ते ने कहा अल्लाह तुम्हें इसमें अधिकता दे। फिर अंधे के पास आया और कहा, तुम्हें सर्वाधिक प्रिय क्या है ? कहा मुझे अल्लाह मेरी आँख दे दे और मैं उससे लोगों को देखने लगूँ। फ़रिश्ता ने उस पर हाथ फेरा तथा अल्लाह ने उसे आँख दे दी। फ़रिश्ते ने कहा तुम्हें कौन सा माल अधिक प्रिय है ? उसने कहा बकरी, उसे एक गाभिन बकरी दे दी गयी तो इसने बच्चा दिया तथा उसने और इसके एक वादी ऊँट का हो गया तथा उसके एक वन बराबर गाय तथा एक के वादी भर बकरियाँ हो गईं। आपने फ़रमाया : फिर कोढ़ी के पास उसके रूप तथा वेष-भूसा में आया और कहा मैं एक ग़रीब हूँ, मेरी यात्रा का साधन समाप्त हो गया मौं आज अल्लाह फिर तुम्हारी सहायता के बिना अपने नगर नहीं पहुँच सकता, मैं तुमसे उस अल्लाह को माध्यम बनाकर माँग करता हूँ जिसने तुम्हें सुन्दर रंग तथा सुन्दर चमड़ी तथा माल दिया कि मुझे एक ऊँट दे दो जिस पर यात्रा कर सकूँ। उसने कहा मुझे बहुत सी आवश्यकतायें हैं, फ़रिश्ते ने कहा लगता है कि मैं तुम्हें पहचानता हूँ, क्या तुम कोढ़ी नहीं थे ? तुम से लोग घिन करते थे, तुम निर्धन थे तो अल्लाह ने तुम्हें धन दिया, उसने कहा मैं अपने वंश से इस धन का उत्तराधिकारी बना हूँ। फ़रिश्ते ने कहा यदि तू झूठ बोल रहा हो तो अल्लाह तुझे तेरी दशा पर कर दे। फिर गंजे के पास उसके रूप में आया तथा उससे वही

कहा जो उस कोढ़ी से कहा था, उसने वैसा ही उत्तर दिया जो उसने दिया तो फ़रिश्ते ने कहा यदि तू झूठा है तो अल्लाह तुम्हें अपनी प्रथम दशा पर कर दे। आप ने फ़रमाया: फिर अंधे के पास उसके रूप में गया और कहा कि ग़रीब यात्री हूँ, मेरी यात्रा का साधन समाप्त हो गये। आज अपने नगर तक पहुँचने के लिए मेरा साधन मात्र अल्लाह है फिर तुम हो, मैं तुमसे उस अल्लाह को माध्यम बना कर जिसने तुमको पुन: आँखें दी हैं निवेदन करता हूँ कि मुझे एक बकरी दे दो जिससे मैं अपनी यात्रा पूरी कर लूँ उसने कहा कि मैं अंधा था तो अल्लाह ने मुझे फिर से मेरी आँखें दी तो जो चाहो ले लो, जो चाहो छोड़ दो। अल्लाह की सौगन्ध! आज मैं किसी चीज़ से जो तुम अल्लाह के लिए लोगे नहीं रोकूँगा, फ़रिश्ते ने कहा तुम अपना धन रखो तुमको आज़माया गया है तो अल्लाह तुमसे खुश हो गया तथा तुम्हारे दोनों साथी से अप्रसन्न हो गया। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- आयत का वर्णन।

२- لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي का क्या अर्थ है।

३- أُوتِيتُهُ عَلَى عِلْمٍ عِندِي का क्या अर्थ है।

४- इस विचित्र वाक्य में बड़ी शिक्षायें हैं।

---

[1] बुख़ारी ४/२०८, मुस्लिम अज्ज़ुहद १०, हाकिम २/१४२

अध्याय

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا.. الآية﴾

जब उनको स्वस्थ शिशु दिया तो उन्होंने उसमें अल्लाह का साझी बनाया (अन्तिम आयत तक) | (सूरह आराफ़:१९०)

इब्ने हज़्म ने कहा कि मुसलमानों की सहमति है कि जिस नाम में अल्लाह के सिवा की दासिता हो वह वर्जित है, जैसे उमर दास काबा दास तथा जो इसके समान हो | मुत्तलिब का दास अब्दुल मुत्तलिब इससे अलग हैं |

इब्ने अब्बास ने आयत "जब आदम तथा हव्वा मिले तो उसे गर्भ हुआ" का वर्णन यह किया है कि दोनों के पास इब्लीस आया, कहा मैं तुम्हारा वही साथी हूँ जिसने तुम दोनों को स्वर्ग से निकलवाया | मेरी बात मानों अन्यथा उसके सिर पर हिरन के दो सींग बना दूँगा और वह तुम्हारे पेट से निकलेगा तो उसे फाड़ डालेगा और मैं अवश्य ऐसा करूँगा वह दोनों को डरा रहा था उस का नाम अब्दुल हारिस (हारिस दास) रखना और दोनों उसकी बात न माने और वह मुर्दा पैदा हुआ, फिर गर्भ हुआ और फिर आकर ऐसी ही बात किया और दोनों ने इंकार किया, फिर मरा शिशु पैदा हुआ | फिर गर्भ धारण किया तो उन्हें याद[1] दिलाया तथा दोनों को शिशु को प्रेम हुआ तथा उसका नाम अब्दुल हारिस रख दिया | यही جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ का अर्थ है, इसे इब्ने हातिम ने रिवायत किया तथा क़तादा से उनकी सहीह सनद से रिवायत है कि उन्होंने अल्लाह के अनुपालन में साझी बनाया, उपासना में नहीं, तथा अल्लाह के कथन لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا में मुजाहिद

[1] सूरह आराफ़:१९०

से रिवायत है, उन्होंने कहा कि दोनों को भय हुआ कि शिशु मनुष्य नहीं होगा इसी प्रकार का अर्थ हसन तथा सईद आदि से भी आया है।[1]

इसमें कुछ विषय है :

१- प्रत्येक वह नाम अवैध है जिसमें अल्लाह के सिवा किसी की दासिता का अर्थ हो।

२- आयत का भाष्य।

३- यह शिर्क (मिश्रण) मात्र नाम रखने में है इसका यथार्थ अभिप्रेत नहीं।

४- अल्लाह का किसी को स्वस्थ पुत्री प्रदान करना उसकी अनुकम्पा है।

५- सलफ़ का अनुपालन में शिर्क तथा पूजा में शिर्क (मिश्रण) के बीच अन्तर करना।

---

[1] सूरह आराफ़:१८९

अध्याय

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿وَلِلَّهِ الأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ﴾

तथा अल्लाह के शुभ नाम हैं उसको उन्हीं से पुकारो तथा उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों को टेढ़ा करते हैं। (सूरह आराफ़ : १८०)

इब्ने अबू हातिम ने इब्ने अब्बास से रिवायत किया है कि يُلْحِدُونَ का अर्थ है يُشرِكُون - शिर्क करना।

तथा उन्हीं से रिवायत है कि उन्होंने इलाहा से लात बनाया तथा अज़ीज़ से उज़्ज़ा बनाया। (ये उनकी मूर्तियों के नाम हैं) तथा आमश ने कहा कि يُلْحِدُونَ का अर्थ यह है कि अल्लाह के ऐसे नाम बताते हैं जो उसके नहीं हैं।

इसमें कुछ विषय हैं :

१- अल्लाह के बहुत से नाम हैं।

२- वे सभी शुभ हैं।

३- उनके द्वारा उसे पुकारा जाये।

४- जो मूर्ख तथा नास्तिक उसका इंकार करे उसकी बात न मानी जाये।

५- अल्लाह के नामो में इल्हाद क्या है ?

अध्याय

अल्लाह पर सलाम कहने का निषेध

सही में इब्ने मसऊद ﷺ से रिवायत है उन्होंने कहा जब हम नबी ﷺ के साथ नमाज़ में होते थे तो हम कहते थे अल्लाह पर उसके बंदों की ओर से सलाम हो अमुक पर तथा अमुक पर सलाम हो तो नबी ﷺ ने कहा अल्लाह पर सलाम हो न कहो क्योंकि अल्लाह स्वयं सलाम है।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- सलाम का वर्णन।

२- सलाम एक दुआ है।

३- वह अल्लाह के लिए उचित नहीं।

४- इसका कारण

५- उन्हें अल्लाह के लिए उचित अभिवादन की शिक्षा दी।

---

[1] बुख़ारी ८००.

अध्याय

हे अल्लाह यदि तू चाहे तो क्षमा कर दे कहना

सहीह में अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, कोई यह न कहे कि हे अल्लाह यदि तू चाहे तो मुझे क्षमा कर दे, हे अल्लाह यदि तू चाहे तो मुझ पर दया कर, चाहिए कि पूरे संकल्प से माँग करे क्योंकि अल्लाह को कोई विवश नहीं कर सकता।[1]

तथा मुस्लिम की रिवायत है कि और बड़ी से बड़ी अभिलाषा करे क्योंकि अल्लाह के लिए कोई चीज़ देने के लिए बड़ी नहीं है।

इसमें कई विषय हैं :

१- दुआ में अनिबन्ध से निषेध।

२- इसके कारण का वर्णन।

३- आपका फ़रमान कि पूर्ण सकंल्प से माँगे।

४- बड़ी चीज़ की माँग की जाये।

५- इसका कारण कि कोई चीज़ उसके लिए बड़ी नहीं।

---

[1] बुख़ारी ९/१७१, हाकिम २/३१८

अध्याय

दास तथा दासी नहीं कहना चाहिए

सहीह में अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : तुम में से कोई यह न कहे कि अपने रब (पोषक) को खाना खिला दो तथा अपने (पोषक) को वुज़ू करा दो उसे मेरे स्वामी तथा रक्षक कहना चाहिए तथा कोई मेरा दास तथा दासी न कहना चाहिए कि मेरे युवक तथा मेरे सेवक कहे ।[1]

इसमें कई बातें हैं :

१- मेरे दास तथा मेरी दासी कहने से रोकना ।

२- दास अपने स्वामी को मेरे रब (प्रभू) न कहे, तथा उससे यह न कहा जाये कि अपने प्रभू को भोजन करा दो ।

३- स्वामी को शिक्षा कि वह मेरे युवक तथा युवती और सेवक कहे।

४- दूसरे को यह शिक्षा की, मेरे स्वामी तथा संरक्षक कहे ।

५- मूल अभिप्राय पर सावधान करना अर्थात शब्दों में भी तौहीद पर ध्यान रखा जाये ।

---

[1] बुख़ारी २५५२

अध्याय

जो अल्लाह के नाम पर माँगे उसे फेरा न जाये

इब्ने उमर رضي الله عنهما से रिवायत है, कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जो अल्लाह के नाम से पनाह (शरण) माँगे उसे पनाह दो तथा जो अल्लाह के नाम पर माँगे उसे दो तथा जो तुम्हें न्यौता दे उसे स्वीकार करो तथा जो तुम्हारे साथ उपकार करे उसका बदला दो यदि तुम बदला देने के लिए कुछ न पाओ तो उसको दुआ दो यहाँ तक कि तुम समझो कि उसका बदला दे दिया। इसे अबू दाऊद तथा नसाई ने रिवायत किया।[1]

इसमें कई बातें हैं :

१- जो अल्लाह के नाम पर पनाह माँगे उसे पनाह दो।

२- उसे देना जो अल्लाह के नाम पर माँगे।

३- न्यौता स्वीकार करना।

४- उपकार का बदला देना।

५- जो बदला न दे सकता हो वह दुआ दे।

६- आपका फ़रमाना कि इतनी दुआ देना कि तुम समझ जाओ कि बदला हो गया।

---

[1] अबू दाऊद अज़्ज़कात बाब ३९ तारीखे बग़दाद ४/२५९, नसाई, बाबुज़्ज़कात ७०

अध्याय

अल्लाह को प्रसन्न करके स्वर्ग की माँग करनी चाहिए

जाबिर ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अल्लाह को प्रसन्न करके मात्र स्वर्ग की मार्ग करनी चाहिए इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया ।[1]

इसमें कई बातें हैं :

१- इस बात से रोकना कि अल्लाह की प्रसन्नता से अन्तिम लक्ष्य (स्वर्ग) के अतिरिक्त न माँगी जाये ।

२- अल्लाह के लिए वजह का होना जिसका अर्थ मुख है ।

---

[1] अबू दाऊद १६७१

अध्याय

"लौ" (यदि) के विषय में

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنْ الأَمْرِ شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هَاهُنَا﴾

वे कहते हैं कि यदि हमें कुछ अधिकार होता तो यहाँ मारे नहीं जाते। (सूरह आले-इमरान:१५४)

तथा उसने फ़रमाया :

﴿الَّذِينَ قَالُوا لإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا﴾

जिन्होंने अपने भाईयों से कहा तथा स्वयं बैठे रहे कि यदि वे हमारी मानते तो हत नहीं किये जाते। (आले-इमरान:१६८)

सहीह[1] में अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया उसकी लालसा करो जो तुम्हें लाभ दे तथा अल्लाह से सहायता माँगो तथा विवश न बनो तथा यदि तुम को कोई दुख पहुँचे तो यह न कहो कि यदि मैं ऐसे किये होता तो ऐसे-ऐसे होता। लेकिन कहो कि अल्लाह ने भाग्य बनाया तथा जो चाहा किया, क्योंकि लौ (यदि) शैतान के कर्म का द्वार खोलता है।

इसमें कई विषय हैं :

१- आले इमरान की दोनों आयतों का वर्णन।

---

[1] मुस्लिम किताब अलकद्र ३४

२- जब कोई दुख पहुँचे तो (यदि) कहने का खुला निषेध।

३- इसका यह कारण बताना कि इससे शैतान के कर्म का द्वार खुलता है।

४- अच्छी बात बोलने का निर्देश।

५- लाभदायक की लालसा का आदेश अल्लाह से सहायता माँगने के साथ।

६- इसके विपरीत विवशता से रोकना।

<u>अध्याय</u>

वायु को गाली देने से निषेध

उबैय बिन काब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा : वायु को गाली न दो तथा जब ऐसी बात देखो जो तुमको बुरी लगे तो कहो, हे अल्लाह हम इस वायु की भलाई तथा जो उसके भीतर भलाई तथा जिस भलाई का उसे आदेश दिया गया है, उसकी तुझ से माँग करते हैं और तुझसे इस वायु की बुराई तथा जो इसके भीतर है उसकी बुराई से तथा उसे जिसका आदेश दिया गया है उसकी बुराई से तेरी पनाह चाहते हैं। इसको तिर्मिज़ी ने सही कहा है।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- वायु को गाली देने से निषेध।

२- लाभदायक बात बोलने का निर्देश जब इंसान ऐसी बात देखे जो बुरी लगे।

३- यह बताना कि वह आदेशाधीन है।

४- उसे कभी भलाई तथा कभी बुराई का आदेश दिया जाता है।

---

[1] तिर्मिज़ी २२५२, हाकिम ५/१२३

अध्याय

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الأَمْـرِ مِـنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ﴾

वह अल्लाह के बारे में अंधकार युग की धारणा के समान मिथ्या धारणा रखते हैं, वह कहते हैं कि कह दो कि इसका पूरा अधिकार अल्लाह को है | (सूरह आले इमरान:१५४)

तथा उसका कथन है :

﴿الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ﴾

जो अल्लाह के सम्बन्ध में बुरा अनुमान रखते थे बुराई के फेरे में स्वयं आ गये | (सूरतुल फ़त्ह:६)

इब्ने कैय्यिम ने कहा, मिथ्या धारणा का वर्णन यह है कि वह सोचने लगे कि अल्लाह तआला अपने रसूल की सहायता नहीं करेगा तथा उसका मामला शीघ्र ही मंद हो जायेगा तथा जो आपदा उन्हें पहुँची अल्लाह के भाग्य तथा हिक्मत से न थी तथा यह कि वे अल्लाह की हिक्मत तथा सामर्थ्य का तथा इस बात का इंकार करते हैं कि उसके रसूल का लक्ष्य पूरा होगा और यह धर्म सभी धर्मों पर प्रभुत्वशाली होगा | यही बुरा अनुमान है जो मुनाफ़िक़ तथा मुशरिक (मिश्रणवादी) लगाते थे जिसकी चर्चा सूरह अल-फ़त्ह में है तथा यह बुरा अनुमान इस कारण है कि अल्लाह तआला तथा उसकी हिक्मत एवं उसके सत्य वचन के योग्य नहीं, अत: जो यह धारणा रखे कि अल्लाह सदा के लिए असत्य को सत्य पर प्रभुत्व देगा जिससे सत्य मंद हो जायेगा तथा इंकार करे कि जो हुआ उसके निर्णय तथा अनुमान से नहीं हुआ

अथवा इंकार करे कि उसका अनुमान असीम हिक्मत से नहीं जिस पर प्रशंसा का पात्र हो बल्कि गुमान करे कि यह मात्र उसकी चाहत से हुआ तो यही काफ़िरों के लिए नरक का दण्ड है।

तथा अधिकाँश लोग अल्लाह के बारे में उस बात में जिसका सम्बन्ध विशेष रूप से उनसे तथा जो दूसरों के साथ करता है उससे होता है बुरा अनुमान करते हैं तथा इससे वही सुरक्षित रहता है जो अल्लाह तथा उसके नामों एवं गुणों तथा उसकी हिक्मत एवं प्रशंसा के कारणों को पहचानता हो। अत: अपने शुभचिन्तक को चाहिए कि इस पर ध्यान दे तथा अल्लाह से क्षमा याचना करे तथा अपने अल्लाह से अपनी बुरी धारणा की क्षमा माँगे और यदि तुम खोज करो तो देखोगे कि लोगों में तक़दीर (भाग्य) के सम्बन्ध में कड़ाई तथा उसकी धिक्कार मिलेगी कि यह ऐसे-ऐसे होना चाहिए था तो कुछ कम समझते हैं तथा कुछ अधिक तथा स्वयं की भी खोज करो कि क्या तुम सुरक्षित हो यदि इससे बचे हो तो बड़ी बात से बचे हो अन्यथा मैं तुमको सुरक्षित नहीं समझता।

इसमें कई बातें हैं :

१- आले इमरान की आयत की व्याख्या।

२- अल-फ़त्ह की आयत की व्याख्या।

३- यह बताना कि इसकी अंगणित प्रकार हैं।

४- इससे वही सुरक्षित रह सकता है जो अल्लाह के नामों तथा गुणों को एवं स्वयं को पहचाने।

अध्याय

भाग्य के इंकार का विषय

इब्ने उमर ने कहा, उसकी क़सम जिसके हाथ में इब्ने उमर का प्राण है यदि किसी के पास ओहद (पर्वत) के बराबर सोना हो फिर उसे अल्लाह के मार्ग में ख़र्च कर दे तो अल्लाह उसे स्वीकार न करेगा जब तक भाग्य पर ईमान (विश्वास) न रखे। फिर नबी ﷺ का कथन प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया, ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर ईमान रखो तथा उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, अन्त दिवस (आख़िरत) पर और अच्छे बुरे भाग्य पर ईमान लाओ, इसे मुस्लिम ने रिवायत किया।[1]

तथा उबादा बिन सामित से रिवायत है, उन्होंने कहा हे मेरे पुत्र तुम ईमान का स्वाद न पाओगे जब तक यह न जानो कि जो दुख तुम्हें पहुँचा है वह तुम से चूक नहीं सकता था तथा जो तुम से चूक गया वह तुम्हें पहुँच ही नहीं सकता था। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते सुना कि सबसे पहले अल्लाह ने क़लम पैदा किया था उससे कहा कि लिख, उसने कहा, मेरे पालनहार ! क्या लिखूँ ? कहा कि प्रलय होने तक प्रत्येक वस्तु का भाग्य लिख, हे मेरे पुत्र मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते सुना कि जो इसके सिवा पर मरेगा वह मुझसे नहीं।[2] तथा अहमद की एक रिवायत में है[3] सर्वप्रथम अल्लाह ने क़लम पैदा किया और उससे कहा लिख ? तो उसने उसी क्षण जो प्रलय तक होना है

---

[1] मुस्लिम ८

[2] अबू दाऊद ४७००

[3] हाकिम ५/३१७

लिख दिया। तथा इब्ने वहब की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो अच्छे बुरे भाग्य पर ईमान न लाये अल्लाह उसे नरक की अग्नि में जालयेगा। तथा मुसनद[1] एवं सुनन[2] में इब्ने दैलमी से रिवायत है, कहा कि मैंउबैय बिन काब के पास आया और कहा मेरे मन में तक़दीर (भाग्य) के सम्बन्ध में कुछ संदेह है आप मुझे कोई हदीस सुनायें जिससे मेरे दिल का संदेह संभवत: दूर हो जाये तो उन्होंने कहा यदि तुम ओहद (पर्वत) के बराबर सोना दान करो तो अल्लाह तुमसे उसे स्वीकार नहीं करेगा जब तक कि तक़दीर (भाग्य) पर ईमान नहीं लाओगे और यह नहीं जानोगे कि जो दुख तुम्हें पहुँचा तुमसे चूक नहीं सकता था तथा जो चुक गया तुम्हें पहुँच नहीं सकता था तथा यदि तुम इस के सिवा पर मर गये तो नरक के भागियों में होगे। उन्होंने कहा फिर मैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद तथा हुज़ैफ़ा बिन यमान और ज़ैद बिन साबित के पास गया तो सबने मुझसे नबी ﷺ की ऐसी हदीस बयान की, यह हदीस सहीह है इसे हाकिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है।

इसमें कुछ विषय है :

१- भाग्य पर ईमान के आवश्यक होने का वर्णन।

२- उस पर ईमान लाने की स्थिति का वर्णन।

३- जो उस पर ईमान न लाये उसके पुण्य कर्म का अकारथ होना।

४- यह बताना कि कोई ईमान का स्वाद नहीं पाता जब तक भाग्य पर ईमान न लाये।

५- जिसे अल्लाह ने सर्वप्रथम पैदा किया।

६- उसने उस समय से प्रलय तक के भाग्य लिख दिये।

---

[1] तिर्मिज़ी क़द्र १०, नसाई ईमान।

[2] इब्ने माजा, मुकद्दमा ९, अबू दाऊद सुन्न: १६।

७- आप ﷺ का उससे विमुख होना जो भाग्य पर ईमान न रखता हो

८- सलफ़ (धार्मिक पूर्वजों) का यह आचरण था कि धर्मयज्ञों से पूछ कर संदेह का निवारण करते थे।

९- तथा ज्ञानी लोग ऐसा उत्तर देते थे जिससे संदेह दूर हो जाये तथा बात को मात्र नबी ﷺ से सम्बंधित करते थे।

अध्याय

चित्रकारों के विषय में

अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अल्लाह तआला ने फ़रमाया : उससे बड़ा अत्याचारी कौन है जो मेरी रचना के समान रचना करने लगे, उसे चाहिए कि वह एक कण बनाये अथवा एक दाना बनाये अथवा एक जौ बना दे। (बुख़ारी, मुस्लिम)[1]

तथा बुख़ारी मुस्लिम में आईशा رضي الله عنها से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : क़यामत के दिन सबसे बड़ी यातना उन्हें दी जायेगी जो अल्लाह की रचना की समानता करते हैं।[2]

तथा दोनों की इब्ने अब्बास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते है कि प्रत्येक प्रतिमाकार नरक में होगा प्रत्येक चित्र के बदले जो उसने बनाया होगा एक प्राण बनाई जायेगी जिससे उसे नरक में दण्ड दिया जायेगा।[3]

तथा दोनों की रिवायत है कि जो संसार में कोई प्रतिमा बनायेगा उस पर भार डाला जायेगा कि उसमें प्राण फूँके तथा वह फूँक न सकेगा।[4]

तथा मुस्लिम में अबुल हैयाज से रिवायत है कि मुझसे अली ने फ़रमाया कि मैं तुमको उस कार्य के लिए न भेजूँ जिस पर मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने भेजा था कि जो भी चित्र देखूँ उसे मिटा दूँ तथा जो

---

[1] बुख़ारी ७/२१५, हाकिम २/३९१

[2] मुस्लिम अल्लिबास ९२,९९ हाकिम ६/३६

[3] मुस्लिम अल्लिबास ९९, हाकिम १/३०८

[4] नसाई ८/२१५, हाकिम १/२४१

भी ऊँची क़ब्र देखूँ उसे बराबर कर दूँ ।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- चित्रकारों के लिए कड़ी धमकी ।

२- इसका कारण कि यह अल्लाह के साथ अशिष्टता है क्योंकि उस ने फ़रमाया है कि सबसे बड़ा अत्याचारी कौन है जो मेरी रचना के समान रचना करने लगे ।

३- अपने सामर्थ्य तथा उनकी विवशता का वर्णन कि वह एक कण अथवा एक दाना अथवा एक जौ पैदा न कर सकेंगे ।

४- इस बात का वर्णन कि उन्हें सब से कड़ी यातना होगी ।

५- अल्लाह प्रत्येक चित्र की संख्या में एक प्राण पैदा करेगा जिसके द्वारा चित्रकार नरक में दण्डित किया जायेगा ।

६- उसे आदेश दिया जायेगा कि उसमें जान डाले ।

७- चित्र को मिटाने का आदेश जब भी पाया जाये ।

---

[1] मुस्लिम ३/६१, हाकिम ७४१

अध्याय

अधिक क़सम (शपथ) खाने का विषय

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ﴾

अपने शपथों की रक्षा करो। (सूरतुल मायेदा:८९)

अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते सुना कि शपथ से सौदा बिकता है तथा बरकत चली जाती है। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)[1]

सलमान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : तीन प्रकार के लोग हैं जिनसे अल्लाह बात नहीं करेगा न उन्हें पवित्र करेगा तथा उनके लिए दुखद यातना है, बूढ़ा व्यभिचारी, अभिमानी ग़रीब तथा वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने पूँजी दिया और वह शपथ लेकर बेचता तथा ख़रीदता है। इसको तबरानी ने सहीह सनद से रिवायत किया।[2]

तथा सहीह में इमरान बिन हुसैन ﷺ से रिवायत है कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मेरी उम्मतके श्रेष्ठतम मेरे युग के लोग हैं फिर इनके बाद के, फिर उनके बाद के। इमरान ने कहा मैं नहीं जानता कि आपने युग के बाद दो युग बताया अथवा तीन। फिर तुम्हारे बाद ऐसे लोग होंगे जो बिना गवाही माँगे गवाही देंगे, विश्वासघात करेंगे तथा विश्वस्त न होंगे। मन्नत माँगेगे और पूरी

---

[1] बुख़ारी ३/७८, मुस्लिम (अल-मुसाक़ात १३१)

[2] मजमउज़ ज़वायेद ४/७८

नहीं करेंगे, उनमें अभिमान होगा ।[1] तथा उसमें इब्ने मसऊद से रिवायत है कि नबी ﷺ ने कहा : "श्रेष्ठतम लोग मेरे युग के हैं फिर जो उनके बाद होंगे फिर जो उनके बाद होंगे, फिर जो उनके बाद होंगे । ऐसे लोग होंगे कि उनकी गवाही शपथ से पहले तथा शपथ गवाही से पहले होगी ।[2] तथा इब्राहीम ने कहा, हमें बाल्यकाल में लोग गवाही देने तथा वचन देने पर मारा करते थे ।

इसमें कुछ विषय हैं :

१- शपथों की रक्षा पर बल ।

२- यह बताना कि शपथ से सौदा बिकता है किन्तु बरकत (विभूति) चली जाती है ।

३- उसके लिए कड़ी धमकी जो शपथ से बेचता तथा ख़रीदता है ।

४- अकारण पाप उस पाप को बड़ा बना देता है ।

५- उनकी निंदा जो बिना शपथ माँगे शपथ लेते हैं ।

६- आपका अपने तथा तीन अथवा चार युगों की प्रशंसा करना तथा इनके बाद जो घटित होगा उसकी चर्चा करना ।

७- उन की निंदा जो बिना गवाही माँगे गवाही देते हैं ।

८- धार्मिक पूर्वजों का बालकों को शपथ लेने तथा वचन देने पर मारना ।

---

[1] बुख़ारी २५०८

[2] बुख़ारी ३/२२४, मुस्लिम फ़ज़ायेल २१२

अध्याय

अल्लाह तथा उस के नबी की ज़िम्मेदारी के विषय में

अल्लाह तआला कथन है :

﴿وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا﴾

जब अल्लाह से प्रतिज्ञा करो तो अल्लाह की प्रतिज्ञा पूरी करो तथा शपथों को सुदृढ़ करने के बाद न तोड़ो ।(सूरतुन नहल:९१)

तथा बुरैदा ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी को किसी सेना का सेनापति बनाते तो उसे अल्लाह से डरने की ताक़ीद फ़रमाते तथा जो मुसलमान उसके साथ होते उसके साथ अच्छे स्वभाव की। तथा फ़रमाते कि अल्लाह के नाम से लड़ो तथा उससे लड़ो जो अल्लाह को नकारता हो। लड़ो तथा अपभेग न करो तथा विश्वासघात न करो न अँग काटो न बच्चे को हत करो और जब अपने शत्रु का सामना करो तो उनको तीन बातों की ओर बुलाओ तथा जो भी मान ले उसे स्वीकार कर लो तथा उनसे रुक जाओ फिर उनको इस्लाम की ओर बुलाओ यदि वे मान लें तो उनसे स्वीकार कर लो फिर उन्हें इस बात की ओर बुलाओ कि अपना नगर छोड़कर मुहाजिरों के नगर में आ जायें तथा उन्हें बता दो कि यदि ऐसा करे तो उन्हें वही सुविधा मिलेगी जो मुहाजिरों के लिए है। तथा यदि वहाँ से जाने से इंकार करें तो उन्हें बता दो कि वे ग्रामीण मुसलमान के समान रहेंगे उन पर अल्लाह का आदेश लागू रहेगा किन्तु उनका ग़नीमत तथा फ़ैय में

कुछ नहीं होगा किन्तु यह कि मुसलमानों से मिलकर लड़ें यदि वह नकार दें तो उनसे ज़िज़्या (रक्षाकर) माँगो, यदि वह मान लें तो उनसे स्वीकार कर लो तथा उनसे रुक जाओ और यदि इससे भी इंकार कर दें तो अल्लाह से सहायता माँगो तथा उनसे लड़ो और जब किसी गढ़ी को घेर लो और वह लोग तुमसे अल्लाह का ठीका तथा उसके नबी का ठीका चाहें तो उन्हें अपना तथा अपने साथियों का ठीका दो, क्योंकि यदि वे तुम्हारा तथा तुम्हारे साथियों का ठीका तोड़ेंगे तो इससे अधिक सरल होगा कि अल्लाह तथा उसके नबी के ठीके को तोड़े तथा जब तुम गढ़ी वालों को घेरो और वह चाहें कि तुम अल्लाह के आदेश पर उतरो तो उन्हें अल्लाह के आदेश पर न उतारो किन्तु उनको अपने आदेश पर उतारो क्योंकि तुम नहीं जानते कि उसमें अल्लाह का आदेश पा जाओगे या नहीं ।[1]

इसमें कुछ विषय हैं :

१- अल्लाह के तथा उसके नबी के और मुसलमानों की ज़िम्मेदारी में अन्तर ।

२- दो बातों में से कम भीषण का निर्देश देना ।

३- आप का कहना कि अल्लाह के नाम से अल्लाह के मार्ग मे लड़ो

४- आपका फ़रमाना कि उससे लड़ो जिसने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया है ।

५- आपका कहना कि अल्लाह से सहायता माँगो तथा उनसे लड़ो ।

६- अल्लाह के निर्णय तथा ज्ञानियों के निर्णय में अन्तर ।

७- सहाबी आवश्यकतानुसार ऐसा आदेश दे सकता है जिसके सम्बंध में वह नहीं जानता कि अल्लाह के आदेशानुसार है अथवा नहीं ।

---

[1] मुस्लिम जिहाद ३, अबू दाऊद २६१३

अध्याय

अल्लाह पर शपथ लेने का विषय

जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है, कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि एक व्यक्ति ने कहा कि अल्लाह की सौगन्ध अल्लाह अमुक व्यक्ति को क्षमा नहीं करेगा तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कौन है जो मेरी शपथ ले रहा है कि मैं अमुक को क्षमा नहीं करूँगा, मैंने उसे क्षमा कर दिया तथा तेरा कर्म नाश कर दिया। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

तथा अबू हुरैरा से रिवायत है कि इसका कहने वाला एक आबिद (पूजक) व्यक्ति था, अबू हुरैरा ने कहा उसने ऐसा शब्द कहा जिसने उसका लोक-परलोक नाश कर दिया।[2]

इसमें कई विषय हैं :

१- अल्लाह पर शपथ लेने से डराना।

२- नरक का हम में से एक के जूते के फ़ीते से समीपस्थ होना।

३- तथा स्वर्ग का भी इसी प्रकार होना।

४- इसमें आपकी इस हदीस का प्रमाण है कि "कभी ऐसी बात बोल जाता है जिससे नरक में गिर जाता है।"

५- कभी एक व्यक्ति को ऐसे कारण से क्षमा कर दिया जाता है जो उसे सर्वाधिक अप्रिय होता है।

---

[1] मुस्लिम २६२१

[2] तबरानी १८/१७५

अध्याय

अल्लाह की सिफ़ारिश किसी के पास न ले जानी चाहिए

ज़ुबैर बिन मुतइम ﷺ से रिवायत है कि एक गंवार नबी ﷺ के पास आया और कहा, हे अल्लाह के रसूल ! प्राण नाश हो गये, बाल बच्चे भूखे हो गये, माल नाश हो गये। आप हमारे लिए अपने प्रभु से वर्षा की दुआ करें। हम अल्लाह को आप के पास सिफ़ारिशी बनाते हैं तथा आपको अल्लाह के पास सिफ़ारिशी के लिए ले जाते हैं तो नबी ﷺ ने फ़रमाया : अल्लाह पवित्र है, अल्लाह पवित्र है तथा आप अल्लाह की पवित्रता (तस्बीह) करते रहे यहाँ तक कि इसका प्रभाव आपके साथियों के चेहरों में व्यक्त हुआ फिर आपने फ़रमाया तुम्हारा बुरा हो तुम जानते हो अल्लाह क्या है ? अल्लाह की मर्यादा इस से महान है। अल्लाह को किसी के पास सिफ़ारिश के लिए नहीं लाया जाता तथा पूरी हदीस बयान की इसको अबू दाऊद ने रिवायत किया।[1]

इसमें कई विषय हैं :

१- आपका उस पर इंकार जिसने कहा कि हम अल्लाह को आप के पास सिफ़ारिश के लिए लाते हैं।

२- आप के तेवर का ऐसा बदल जाना कि सहाबी भी प्रभावित हो गये।

३- आप ने उसकी इस बात का इंकार नहीं किया कि हम अल्लाह के पास आपको सिफ़ारिश के लिए पेश करते हैं।

४- सुब्हानल्लाह के अर्थ का वर्णन।

५- मुसलमान आप से वर्षा के लिए दुआ कराते थे।

---

[1] अबू दाऊद ४७२६

अध्याय

नबी ﷺ का तौहीद की रक्षा करना तथा शिर्क के द्वार बंद करना

अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर ﵁ से रिवायत है कि मैं बनी आमिर के प्रतिनिधि मंडल में रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया तथा हमने कहा कि आप हमारे सैय्यद (अधपति) हैं तो आप ने फ़रमाया : सैय्यद अल्लाह तआला है। हमने कहा आप हममें सबसे उत्तम हैं तथा हम में सबसे बड़े हैं। तो आप ने कहा कि यह बात अथवा अपनी कुछ बात बोलो तथा शैतान के फन्दे में न पड़ना। इसको अबू दाऊद ने उत्तम सनद से रिवायत किया है।[1]

तथा अनस ﵁ से रिवायत है कि कुछ लोगों ने कहा, हे अल्लाह के रसूल, हे हम में सर्वोत्तम, हम में सर्वश्रेष्ठ के पुत्र, हमारे सैय्यद (अधपति) तथा हमारे सैय्यद के पुत्र। तो आप ने कहा, हे लोगो! अपनी बात बोलो तथा शैतान के बहलाने में न आओ, वास्तव में मैं मुहम्मद अल्लाह का भक्त तथा संदेशवाहक हूँ। मैं यह नहीं चाहता कि मुझको मेरे पद से ऊँचा करो, जिस पर अल्लाह तआला ने मुझे रखा है। इसको नसाई ने उत्तम सनद से रिवायत किया है।[2]

इसमें कुछ विषय है :

१- लोगों को ग़ुलू (अत्योक्ति) से रोकना।

---

[1] अबू दाऊद ४८०६, हाकिम ४/२४

[2] नसाई ६/७०, मुस्तद्रक हाकिम १/१२५, मुसन्नफ़ अर्ब्दुरज़्ज़ाक़ २०५२२

२- जिसे हमारे सैय्यद कहा जाये उसे क्या कहना चाहिए।

३- आप ने फ़रमाया तुम्हें शैतान धोखा न दे जबकि उन्होंने सत्य ही कहा।

४- आप का फ़रमान कि मैं नहीं चाहता कि मुझे मेरे पद से ऊँचा करो।

अध्याय

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ﴾

उन्होंने अल्लाह का आदर नहीं किया जैसे करना चाहिए तथा पूरी धरती प्रलय के दिन उसकी मुट्ठी में होगी। (सूरह अज़्ज़ुमर:६७)

इब्ने मसऊद (ﷺ) से रिवायत है, कहा कि एक यहूदी विद्वान रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और कहा कि हे मुहम्मद, हम अपनी किताब में पाते हैं कि अल्लाह आकाशों को एक उँगली पर, धरतियों को एक उँगली पर, वृक्षों को एक उँगली पर, पाताल को एक उँगली पर तथा शेष सृष्टि को एक उँगली पर रख लेगा और कहेगा मैं राजा हूँ। नबी ﷺ यह सुन कर हँसे यहाँ तक कि आपके केंचुली के दाँत दिखने लगे उस विद्वान की बात की पुष्टि करने के कारण। फिर आप ने आयत पढ़ी, "उन्होंने जैसे अल्लाह का आदर करना चाहिए नहीं किया तथा पूरी धरती प्रलय के दिन उसकी मुट्ठी में होगी। (सूरह अज़्ज़ुमर:६७)

तथा मुस्लिम की एक रिवायत में है : तथा पर्वत एवं वृक्ष एक उँगली पर फिर उनको लायेगा तथा कहेगा मैं राजा हूँ, मैं अल्लाह हूँ।[1]

तथा बुख़ारी की एक रिवायत में है : आकाशों को एक उँगली पर रख लेगा तथा जल और पाताल को एक उँगली पर और शेष सृष्टि को एक उँगली पर। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)[2]

तथा मुस्लिम में इब्ने उमर से रिवायत है कि आकाशों को प्रलय के

---

[1] मुस्लिम २७८६

[2] बुख़ारी ८/४२३

दिन लपेट लेगा फिर उन्हें अपने दाहिने हाथ में लेगा, फिर फ़रमायेगा : मैं अधपति हूँ, बलवान लोग कहाँ हैं ? फिर सातों धरतियों को लपेट लेगा फिर उन्हें बायें हाथ में लेगा, फिर फ़रमायेगा : बलवान लोग कहाँ हैं ? अभिमानी लोग कहाँ हैं ?[1]

तथा इब्ने अब्बास से रिवायत है फ़रमाया कि सातों आकाश तथा सातों धरती अल्लाह की हथेली में ऐसे होंगी जैसे तुम में से किसी के हाथ में राई के जैसे एक दाना ।[2]

इब्ने जरीर ने कहा, मुझसे यूनुस ने बयान किया कि मुझे इब्ने वहब ने ख़बर दिया, कहा कि इबने ज़ैद ने कहा, मुझसे मेरे पिता ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा सातों आकाश कुर्सी में सात दिरहम के समान हैं जो एक ढाल में डाल दिये गये हों ।

अबू ज़र ؓ ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना कि अर्श के अनुपात कुर्सी एक लोहे के छल्ले के समान है जिसे चटियल भूमि पर डाल दिया गया हो ।[3]

तथा इब्ने मसऊद ने कहा संसार के आकाश तथा जो उसके समीप हैं उसके बीच पाँच सौ वर्ष की दूरी है तथा प्रत्येक आकाश के बीच पाँच सौ की दूरी है तथा सातों आकाशों तथा कुर्सी के बीच पाँच सौ वर्ष की दूरी है तथा कुर्सी एवं पानी के बीच पाँच सौ वर्ष की दूरी है तथा अर्श सिंहासन जल के ऊपर है तथा अल्लाह अर्श पर है उस पर तुम्हारा कोई कर्म गुप्त नहीं ।

इसको इब्ने महदी ने हम्माद बिन सलमा से उसने आसिम से उसने जर से उसने अब्दुल्लाह से रिवायत किया ।[4]

---

[1] मुस्लिम सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन नम्बर २७८८

[2] तारीख़े अस्फ़ाहन २/२०५

[3] अल-बिदाया वन-निहाया १/७३

[4] तिर्मिज़ी ३३२०

तथा इसे मसऊदी ने ऐसे ही रिवायत किया है आसिम से उसने वाएल से उसने अब्दुल्लाह से । यह हाफिज़ ज़हबी ने कहा तथा कहा कि इसकी कई सनद है।

अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ﵁ ने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि आकाश तथा धरती के बीच कितनी दूरी है ? हमने कहा अल्लाह तथा उसके रसूल अधिक जानते हैं। आपने फ़रमाया : दोनों के बीच पाँच सौ वर्ष की दूरी है तथा प्रत्येक आकाश के बीच दूरी पाँच सौ वर्ष की है, तथा प्रत्येक आकाश की मोटाई पाँच सौ वर्ष की दूरी के बराबर है तथा सातवें आकाश और आर्श के बीच एक समुद्र है जिसके तले तथा ऊपर के बीच उतनी ही दूरी है जितनी आकाश तथा धरती के बीच है और अल्लाह तआला उसके उपर है। उससे इंसान का कोई कर्म छुपा नहीं रहता है। इसे अबू दाऊद आदि ने रिवायत किया है।[1]

इसमें कई बातें हैं :

१- अल्लाह के कथन (तथा पूरी धरती उसकी एक मुट्ठी में होगी) की व्याख्या।

२- यह तथा इस प्रकार के ज्ञान रसूलुल्लाह ﷺ के युग में यहूदियों के पास शेष रह गये थे जिसको न तो उन्होंने नकारा न बदला।

३- यहूदी विद्वान ने जब नबी ﷺ से इसकी चर्चा की तो आप ने उसकी पुष्टि की तथा इसकी पुष्टि के लिए क़ुरआन उतरा।

४- जब यहूदी विद्वान ने महा ज्ञान की चर्चा की तो आप ﷺ हँस दिये।

५- अल्लाह के दो हाथों का वर्णन और यह कि आकाश दायें हाथ में तथा धरतियाँ दूसरे हाथ में हैं।

---

[1] अबू दाऊद ४७२३, ४७२४, ४७२५

६- उसका बाँया नाम रखने का वर्णन।

७- बलवानों तथा अभिमानियों की उस समय चर्चा करना।

८- आप का कहना कि जैसे किसी हथेली में एक राई हो।

९- आकाश के अनुपात से कुर्सी का बड़ा होना।

१०- कुर्सी के अनुपात से अर्श का बड़ा होना।

११- अर्श, कुर्सी तथा जल से अलग है।

१२- एक आकाश से दूसरे आकाश तक कितनी दूरी है ?

१३- सातों आकाश तथा कुर्सी के बीच कितनी दूरी है ?

१४- कुर्सी तथा जल के बीच कितनी दूरी है ?

१५- अर्श जल के ऊपर है।

१६- अल्लाह अर्श के ऊपर है।

१७- आकाश तथा धरती के बीच कितनी दूरी है ?

१८- प्रत्येक आकाश की मोटाई पाँच सौ वर्ष के बराबर है।

१९- आकाश के ऊपर के समुद्र के तल तथा ऊपर के बीच पाँच सौ वर्ष की दूरी है।

तथा अल्लाह तआला अधिक जानकार है।

सब प्रशंसा सर्वलोक के पालनहार अल्लाह के लिए है तथा दरूद हो हमारे प्रमुख मुहम्मद तथा आप के परिवार एवं सब साथियों पर।

(باللغة الهندية)

(In the Hindi Language)

दारुस्सलाम
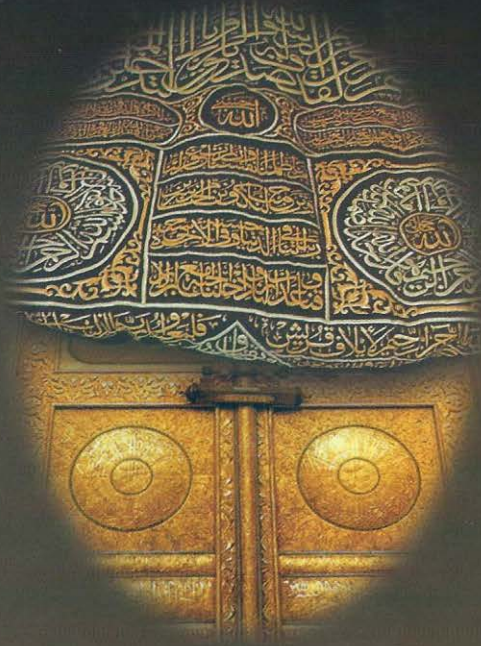
इस्लामी किताबों के लिए विश्व निर्देशक संस्था